देशको लाभ पहुँचानेके लिए ही यहाँ एक बिजलीका कारखाना बनवाया था, किन्तु, आज डेढ़ सौ वर्ष भी पूरा हुए, वह बन्द कर दिया गया।

"पता मालूम है, क्यों बन्द कर दिया गया?

'वहाँ आसपासके पहाड़ी झरनोंके पानीको एक स्थानमें जमा कर उससे बिजली तैयार की जाती थी, यद्यपि इससे कुछ बिजली तैयार होती थी, जो शायद उस समयके कामके लिए पर्याप्त भी समझी जाती हो, किन्तु झरनोंके पानीका इस प्रकार विनियोग करनेसे, पहिलेके आसपासके पर्वत सूखने लगे। पहले अच्छे ही विचारसे इन दोनों कामोंको क्यों न किया हो—"

"दूसरा काम कौन-सा?"

"दूसरा काम पहाड़ों और आसपासके जंगलोंको काटकर खेत बनवा डालना।"

"उससे हानि क्या थी?"

"उससे भी पहाड़ धीरे-धीरे सूख चले—वृष्टि कम होने लगी। आखिर पचास वर्षके भीतर-ही-भीतर पानीके अभावसे उन खेतोंको छोड़कर लोगोंको भाग जाना पड़ा।"

"तो क्या उस कारखानेको बन्द कर कुछ फायदा पहुँचाया गया?"

"हाँ, बहुत। अगर आप अब जाकर देखें, तो कपिशके आसपासके पर्वत रम्य उद्यानोंसे हरे-भरे मिलेंगे। चारों तरफ सेव, नासपाती, अंगूर और अनारके बाग लहलहाते पायेंगे। ये सब फल वहाँ होते भी है बहुत बड़े और मीठे। इस तरह बगीचोंका जंगल लग जानेसे पहलेसे अब कई गुना

ज्यादा लाभ है। पहाड़ फिर तर हो गये हैं, झरने भी बहुत हैं।"

"तब तो, सभी जगह भारी क्रान्ति हो गई! अच्छा, अब शायद आपका गाँव भी करीब है। वही मकान तो दिखाई दे रहे हैं?"

"हाँ, वही, किन्तु अभी तीन मील है—यही दस मिनटका रास्ता।"

"क्या आपने नेपालकी सैर की है?"

"हाँ, बहुत। मेरा वार्षिक विश्राम बहुधा वहाँ और तिब्बतकी सैर हीमें कटा है। मुझे तीस वर्ष यहाँ रहते हो गये। प्रति वर्ष दो मासका विश्राम मिलता है। मैंने १०-१२ छुट्टियाँ वहाँकी ही यात्रामें बिताई हैं। भौगोलिक और आर्थिक दृष्टिसे भी मैंने वहाँके विषयमें बहुत विचार किया है।"

इस पुरुषकी इस प्रकारकी बातें सुनकर मुझे और भी आश्चर्य होता था। बीसवीं शताब्दीमें ऐसा पुरुष किसी अच्छे कालेजका प्रोफेसर होता। किन्तु आज यह सामान्य जनोंमें है। क्या विद्याकी कदर कम हो गई, या विद्वत्ताका मान ऊँचा हो गया? मैंने पूछा—आपके इस ज्ञानसे औरोंको भी कुछ लाभ पहुँचता है?

"क्यों नहीं? हमें ड्यूटी तो ३ घंटे ही बजानी होती है। बाकी समयमें करते ही क्या है? मैंने कई बार अपने परिशीलित विषयपर यहाँ व्याख्यान दिया है, छुट्टियोंके समय दूसरे प्रान्तों या देशोंमें जानेपर भी वहाँ व्याख्यान-द्वारा लोगोंको लाभ पहुँचाता हूँ। मासिक पत्रोंमें भी चर्चा करता हूँ।"

"अच्छा, यह तो हुआ, भला यह तो बताओ, नेपाल क्या-क्या चीजें पैदा करता है?"

"खनिज पदार्थोंमें यहाँ ताँबा, लोहा और सीसा बहुत ही अधिक

होता है। अपने यहाँ काम चलानेके लिए कोयला भी निकल आता था, किन्तु अब बिजलीका उपयोग अधिक होनेसे कोयलेकी उतनी बळी आवश्यकता नही रही। बिहार और युक्त-प्रान्त तक यहाँसे बिजली जाती है और यह बिजली तैयार होती है कई नदियोके जल-प्रपातसे। यह रेल भी उसी बिजलीसे चलाई जाती है। फिर उसीसे हमारी मोटरें चल रही हैं। इसके अतिरिक्त नेपाल मेवोंकी खान है। करोळों भेळ और बहुत-से कम्बलके कारखाने भी यहाँ हैं। आधेसे अधिक भारतवर्षको गर्म कपळे नेपाल ही देता है।"

"तो ज्ञात होता है, यहाँ चावल-गेहूँ नहीं होता।"

"नही; ये सब चीजें और प्रान्तोंसे आती हैं। आज-कल जो वस्तु जहाँ अच्छी हो सकती है, वही वहाँ पैदा की जाती है। प्रायः एक गाँव एक ही चीज पैदा करता भी है। वहाँ जरूरतकी दूसरी-दूसरी चीजें और जगहोंसे पहुँचती हैं।"

अब हम गाँवके पहले घरके पास पहुँच रहे थे। मैंने देखा, वही पुरुष, जिसके प्रतिबिम्बको मैंने टेलीफोनमें देखा था, मेरे स्वागतके लिए कुछ और आदमियोंके साथ खळा है। स्वागत हुआ।

मैंने देखा कि सभी स्त्री-पुरुष सुन्दर और स्वच्छ हैं। सळकके किनारे सुन्दर मकानोंकी कतारें हैं। सभी मकान एक-से तथा बिना कोठेके हैं। मुझे यह एक बिलकुल नई दुनियाँ मालूम होने लगी। अभी मैं इन बातोंपर कुछ विचार ही रहा था, कि देवमित्रने मुझसे कहा—इस रास्ते।

मैं पीछे हो लिया। मेरे साथ वे सभी स्त्री-पुरुष भी शामिल थे। अब

गाड़ी खींच रहे थे। जिस मकानकी ओर हम जा रहे थे, मैंने देखा, उसपर मोटे अक्षरोंमें लिखा हुआ है—'अतिथि-विश्राम'। ग्रामणी महाशयने पहुँचते ही मकान दिखलाते हुए मुझसे पूछा—भाई देव! कौन-सा कमरा आपने मेहमानके विश्रामके लिए ठीक किया है? देवने कहा यही पीछेवाला कमरा था। अभी कमरेके द्वारपर ही हम पहुँचे थे कि इधर-उधरके कमरोंसे एक दूसरे सज्जन निकल आये, जिनकी अवस्था पचास और साठके बीचकी होगी। उन्होंने भी स्वागत किया। अब हम लोग कमरेमें दाखिल हुए। ग्रामणी महाशयने कहा—

"इस समय हमलोग आपको अधिक कष्ट न देंगे। आप मार्गके थके-मांदे हैं। थोड़ी देर विश्राम करें। आज कल भोजन हो चुकनेपर आपके दर्शनके लिए उत्सुक सभी ग्रामवासी सभागारमें एकत्रित होंगे। मुझे तो आप जानते ही हैं। मैं आज-कल यहाँका ग्रामणी (ग्राम-सभाका सभापति) हूँ। ये दूसरे बीस भद्र पुरुष और महिलायें ग्राम-सभाके सभ्य हैं। यह दूसरे अतिथि विश्वामित्र, नालंदा विद्यालयमें इतिहासके अध्यापक हैं। कुछ ऐतिहासिक खोजके सम्बन्धमें तिब्बत गये थे, जहाँसे आज ही विमानसे यहाँ आये हैं। पीछे बात करनेपर आपको इनसे और बातोंकी जानकारी होगी। यह भाई देव है।"

थोड़ी ही देरमें और लोग मुझसे विदा माँगकर चले गये। देवने झट बिजलीकी रोशनी की, क्योंकि अब सूर्यास्त हो गया था। पहाड़ी सर्दी भीनी-भीनी लग रही थी। यद्यपि मार्गमें सुमेधने मुझे एक ऊनी लबादा दे दिया था, पर वह पर्याप्त नहीं था। देवने तापकको खोल दिया, और

ोटी देरमें मकान सामने ही गया। मैं एक कुर्सीपर बैठा और विद्यार्थियोंसे
ी कहा कि यदि कोई अन्य आसनपर बैठे न हों तो बैठ जायें। यह
सरी कुर्सीपर बैठ गये।

सामने जो एक [illegible] देखा था, उसके व्यक्तित्वसे [illegible] मुझे
निश्चित-सा हो गया था, कि यह वही [illegible] है, तो भी मैंने पूछा—क्या
आप 'सार्वभौम राष्ट्र' [illegible] विख्यात हैं?

उन्होंने मुस्करा-मुस्कर कहा—"हाँ वही।

"तो मुझे आपकी मुलाकातसे बहुत प्रसन्नता हुई।

"उससे कहीं अधिक मेरा भाग्योदय हुआ। हमारा नालन्दा-परिवार
आपको सदा याद रखता है। आपने जो बीज यहाँ बोया था, उसे देखकर
आज आप प्रसन्न होंगे। आपके और शास्त्री महाशयके वार्तालापके बाद ही
आपके शुभागमनकी मुझे खबर लग गई थी। यहाँ सारा विद्यालय-परिवार
बड़ा उत्सुक है। हमारे आचार्य वशिष्ठने अभी मुझसे कहा है कि, सबसे
प्रथम आपके दर्शनोंका अधिकारी नालन्दा-परिवार है।"

"आपने क्या टेलीफोन-द्वारा यह वृत्तान्त जाना है?"

"हाँ। अभी तो पुस्तकालयमें टेलीफोनपर बात ही कर रहा था।
आपके इस जगह आनेका समाचार भी उन्हें मैंने दे दिया। उन्होंने कहा
, यदि कष्ट न हो, तो इसी समय वार्तालाप और दर्शन देनेके लिए कहें।"

"नहीं, कुछ नहीं। मुझे कुछ भी कष्ट नहीं है। कौन पैदल आया हूँ!
लो, चलें। यह मेरे लिए कम आनन्दका विषय नहीं है।" यह कह, हम
दोनों उठकर पुस्तकालयमें गये। यह सौ-डेढ़ सौ आदमियोंके बैठने लायक

ख खुला हाल है। दो आलमारियां किताबोंकी हैं। बिजलीकी रोशनी जल रही है। बीचमें बड़े-बड़े मेज और बैठनेके लिए बहुत-सी कुर्सियां पड़ी हैं। विश्वामित्रने जाकर टेलीफोनमें घंटी दी। मैं यहाँ ही कुर्सीपर बैठ गया। वह कुछ क्षणके बाद मुझसे बोले—"हमारे, आचार्य आपकी प्रतीक्षामें खड़े हैं।"

मैंने जाकर देखा, शीशेमें एक वृद्ध पुरुषका प्रतिबिम्ब है। प्रतिबिम्बने होंठ हिलाकर सिर झुकाया और टेलीफोनसे आवाज आई—'स्वागतम्'। मैंने भी सिर झुकाकर उत्तर दिया।

विश्वामित्रने कहा, यही हमारे आचार्य हैं। आप सत्तर वर्षसे विद्यालयकी सेवा कर रहे हैं, जिसमें बीस वर्षसे आप आचार्यके पदपर वर्तमान हैं।

मैंने कहा—वशिष्ठजी, आपके मिलनेसे मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई। वास्तवमें आप सब धन्य हैं, जो इस प्रकार अनवरत विद्या-दान द्वारा जगत्का उपकार कर रहे हैं।

"यह हमारा कर्तव्य है। हाँ, नालंदा-परिवारकी ओरसे मेरी प्रार्थना है, कि अन्यत्र कहींका निमंत्रण स्वीकार करनेसे पूर्व, पहले अपने विद्यालयमें पधारें।"

"यह मेरी स्वयं ही इच्छा है, इसके विषयमें और कुछ कहना न होगा। मैं यहाँसे सीधे वहाँ ही आऊँगा।"

"अध्यापक विश्वामित्र आपकी सेवामें हैं ही, यह भी खुशीकी बात है। वह अब विद्यालयको लौट रहे हैं, उन्हींके साथ पधारें। आपका शरीर अत्यन्त कृश है। इसलिए हमारा यह आग्रह नहीं, कि आप तुरत आवें।"

"मैं अवश्य यहाँसे वहाँ ही आता हूँ। सभी बालक-बालिकाओं, और अध्यापक-अध्यापिका-परिवारसे मेरी मंगल-कामना कहें।"

"यहाँ शब्दप्रसारकसे सभी सुन रहे हैं। अच्छा, तो अब आप विश्राम करें।"

इस वार्तालापने एक अद्भुत आनन्द मेरे हृदयमें पैदा कर दिया। मैं विश्वामित्रका हाथ पकळे वहाँसे अपने कमरेमें आया। मैंने कहा—

"विश्वामित्र! मेरे समयके और अबके ससारमें बळा फर्क है। तुम तो इतिहासके अध्यापक ही हो—इन बातोको जानते हो। किन्तु यह मुझे अधिक आश्चर्यमय इसलिए मालूम होता है, कि मैंने दो सौ वर्षोंके पूर्वका संसार इन्ही आँखोसे देखा था। मुझे वे बाते कलकी-सी दीख पळती हैं। उस समय समानताकी धीमी-सी आवाज उठी थी; किन्तु यह रूप-रेखा स्वप्नमें भी कहाँ मालूम होती थी? मैं आज ही तुम्हारे संसारमें आया हूँ। अभी तो मैंने इसका शतांश भी देख-समझ न पाया। किन्तु, इतनेहीमें आश्चर्य-समुद्रमें डूब रहा हूँ। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि तुम्हारे ससारने अनेक अंशोमें आशातीत उन्नति की है।"

४

विद्यालयके विषयमें

"अच्छा, यह तो बताओ, नालन्दा विद्यालयकी इस समय क्या स्थिति है ?"

"अब नालन्दा बहुत विशाल विद्यालय है। पुराने बड़गाँवसे राजगृह तक विद्यालयके ही भवन और छात्रालय चले गये हैं। सारे भूमंडलमें दर्शन और इतिहासके लिए ऐसा दूसरा विद्यालय नहीं । वहाँ अध्ययनके लिए यूरोप, अमेरिका, जापान, अफ्रिका, आस्ट्रेलिया सभी जगहोंसे विद्यार्थी आते हैं। प्राचीन वस्तुओंका संसारमें सबसे बड़ा संग्रहालय यहींपर है। प्राचीन लिपियों और भाषाओंके पढ़ने-पढ़ानेका यहाँ सर्वोत्तम प्रबन्ध है। 'सार्वभौम राष्ट्र परिषद्'की आज्ञासे, सिर्फ भारतकी इतिहास-विषयक सामग्री ही नहीं, बल्कि रोम, यवन, मिश्र, असुर बल्दान, मेक्सिको आदिके

शिक्षकों किसी भी भाषाविदसे यहाँ सम्पर्क हुई है। भारतको अभिमान
है कि उसने अन्तर्राष्ट्रीय दर्शनके प्रमुख ग्रन्थोंमें यहीं मान्यता की है।
दर्शनका अध्ययन भारतमें उत्तम रीतिसे होता है। नव्य, प्राचीन,
पौरस्त्य, पाश्चात्य सभी दर्शनोंके अध्ययनका प्रबंध है। हमारे आचार्य
दर्शनके महान् विद्वान हैं। संस्कृत, पाली, अर्द्ध, प्राकृत, यवनानी, रोमिनी
(रोमक) इत्यादि बहुत भाषाओंका यहाँ अध्यापन है। भाषाओंके अध्ययनमें
अब सम्पूर्ण बड़ी क्रान्ति हो गई है। प्रत्येक भाषाके अध्ययनके उपयुक्त
वातावरण बना हुआ है। भिन्न-भिन्न भाषाओंके जिज्ञासुओंको यहाँ रख
कर एक प्रकारसे दूसरी भाषासे उनका नाता ही छुड़वा दिया जाता है।
उनका सभी व्यवहार उसी भाषामें होता है। वस्तुओंका नाम आदि
अध्यापकगण आकृति-प्रदर्शन पूर्वक उसी भाषामें बतलाते हैं। इस प्रकार
तीन वर्षमें छात्रोंका उस भाषापर अधिकार हो जाता है। इसके अतिरिक्त
ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन भी भारतमें सबसे अच्छा यहीं होता है। राज-
गृहके वैभार-गिरिपर यहींकी महान् वेध-शाला है। ज्योतिष-साहित्यकी
वृद्धिमें भी हमारे विद्यालयने भाग लिया है। भारतके 'नालन्दा' और
'तक्षशिला'के विद्यालय भूमंडलके प्रमुख विद्यापीठोंमेंसे हैं। 'तक्षशिला'ने
आयुर्वेद, वनस्पति, प्राणि आदि शास्त्रोंमें बड़ी कीर्ति अर्जित की है।"

"पठन-काल विद्यालयमें क्या है ? नियम तथा परीक्षा-क्रम कैसा है ?"

"१७ वर्षका अध्ययन तो सबहीके लिए अनिवार्य है। यह नियम
भारतके ही नहीं, सारे भूमंडलके विद्यालयोंके लिए एक-सा है। तीसरे वर्ष
बालक माता-पितासे ले लिया जाता है। उसके बाद ६ वर्ष तक शिशु-कक्षा,

है, सबके पास नहीं। अच्छा, तो अब हमें चलना है। यह लीजिये, गोला भी—अररर-धम्।"

हमलोग जल्दी ही वहाँसे निकल पळे। देव, पद्मावती और हम दोनो चार आदमी थे। सळकपर चारो ओर चाँदनीकी भाँति बिजलीकी रोशनी फैल रही थी। सळक प्रशस्त और स्वच्छ थी। उसके दोनो ओर एक समान पक्के मकानोकी पंक्तियाँ थीं। हर एक मकानके सम्मुख सळक तक फूलोके वृक्ष थे, जो अपनी शोभा और सुगन्धसे चलनेवालोके चित्तको प्रफुल्लित कर रहे थे। प्रत्येक घरके सामने बराडा था, जो सौ-सौ घरोके लिए एक ही था। विश्वामित्रजीने बताया कि प्रत्येक पुरुषके रहनेके लिए तीन-तीन कमरे हैं, जिनमेंसे सामनेवाला बैठकका कमरा उतना ही बळा है, जितना कि वह कमरा, जिसमेंसे अभी हम आये हैं। इनमें दस कुर्सियाँ आसानीसे बिछाई जा सकती हैं। पीछेकी ओर चौळाईमें इससे ड्यौढ़े, किन्तु लम्बाईमें आधे, दो कमरे हैं—एक सोनेके लिए, और दूसरा स्नानके लिए। यही तीनो कमरे मिलकर एक घर कहलाता है। ऐसेही सौ घरोकी एक श्रेणी है। हर श्रेणीके लिए एक एक निर्वाचित प्रधान होते हैं, जो स्वय भी उसी श्रेणीके एक घरमें रहते हैं। मुझे पीछे मालूम हुआ, कि सुमेध ऐसी ही एक श्रेणीके प्रधान हैं। प्रत्येक श्रेणी का एक विस्तृत हाल होता है। जिसमें कुछ पुस्तकें, वाद्य तथा और मनोरजनकी वस्तुयें रहती हैं। यहाँ ही टेलीफोन भी लगा रहता है। इस मेव-ग्राममें ऐसी पचीस श्रेणियाँ है।

नर-नारी सळकपर आपसमें वार्तालाप करते चल रहे थे। सबकी बातो-का लक्ष्य मेरी ही ओर दिखाई पळता था। मैंने हजारो नर-नारियोको

मार्गमें देखा, किन्तु उसमें एक भी बच्चा नहीं दिखाई पड़ा। मैंने समझ लिया, तीन वर्षके बाद तो बच्चे ले ही लिये जाते हैं। गर्मीमें शायद छोटे बच्चोंको शायद इस समय साथ न ले जाते हों। अब मैंने सामने सुन्दर भवन पर मोटे अक्षरोंमें 'भोजनागार' देखा। जहाँ निकुञ्जलता चारों ओर छि रही थी। सभागारमें प्रविष्ट होनेके लिए बहुतसे द्वार थे। प्रविष्ट हो पहले लोगोंने बरांडेमें गर्म जलके नलोंमें हाथ धो, कपड़ेके रूमालोंसे पोंछे। फिर भीतर प्रविष्ट हुए। भोजन करनेकी मेज-कुर्सियाँ वैसी ही थीं, जैसी कि बागमें देखी थीं। हाल बहुत ही लम्बा-चौड़ा था। उसमें पाँच सहस्र आदमी आरामसे बैठकर भोजन कर सकते थे। स्वच्छता और भीतरी सुन्दरता अपूर्व थी। रसोई-घर, ज्ञात होता है, उससे पृथक् पीछेकी ओर था। मेरे यहाँ पहुँचनेके साथ ही ग्रामणी तथा अन्य पूर्व-परिचित भद्र पुरुष और महिलायें आ गई थीं। मुझे एक कुर्सीपर बैठाया गया। मेरी दाहिनी ओर देवमित्र और बाईं ओर विश्वामित्र थे। भोजन पहलेसे परोसकर तैयार रक्खा हुआ था। भोजनके पदार्थोंमें रोटी, मास और दो तरकारियाँ थीं। एक कटोरीमें हलवा भी था। साथ ही एक तश्तरीमें थोड़ा फल और एक गिलास जलका रखा था। अभी आकर दो मिनट हमें बैठना पड़ा, तब घंटा टनन्-टनन् हुआ, जिसपर देवमित्रने कहा, अब भोजन आरम्भ होना चाहिए। यह इतनी प्रतीक्षा इसीलिए की जाती है कि भोजन करने वाले सभी आ जायें। मुझे वह भोजन-मंडली बड़ी विचित्र मालूम होती थी। बीच-बीचमें पुरुषोंके साथ स्त्रियाँ भी बैठी निस्संकोच भोजन कर रही थीं। मैंने अपने दिलमें कहा, बीसवीं शताब्दीके भारतीय ऐसा स्वप्न

कब देख सकते थे। यद्यपि मैंने अभी पूछा नहीं था और देखनेमें शिक्षा, सभ्यता, सुन्दरतामें सभी स्त्री-पुरुष उच्च वर्णहीसे ज्ञात होते थे, तो भी मेरे मनमें होता था, कि क्या ये सब ब्राह्मण-क्षत्रिय होंगे। कुछ तो मैंने पहले ही सुना था—अर्जुनके माता-पिता लवा-निवासी थे। यद्यपि वेष-भूषा सबका एक-सा था, किन्तु बहुत से स्त्री-पुरुष यूरोपवालोंकी भाँति गोरे मालूम होते थे। इन सब बातोंसे मेरे दिलमें निश्चित-सा हो गया था, कि 'एक-वर्णमिद सर्वम्'।

भोजन करके सब लोगोंने उठ-उठकर अपने-अपने द्वारसे निकलकर गर्म नलोंपर हाथ धोया। मुँह पोछनेके बाद, अब सब लोग वहाँसे चले। पहले ग्रामणीने कहा ही था कि सस्थागारमें जमावड़ा होगा। अतः वहाँ ही को प्रस्थान किया गया। हाँ, एक बात यह भी देखी कि यद्यपि हाथ-मुँह सबने धोया किन्तु जूतेको किसीने खोलकर पैर नहीं धोया और न दूसरे कपड़ोंको भी किसीने उतारा।

अब हम लोग वहाँसे सस्थागारको चले, यह भव्य भवन थोड़ी ही दूरपर था।

मकान बहुत ऊँचा, सुन्दर था—बाहरसे बिजलीकी रोशनी जगमगा रही थी। यहाँपर भी मोटे-मोटे अक्षरोंमें मुख्य द्वारपर 'सस्थागार' लिखा हुआ था। भीतर प्रविष्ट हुए।

देवमित्रने कहा—"जब तक सब लोग आ जाते हैं, तब तक आप रगमचके पिछले कमरेमें बैठें।" जाकर अभी थोड़ी ही देर वहाँ बैठे होंगे कि इतनेमें रगमचसे घटीका शब्द हुआ, जिसे सुनकर ग्रामणीने

प्रवेश नहीं किया। मैं पहुँचते ही मुझे देखकर मानों आँखें ठंडी हो
गई। 'पंचायतघर'की आन्तरिक शोभा अत्यन्त मनोहारिणी थी।
दीवारपर जगह-जगहपर रंगीन चित्र विचित्र और सुन्दर विद्युद्दीपोंसे
सजा था। भवनकी छत बहुत ऊँची थी। बड़े-बड़े खम्भे लगे हुए थे।
विद्युत्प्रकाशसे जगमग दिन सा हो रहा था। यद्यपि वहीं बहुत सी थीं,
चारों ओर द्वार खुले और खुले थे, किन्तु अन्तर्गत यन्त्रस्थानोंसे हवाकी
गर्मी किसी प्रकारकी नहीं मालूम नहीं होती थी। दीवारों और छतोंपर
बहुत अच्छे रंग-बिरंगे बेल-बूटे बने हुए थे। दीवारोंपर महापुरुषोंके बड़े-
बड़े चित्र लटक रहे थे, जिनमें विचारक कवि सभी प्रकारके पुरुष थे।
कहीं बुद्ध थे, तो कहीं ईसा, कहीं गांधी तो कहीं लेनिन, सुकरात, प्लेटो,
लिन, न्यूटन, डेकार्ट आदि अनेक जगन्मान्य पुरुषोंके चित्र उस विस्तृत
भवनमें शोभा दे रहे थे। बीच-बीचमें बहुत-से सुभाषित टँगे थे।

मैंने जन-समाजकी ओर देखा, वहाँ न कोई कुर्सी था, न मसनद, सभी
लोग सब गद्दीदार बेंचोंके ऊपर बैठे थे। उस विस्तृत भवनमें पाँच सहस्र
आदमी बैठे होंगे, तो भी पीछेकी ओरकी बेंचोंपर और भी दो-एक सहस्र
आदमी आसानीसे बैठ सकते थे। इस भवनका उपयोग राजनैतिक, साहि-
त्यिक सभी कामोंके लिए होता है। ग्राम-सभाकी बैठकें यहीं ही होती हैं।
मनोरंजनार्थ, बाहरी या अपने यहाँके प्रवीण लोग संगीत और नाट्याभिनय
भी यहीं सबको प्रसन्न करते हैं। इतिहास, विज्ञान आदिपर बाहरी या ग्रामके
व्याख्याताओंके व्याख्यान भी यहीं होते हैं। अनेक राष्ट्रीय तथा सामाजिक
महोत्सव यहाँपर मनाये जाते हैं।

लोगोके शान्त बैठने ही, देवमित्रने उठकर आजकी सभाका सभापति होनेके लिए श्री इस्माइलका नाम प्रस्तावित किया। प्रस्ताव करते समय उन्होने कहा—यद्यपि हम सबोके लिए साथी इस्माइल हृदयसे परिचित हैं, किन्तु आजके अपने श्रद्धेय अतिथिकी जानकारीके लिए इतना कह देना आवश्यक मालूम होता है, कि साथी इस्माइल अनेक बार हमारे ग्रामके ग्रामणी, तथा नेपाल प्रान्तके सभापति रह चुके हैं। यद्यपि आप अभी साठ वर्षके ही हैं, किन्तु गुणोंसे हम सब उन्हे वृद्ध समझते हैं। एक बात और है, जो आजके हमारे अतिथिके सम्बन्धमें उनको समीपतर बनाती है। यही नही कि वह नालन्दा विद्यालयके पुत्र हैं, बल्कि हमारे अतिथिको महापुरुष शपीका नाम स्मरण होगा, आप उसी वैशाली-वासी महापुरुषके पौत्र हैं। आपकी गणना ससारके बड़े-बड़े राजनीति-विशारदोमें है। हमारे प्रान्त, विशेषकर हमारे सेब-ग्रामको इनपर अभिमान है, जहाँपर कि शिक्षा-समाप्तिके बादसे ही आप रहते हैं।

लोगोने करतल-ध्वनि-पूर्वक प्रस्तावको स्वीकृत किया और श्री इस्माइल उठे। वास्तवमें देखने मात्रसे इनके चेहरेपर महापुरुषका तेज झलकता था। यथार्थमे उनको ६० वर्षका युवक कहना चाहिये। इनको ही क्या, ६०-७० वर्षका अबका आदमी बीसवी शताब्दीके ३५-४० वर्षके हृष्ट-पुष्ट आदमी-सा मालूम होता है। जैसे और बातोंमें आजके ससारने उन्नति की है वैसे ही इस बात मे भी। श्री इस्माइलने कहा—

"साथियो! अनेक ज्ञान-वयोवृद्धोके सम्मुख मुझे इस सेवाके लिए स्वीकार करनेका कारण आपकी निष्कारण दयाके सिवा और कुछ नही

ी सकता। मैं तो ऐसे ही महापुरुषके शुभागमनका सन्देश पा आनन्दसे मत्त
ी रहा था। मुझे गर्व है कि मैंने विद्या-द्वारा ही नालन्दामें जन्म नहीं लिया,
्कि मेरा जन्म भी वहींका है। पितामह, आप लोगोंको विदित है, पूरे
द्द सौ वर्षके होकर मरे थे। वे सुनाया करते थे कि कैसी कठिनाइयोंमें
ालन्दाका पुनरुद्धार किया गया। जबकि उनकी अवस्था पच्चीस वर्षकी
ी, तभी उन्होंने विद्यालयके लिए अपना जीवन-दान दिया, और अन्तमें
हीं अग्नि-समाधिस्थ भी हुए। वह कहते थे कि हमारे साथ अनेक महा-
ुरुष उस समय नालन्दाकी सेवा करते थे। उस समय विद्यालयकी भूमिपर
ोटी-मोटी दूरपर छोटे-छोटे ग्राम बसे हुए थे। विद्यालयके पुरातन भवनोंके
वंसावशेष भीटों-जैसे थे। उस समय बुद्ध-गोपुर आदिकी यह शोभा न थी।
उगांव नामका एक छोटा-सा ग्राम वहाँ था, जहाँ अब भी सूर्यका मन्दिर
। कार्तिकको सूर्य-षष्ठीका मेला अबतक एक दिनका होता था, जिसमें
हिलायें ही अधिक सम्मिलित हुआ करती थीं। आपको ज्ञात है, उस समय
ाखण्डियोंका साम्राज्य था। कुछ स्त्रियोंकी शिक्षामें धर्मकी हानि समझी
। हमारे मुसल्मान भाइयोंने धर्मके नामसे स्त्रियोंको जबर्दस्त पर
रखा था, जिसकी देखा-देखी समस्त उत्तरीय भारत स्त्री-जातिका एकान्त
ारागार हो गया था। यह बड़ी भारी हानि समझिये, जो स्त्री उस
ऐसे पर्देके अन्तर्गत जा रही थी। पर तो सभीने सुना था कि आचार्य
[illegible] ३० वर्ष तक विद्यालयकी सेवा करके उपाध्यायको [illegible] गये,
ौर उनसे कुछ सम नहीं लगा। अन्त तक उनको आशा थी कि हम लोगोंका
ुनः गौरव उज्ज्वल होगा। आज तीन पीढ़ियों प्रतीक्षा करनी पड़ी।

हम सब जब इन बातोंको सुनते थे, तो स्वप्न देखते थे—यदि महापुरुषका फिर दर्शन होता, यदि वह फिर पधारते, तो उन्हें अपने सिर-आँखोंपर रखते। हमलोगोंने स्त्रियोंके ऊपर यह अत्याचार होते जन्मसे ही नहीं देखा। हम लोगोंने तो जन्मसे मनुष्योंका ऊँच-नीच होनेका शब्द ही नहीं सुना। हमने तो धर्मके नामसे झट मरनेकी चर्चा भी न सुन पाई। किन्तु इतिहासमें आपने पढ़ा है—आपके देशका मुख उज्वल करनेवाले अध्यापक विश्वामित्र यही हैं। इतिहासोंमें अब जब हम लोग धर्मके नामपर मार-काट पढ़ते हैं, तो हँसते हैं—वैसे ही हँसते हैं, जैसे एक राजाकी बातके कारण सहस्रों पुरुषोंको पतगोंकी भाँति युद्ध-अग्निमें जलते सुननेपर। जिन्होंने उस अन्धकार-युगमें मनुष्य-जातिके कल्याणके लिए भगीरथ-प्रयत्न किया, वे धन्य हैं। आज महापुरुष विश्वबन्धुकी पवित्र मूर्ति हमारे मध्यमें है। (महापुरुषोंकी तस्वीरोंकी ओर इशारा करके) आज हम समझते हैं, ये सारे देवगण मूर्तिमान, सजीव हमारे मध्यमें हैं। वास्तवमें क्या हमारे हृदयका भाव, हमारा भक्ति-उद्गार वाणी-द्वारा प्रकट किया जा सकता है?

"साथियो! हमारे गाँवका सबसे अधिक सौभाग्य है कि आप पहले यहीं पधारे। आज वस्तुतः अनिर्वचनीय आनन्दका समुद्र हमारे हृदयोंमें तरंगित हो रहा है। हम पूजनीय महात्माको किस प्रकार पूजें, किस प्रकार स्वागत करें, यह समझमें नहीं आता। ऐसे अपूर्व महापुरुषके लिए हमारे पास कौन-सा द्रव्य है? अधिक कुछ नहीं, सिर्फ इतना ही—महात्मन्! हम सब आपके कृतज्ञ हैं, आपके ऋणोंका हमसे परिशोध नहीं हो सकता। साथियो, यद्यपि हम सब लालायित हैं, कि आपके मुँहसे कुछ सुनें, किन्तु,

हो सकता। मैं भी ऐसे ही महापुरुषके गुणानुवादका मौका पा आनन्दमें मग्न हो रहा था। मुझे गर्व है कि मैंने विद्या-द्वारा ही नालन्दामें जन्म नहीं लिया, बल्कि मेरा जन्म भी यहींका है। विहार, आप लोगोंको विदित है, पूरे छह सौ वर्षोंके होकर गये थे। वे गुणगान करते थे कि कैसी कठिनाइयोंमें नालन्दाका पुनरुद्धार किया गया। यद्यपि उनकी अवस्था पचहत्तर वर्षकी थी, तभी उन्होंने विद्यालयके लिए अपना जीवन-दान दिया, और अन्तमें वहीं अग्नि-समाधिस्थ भी हुए। वह कहते थे कि हमारे साथ अनेक महा-पुरुष उस समय नालन्दाकी सेवा करते थे। उस समय विद्यालयकी भूमिपर छोटी-मोटी दूरपर छोटे-छोटे ग्राम बसे हुए थे। विद्यालयके पुरातन भवनोंके अवशेष भीटों-जैसे थे। उस समय युद्ध-गोचर आदिकी यह शोभा न थी। बड़गाँव नामका एक छोटा-सा ग्राम वहाँ था, जहाँ अब भी सूर्यका मन्दिर है। कार्तिककी सूर्य-षष्ठीका मेला अलबत्ता एक दिनका होता था, जिसमें महिलायें ही अधिक सम्मिलित हुआ करती थीं। आपको ज्ञात है, उस समय अनार्यवितताका साम्राज्य था। पुरुष स्त्रियोंकी शिक्षामें धर्मकी हानि समझते थे। हमारे मुसलमान भाइयोंने धर्मके नामसे स्त्रियोंको जकड़बन्द कर रखा था, जिसकी देखा-देखी समस्त उत्तरीय भारत स्त्री-जातिका एकान्त कारागार हो गया था। यह बड़ी भारी कृपा समझिये, जो स्त्रियाँ उस मेलेमें धर्मके सम्बन्धसे जाने पाती थीं। यह तो सभीने सुना था कि आचार्य सुदवबन्धु ३० वर्ष तक विद्यालयकी सेवा करके उत्तराखंडको चले गये, और तबसे कुछ पता नहीं लगा। भला यह किसको आशा थी कि हम लोगोंका ऐसा सौभाग्य उदय होगा। आज तीन पीढ़ियाँ प्रतीक्षा करती चली गईं।

हम सब जब इन बातोंको सुनते थे, तो स्वप्न देखते थे—यदि महापुरुषका फिर दर्शन होता, यदि वह फिर पधारते, तो उन्हे अपने सिर-आँखोंपर रखते। हमलोगोंने स्त्रियोंके ऊपर यह अत्याचार होते जन्मसे ही नहीं देखा। हम लोगोंने तो जन्मसे मनुष्योंका ऊँच-नीच होनेका शब्द ही नहीं सुना। हमने तो धर्मके नामसे बट मरनेकी चर्चा भी न सुन पाई। किन्तु इतिहासमें आपने पढ़ा है—आपके देशका मुख उज्ज्वल करनेवाले अध्यापक विश्वामित्र यही है। इतिहासोंमे अब जब हम लोग धर्मके नामपर मार-काट पढ़ते हैं, तो हँसते हैं—वैसे ही हँसते हैं, जैसे एक राजाकी बातके कारण सहस्रों पुरुषोंको पतंगोंकी भाँति युद्ध-अग्निमे जलते सुननेपर। जिन्होंने उस अन्धकार-युगमें मनुष्य-जातिके कल्याणके लिए भगीरथ-प्रयत्न किया, वे धन्य है। आज महापुरुष विश्वबन्धुकी पवित्र मूर्ति हमारे मध्यमे है। (महापुरुषोंकी तस्वीरोंकी ओर इशारा करके) आज हम समझते है, ये सारे देवगण मूर्तिमान, सजीव हमारे मध्यमें है। वास्तवमे क्या हमारे हृदयका भाव, हमारा भक्ति-उद्गार वाणी-द्वारा प्रकट किया जा सकता है?

"साथियो! हमारे गाँवका सबसे अधिक सौभाग्य है कि आप पहले यहीं पधारे। आज वस्तुत अनिर्वचनीय आनन्दका समुद्र हमारे हृदयोंमें तरंगित हो रहा है। हम पूजनीय महात्माको किस प्रकार पूजें, किस प्रकार स्वागत करें, यह समझमें नहीं आता। ऐसे अपूर्व महापुरुषके लिए हमारे पास कौन-सा द्रव्य है? अधिक कुछ नहीं, सिर्फ इतना ही—महात्मन्! हम सब आपके कृतज्ञ है, आपके ऋणोंका हमसे परिशोध नहीं हो सकता। साथियो, यद्यपि हम सब लालायित है, कि आपके मुँहसे कुछ सुनें, किन्तु,

राला। मैं तो ऐसे ही महापुरुषके शुभागमनका सन्देश पा आनन्दसे मत्त रहा था। मुझे गर्व है कि मैंने विद्या-द्वारा ही नालन्दामें जन्म नहीं लिया, मेरा जन्म भी यहींका है। पितामह, आप लोगोंको विदित है, पूरे सौ वर्षके होकर मरे थे। वे सुनाया करते थे कि कैसी कठिनाइयोंमें न्दाका पुनरुद्धार किया गया। जबकि उनकी अवस्था पच्चीस वर्षकी तभी उन्होंने विद्यालयके लिए अपना जीवन-दान किया, और अन्तमें अग्नि-समाधिस्थ भी हुए। वह कहते थे कि हमारे साथ अनेक महा- उस समय नालन्दाकी सेवा करते थे। उस समय विद्यालयकी भूमिपर ी-थोळी दूरपर छोटे-छोटे ग्राम बसे हुए थे। विद्यालयके पुरातन भवनोंके वशेष भीटों-जैसे थे। उस समय वुद्ध-पोखर आदिकी यह शोभा न थी। गाँव नामका एक छोटा-सा ग्राम वहाँ था, जहाँ अब भी सूर्यका मन्दिर कार्तिककी सूर्य-षष्ठीका मेला अलबत्ता एक दिनका होता था, जिसमें लायें ही अधिक सम्मिलित हुआ करती थीं। आपको ज्ञात है, उस समय र्मान्धताका साम्राज्य था। पुरुष स्त्रियोंकी शिक्षामें धर्मकी हानि समझते हमारे मुसल्मान भाइयोंने धर्मके नामसे स्त्रियोंको जकळबन्द कर ा था, जिसकी देखा-देखी समस्त उत्तरीय भारत स्त्री-जातिका एकान्त ागार हो गया था। यह बळी भारी कृपा समझिये, जो स्त्रियाँ उस मे धर्मके सम्बन्धसे जाने पाती थीं। यह तो सभीने सुना था कि आचार्य वबन्धु ३० वर्ष तक विद्यालयकी सेवा करके उत्तराखंडको चले गये; तबसे कुछ पता नहीं लगा। भला यह किसको आशा थी कि हम लोगोंका सौभाग्य उदय होगा। आज तीन पीढ़ियाँ प्रतीक्षा करती चली गईं।

हम सब जब इन बातोंको सुनते थे, तो स्वप्न देखते थे—यदि महापुरुषका फिर दर्शन होता, यदि वह फिर पधारते, तो उन्हें अपने सिर-आँखोंपर रखते। हमलोगोंने स्त्रियोंके ऊपर वह अत्याचार होते जन्मसे ही नहीं देखा। हम लोगोंने तो जन्मसे मनुष्योंका ऊँच-नीच होनेका शब्द ही नहीं सुना। हमने तो धर्मके नामसे कट मरनेकी चर्चा भी न सुन पाई। किन्तु इतिहासमें आपने पढ़ा है—आपके देशका मुख उज्वल करनेवाले अध्यापक विश्वामित्र यही हैं। इतिहासोंमें अब जब हम लोग धर्मके नामपर मार-काट पढ़ते हैं, तो हँसते हैं—वैसे ही हँसते हैं, जैसे एक राजाकी बातके कारण सहस्रों पुरुषोंको पतंगोंकी भाँति युद्ध-अग्निमें जलते सुननेपर। जिन्होंने उस अन्धकार-युगमें मनुष्य-जातिके कल्याणके लिए भगीरथ-प्रयत्न किया, वे धन्य हैं। आज महापुरुष विश्वबन्धुकी पवित्र मूर्ति हमारे मध्यमें हैं। (महापुरुषोंकी तस्वीरोंकी ओर इशारा करके) आज हम समझते हैं, ये सारे देवगण मूर्तिमान, सजीव हमारे मध्यमें हैं। वास्तवमें क्या हमारे हृदयका भाव, हमारा भक्ति-उद्‌गार वाणी-द्वारा प्रकट किया जा सकता है?

"साथियो! हमारे गाँवका सबसे अधिक सौभाग्य है कि आप पहले यहाँ पधारे। आज वस्तुतः अनिर्वचनीय आनन्दका समुद्र हमारे हृदयोंमें तरंगित हो रहा है। हम पूजनीय महात्माको किस प्रकार पूजें, किस प्रकार स्वागत करें, यह समझमें नहीं आता। ऐसे अपूर्व महापुरुषके लिए हमारे पास कौन-सा द्रव्य है? अधिक कुछ नहीं, सिर्फ इतना ही—महात्मन्! हम सब आपके कृतज्ञ हैं, आपके ऋणोंका हमसे परिशोध नहीं हो सकता। साथियो, यद्यपि हम सब लालायित हैं, कि आपके मुँहसे कुछ सुनें, किन्तु,

यह लोभ हमारा बलात्कार होगा। दो सौ साठ वर्षका शरीर, उसमें भी दो सौ वर्षका लम्बा उपवास। अस्तु। अब मैं अधिक आप सबकी ओरसे महात्माकी सेवामें और क्या कह सकता हूँ, सिवाय इसके कि महात्मन्! हम आपके कृतज्ञ हैं, हम आपसे उऋण होने योग्य नहीं।"

मैंने यह सब कथन बळी सावधानीसे सुना। सुनते समय कितने ही अतीत-दृश्य मेरे मानस-नेत्रोंके सम्मुख आते-जाते थे। कथन-समाप्तिके बाद ही मैंने खळे होकर कहा—

"बन्धुओ! मैं जो कुछ देख रहा हूँ, यही एक स्वप्न था, जिसके जागृतमें लानेके लिए लाखोंने अपना जीवन-सर्वस्व अर्पण किया। तुम समझ सकते हो, उस स्वप्नको जीते-जागते देखते हुए मेरे हृदयमें कैसा आनन्द होता होगा। अभी आजके जगतका कितना अंश मैंने देख ही पाया है; किन्तु जो कुछ देखा है, वही क्या कम है? मान लो, आज मैं यदि १९२३के किसी गाँवमें जाता, तो क्या यह सेब-ग्राम मिलता? आपका पाँच हजार की आबादीका यह गाँव है, ऐसे ही ग्रामोंकी उस समयकी अवस्था सुनाता हूँ। मिट्टीके कच्चे मकान, जिनमें कहीं-कहीं मकानकी मिट्टी गिर गई है। कहीं एक कोना खिसक पळा है। फूसकी छत और खपळैल टूटी-फूटी पळी हुई है। दस घरमें शायद दो घर ऐसे होंगे, जिनमें बरसातकी बूँदें भीतर न टपकती हों। जगह-जगह पतली-पतली गलियोंमें कूळा-कर्कट फेंका हुआ है, वहीं नाबदानका पानी बह रहा है। लळके वहीं पाखानेके लिए बैठ जाते हैं। बरसातके दिनोंमें तो और भी सळ-सळ कर कीचळ और दुर्गन्धकी भरमार हो जाती थी। बस्तीके चारों ओर लगे हुए

सेन ही लोगोंके पाखाना जानेकी जगहें थी। कुत्ते जगह-जगह फिरते रहते थे। किसी प्रकार मुश्किल से, जिस रास्ते से गाळी जा सके, वहीं उस समयकी सळक थी। आज-कल वे बैल-गाळियाँ और एक्के कहाँ है? प्राचीन वस्तुओंके संग्रहालयोंमें उन्हें आप लोगोंने देखा होगा। वही उस समयकी सवारी थी। धनी लोग अच्छे-अच्छे घोळोंकी गाळियाँ रखते थे। हाथी भी सवारीके लिए रखे जाते थे। अब तो आपके यहाँ, मोटर ही सवारीके लिए, मोटर ही लादनेके लिए, गाँवके सभी काम मोटर हीसे होते हैं। उस समय यह सभी काम आदमी या बैलगाळीसे होते थे। मैंने भी कई बार रात-रात भर बैलगाळीपर चढ़कर ८-१० कोसकी यात्रा पूरी की थी।

"हाँ, मैं उस ग्रामका वर्णन कर रहा था। बीचमें गाँवकी उसी पतली सळककी दोनों बगल दूकानें होती थीं, जिनमें हलवाई बताशे और लड्डू बेचते थे, बजाज कपळे, पसारी रंग मसाले, कोई साग-तरकारी, कोई सूई-धागा, कोई नून-तेल। हफ्तेमें एक या दो दिन बळे हाट लगते थे, जबकि आस-पासके गाँवोंसे आवश्यक चीजोंको खरीदनेके लिए ज्यादा आदमी आया करते थे। कोई पैसोंसे चीजें खरीदता था। कोई अनाज बदलता था। दूकानदार इस खरीद-बेंचमें कुछ प्राप्त कर अपना निर्वाह करते थे। लोगोंकी अवस्थाकी क्या पूछते हो? आप लोगोंको तो उस समय का बळे-से-बळा धनिक भी देखता, तो देखता रहता। पाँच-छ वर्षके लळके चार अंगुल कपळेकी लँगोटी लगाये फिरा करते थे। कुछ धनिकोंको छोळ कर, साधारणतया सभी एक अँगोछा और धोतीहीसे काम चलाते थे

ऐसे लळके एक-दो नही, लाखो उस समय भारतमें थे।

"सळा-गला, खराब अन्न भी उस समय करोळो आदमियोंको पेट भर न मिलता था। कितने ही लोग पेटके लिए गाँव-गाँव भीख माँगते फिरते थे। मैंने अपनी आँखोंसे अनेक स्थानोपर ऐसे लळको और आदमियोको देखा था, जोकि, खानेवाले बचे टुकळेको जब फेंक देते थे, तो उसे कुत्तोके मुँहसे छीनकर खा जाते थे। यह बात नही कि लोग परिश्रमसे घबराते थे। दस-बीस चाहे वैसे भी हो, किन्तु अधिकतर ऐसे थे, जो रातके चार बजेसे फिर रातके आठ-आठ दस-दस बजे तक भूखे प्यासे खेतों, दूकानो, कारखानोपर काम करते थे, फिर भी उनके लिए पेट-भर अन्न और तनके लिए अत्यावश्यक मोटे-छोटे वस्त्र तक मुयस्सर न होते थे। बीमार पळ जानेपर उनकी और आफत थी। एक तरफ बीमारीकी मार, दूसरी ओर औषध और वैद्यका अभाव, और तिसपर खानेका वही ठिकाना न था। १९१८ के दिसम्बरका समय था, जबकि सिर्फ इन्फ्लुयेंजाकी एक बीमारीसे, और सो भी ४-५ सप्ताहके अन्दर, ६० लाख आदमी भारतवर्षमें मर गये। मरनेवाले अधिकतर गरीब थे। जिनके पास न सर्दीसे बचनेके लिए कपळा था, न पथ्यके लिए अन्न, न दवाके लिए दाम था, न रहनेके लिए स्वच्छ मकान। वह पशु-जीवन नही, नरकका जीवन था। आदमी कुत्ते बिल्लीकी मौत मरते थे। मुझे आज-कलकी भाषा-परिभाषाका बोध नही। अत उसी पुरानी भाषाहीमें बोल रहा हूँ। सम्भव है, आप लोगोंको कही कही समझनेमें कठिनाई हो।

"महिलाओ और सज्जनो! जिस समय देशके अधिकाश मनुष्य

ऐसे लड़के एक-दो नहीं, लाखों उस समय भारतमें थे।

"खाना-पीना, खराब अन्न भी उस समय करोड़ों आदमियोंको पेट भर न मिलता था। कितने ही लोग पेटके लिए गाँव-गाँव भीख माँगते फिरते थे। मैंने अपनी आँखोंसे अनेक स्थानोंपर ऐसे लड़कों और आदमियोंको देखा था, जोकि, खानेवाले बचे टुकड़ोंको जब फेंक देते थे, तो उसे कुत्तोंके मुँहसे छीनकर खा जाते थे। यह बात नहीं कि लोग परिश्रमसे घबराते थे। दस-बीस चाहे जैसे भी हों, किन्तु अधिकतर ऐसे थे, जो रातके चार बजेसे फिर रातके आठ-आठ दस-दस बजे तक भूखे प्यासे खेतों, दूकानों, कारखानोंपर काम करते थे, फिर भी उनके लिए पेट-भर अन्न और तनके लिए अत्यावश्यक मोटे-झोटे वस्त्र तक मुयस्सर न होते थे। बीमार पड़ जानेपर उनको और आफत थी। एक तरफ बीमारीकी मार, दूसरी ओर औषध और वैद्यका अभाव, और तिसपर खानेका कहीं ठिकाना न था। १९१८ के दिसम्बरका समय था, जबकि सिर्फ इन्फ्लुयेंजाकी एक बीमारीमें, और सो भी ४-५ सप्ताहके अन्दर, ६० लाख आदमी भारतवर्षमें मर गये। मरनेवाले अधिकतर गरीब थे। जिनके पास न सर्दीसे बचनेके लिए कपड़ा था, न पथ्यके लिए अन्न, न दवाके लिए दाम था, न रहनेके लिए स्वच्छ मकान। वह पशु-जीवन नहीं, नरकका जीवन था। आदमी कुत्ते-बिल्लीकी मौत मरते थे। मुझे आज-कलकी भाषा-परिभाषाका बोध नहीं, अत उसी पुरानी भाषाहीमें बोल रहा हूँ। सम्भव है, आप लोगोंको कहीं-कहीं समझनेमें कठिनाई हो।

"महिलाओ और सज्जनो! जिस समय देशके अधिकांश मनुष्य

ऐसे लळके एक-दो नही, लाखो उस समय भारतमें थे।

"सळा-गला, खराब अन्न भी उस समय करोळो आदमियोको पेट भर न मिलता था। कितने ही लोग पेटके लिए गाँव-गाँव भीख माँगते फिरते थे। मैंने अपनी आँखोंमे अनेक स्थानोपर ऐसे लळको और आदमियोको देखा था, जोकि, खानेवाले बचे टुकळेको जब फेंक देते थे, तो उसे कुत्तोके मुँहसे छीनकर खा जाते थे। यह बात नही कि लोग परिश्रमसे घबराते थे। दस-बीस चाहे वैसे भी हो, किन्तु अधिकतर ऐसे थे, जो रातके चार बजेसे फिर रातके आठ-आठ दस-दस बजे तक भूखे प्यासे खेतो, दूकानो, कारखानोपर काम करते थे, फिर भी उनके लिए पेट-भर अन्न और तनके लिए अत्यावश्यक मोटे-झोटे वस्त्र तक मुयस्सर न होते थे। बीमार पळ जानेपर उनकी और आफत थी। एक तरफ बीमारीकी मार, दूसरी ओर औषध और वैद्यका अभाव, और तिसपर खानेका कही ठिकाना न था। १९१८ के दिसम्बरका समय था, जबकि सिर्फ इन्फ्लुयेंजाकी एक बीमारीमें, और सो भी ४-५ सप्ताहके अन्दर, ६० लाख आदमी भारतवर्षमें मर गये। मरनेवाले अधिकतर गरीब थे। जिनके पास न सर्दीसे बचनेके लिए कपळा था, न पथ्यके लिए अन्न, न दवाके लिए दाम था, न रहनेके लिए स्वच्छ मकान। यह पशु-जीवन नही, नरकका जीवन था। आदमी कुत्ते-बिल्लीकी मौत मरते थे। मुझे आज-कलकी भाषा-परिभाषाका बोध नही, अत उसी पुरानी भाषाहीमें बोल रहा हूँ। सम्भव है, आप लोगोको कही-कही समझनेमें कठिनाई हो।

"महिलाओ और सज्जनो! जिस समय देशके अधिकाश मनुष्य

आदि नशोंमेंसे किसी-न-किसीमें मस्त रहते थे। स्वयं परिश्रम कुछ भी न करते हुए, दूसरेकी मिहनतकी कमाईमें आग लगाना ये लोग खूब जानते थे। दूसरेके जखमपर 'सी' करनेवाले तो कम, पर नमक लगानेवाले अधिक थे। सिर्फ अपने एक शरीरके खाने कपड़ेपर ये लोग जितना खर्च करते थे, उतनेसे हजार आदमी सानन्द जीवन व्यतीत कर सकते थे। इनको अकेले रहनेके लिए, सैकड़ों आदमियोंके रहने लायक मकान होते थे। सबसे असह्य बात तो यह थी कि दुराचार, और अत्याचारकी साकार मूर्ति होनेपर भी, ये लोग धर्मके स्वम्भ बनकर संसारमें ध्रुव-पद ग्रहण करना चाहते थे, जिसमें कुछने यदि सफलता पाई हो, तो भी सन्देह नहीं। वह अपने सामने मनुष्यताका मूल्य नहीं समझते थे। इनका जादू न्यायाधीश, धर्माध्यक्ष पंडित-मौलवी-पादरी, सभीपर था। सभी इनकी 'हाँ-में-हाँ' मिलाते तथा इनके लाभकी बातके लिए अपने-अपने धर्म-ग्रन्थोंमें प्रमाण देनेको तत्पर थे। पंडित कहते थे, "धनी-गरीब, राजा-प्रजा अपने-अपने पूर्व जन्मकी कमाईसे होते हैं। यह सनातनसे चला आया है। यही भगवान्‌की इच्छा है। वेद-पुराण सब इसके साक्षी हैं।" मौलवी कहते थे, "खुदाने दुनियाकी भलाईहीके लिए अमीर-गरीब, बादशाह-रैयत बनाया, नहीं तो दुनियाका काम कैसे चलता? सारे रसूल, पैगम्बर इस बातके कायल और अपनी किस्मतपर सन्तुष्ट थे। बादशाह और मालिकपर खुदाका साया है।" ऐसे ही सभी एक ही सुरमें अलापते थे। असल बात तो यह थी कि लाखों परिश्रमी दीनोंका भाग छीनकर धनी लोग अकेले ही सब न खाकर कुछ टुकड़े इन लोगोंको भी फेंक देते थे, जिनपर ये लोग हाँ-में-हाँ मिलाना अपना

आदि नशोंमेंसे किसी-न-किसीमें मस्त रहते थे। स्वयं परिश्रम कुछ भी न करते हुए, दूसरेकी मिहनतकी कमाईमें आग लगाना ये लोग खूब जानते थे। दूसरेके जखमपर 'घी' करनेवाले तो कम, पर नमक लगानेवाले अधिक थे। सिर्फ अपने एक शरीरके खाने कपड़ेपर ये लोग जितना खर्च करते थे, उतनेसे हजार आदमी सानन्द जीवन व्यतीत कर सकते थे। इनको अकेले रहनेके लिए, सैकड़ों आदमियोंके रहने लायक मकान होते थे। सबसे असह्य बात तो यह थी कि दुराचार, और अत्याचारकी साकार मूर्ति होनेपर भी, ये लोग धर्मके स्वरूप बनकर संसारमें ध्रुव-पद ग्रहण करना चाहते थे, जिसमें कुछने यदि सफलता पाई हो, तो भी सन्देह नहीं। वह अपने सामने मनुष्यताका मूल्य नहीं समझते थे। इनका जादू न्यायाधीश, धर्माध्यक्ष पंडित-मौलवी-पादरी, सभीपर था। सभी इनकी 'हाँ-में-हाँ' मिलाने तथा इनके लाभकी बातके लिए अपने-अपने धर्म-ग्रन्थोंसे प्रमाण देनेको तत्पर थे। पंडित कहते थे, "धनी-गरीब, राजा-प्रजा अपने-अपने पूर्व जन्मकी कमाईसे होते हैं। यह सनातनसे चला आया है। यही भगवान्‌की इच्छा है। वेद-पुराण सब इसके साक्षी हैं।" मौलवी कहते थे, "खुदाने दुनियाकी भलाईहीके लिए अमीर-गरीब, बादशाह-रैयत बनाया, नहीं तो दुनियाका काम कैसे चलता? सारे रसूल, पैगम्बर इस बातके कायल और अपनी किस्मतपर सन्तुष्ट थे। बादशाह और मालिकपर खुदाका साया है।" ऐसे ही सभी एक ही सुरमें अलापते थे। असल बात तो यह थी कि लाखों परिश्रमी दीनोंका भाग छीनकर धनी लोग अकेले ही सब न खाकर कुछ टुकड़े इन लोगोंको भी फेंक देते थे, जिनपर ये लोग हाँ-में-हाँ मिलाना अपना

करामात समझते थे। धन्यवाद है कि अब यह जादू उतर गया।

"अब तो आप सबको यह सब बातें सुन-सुनकर आश्चर्य होता होगा—क्या ये लाखों आदमी सचमुच भेंड़ थे, जिन्हें एक धनी अपनी अँगुलीके इशारेपर नचाता था। यदि ये लोग जरा भी अपनी बुद्धिसे काम लेते तो क्यों गुलामीमें पड़े रहते? सचमुच आज यह तर्क बहुत सरल है, किन्तु उस समय यह सोचना असम्भव मालूम होता था—शेख-चिल्लीका महल कहलाता था। आजकी अवस्थाके समानताका भी विचार रखनेवाले उस समय पागल, सनकी, अधर्मी, मनुष्यताके शत्रु समझे जाते थे। शिक्षा लाभ करके प्रत्येक आदमी उसी धनिक श्रेणीका बनना चाहता था, चाहे हजारमें कोई एक ही हो पाता हो। इस प्रकार शिक्षित और धनिक तो इस तत्वकी ओर ध्यान न देते थे और बेचारे गरीब इसे असम्भव समझते थे। वह अपने ही कमजोर ख्यालोंमें इस प्रकार जकड़े हुए थे कि सचमुच उन्हें ऐसा होना असम्भव मालूम पड़ता था। आप कहेंगे—कैसी मूर्खता है। अपनी मिहनतकी कमाई दूसरेको खाने न देकर हमी खायेंगे, इतनी बात समझना कौन कठिन था? किन्तु, उनके लिए तो यही लोहेका चना था। उधर धनी लोगोंकी ओरसे कहा जाता था—ऐसा होनेसे धर्म नहीं रहेगा, जाति-मर्यादा चली जायगी; कलयुग आ जायगा। अभाग्य-वश श्रमजीवी लोग भी अनेक ऊँच-नीच श्रेणियोंमें विभक्त थे। बिहार का ब्राह्मण श्रमजीवी कहता था—गरीब हैं तो क्या, खानेको नहीं मिलता तो क्या, किन्तु चमार, अहीर, राजपूत 'पा-लगी' तो करते हैं—'महाराज' तो बोलते हैं? भला चमार, अहीर हमारे बराबर हो जायेंगे?

सचमुच बड़ा भ्रममें होगा। भूखा मरना अच्छा; अपनी कमाई दूसरा खाय, यह भी अच्छा, किन्तु श्रमको अपने ही ऐसा मनुष्य समझना ठीक नहीं। ऐसे ही, अपनेसे ऊँची जातिके पठान। सैयदके अभिमान को, चाहे शेखका मोमिन जुलाहा दिलसे न अच्छा समझता हो, किन्तु, अपनेसे नीचे गिने जानेवाले भंगीको अपने बराबर होने देना उसे भी अभीष्ट न था।

"अब अन्त में, आपलोगोंके वर्तमान ध्येयके विषयमें कुछ कह कर मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ। सबसे प्रथम तो यह कि यह न समझ बैठो कि हम अब अन्तिम स्थानपर आ गये, अब हमारी सभी बातें पूर्ण हैं, अब हममें कोई त्रुटि नहीं। जिस समय यह विचार आ जायेगा, उसी समयसे आप पीछेकी ओर खिसकने लगेंगे—आपका ह्रास होने लगेगा। मनुष्य कहाँ तक उन्नति कर सकेगा, यह असीम है। जिस प्रकार कुछ दिनों-पूर्व ज्योतिषमें अति दूर एक सितारा आविष्कृत हुआ था, आगे उससे भी दूर दूसरा मिला है, उसी प्रकार, लाखो वर्षों तक दूर-से-दूर सितारोंका पता दूरबीनों और फोटो-चित्रोंसे लगता जायगा, किन्तु उससे नक्षत्र-मण्डलकी इयत्ता नहीं हो सकती। वैसे ही हमारी उन्नति, हमारे सशोधनका क्षेत्र अनन्त दूर तक विस्तृत है। दूसरी बात ज्ञानकी वृद्धि है। इसमें सन्देह नहीं, उस समय शिक्षामें जो उच्चता की अवधि थी, अब वहींसे उसका आरम्भ है। आपका समाज बहुत सुशिक्षित, और सभ्य है, किन्तु आप उन्नति करके आजके अन्तको कल का आरम्भ बना सकते हैं। आपके उत्तराधिकारियोंको भी ऐसा

अधिकार है। यह बड़े आनन्दकी बात है कि आज विद्या विद्याके लिए पढ़ी जा सकती है। आज विद्याका वह पारितोषिक नहीं, मूल्य नहीं जो दो शताब्दियों-पूर्व रक्खा जाता था। आजकी सभी समृद्धिका मूल वही ज्ञान—वही विद्या—है, जिसकी कमीके कारण पहिले लोग मनुष्यता से गिर गये थे। इसकी वृद्धिमें उपेक्षा और इसके प्रचारमें असावधानी होना सभी खराबियोंकी जड़ है। उन्नतिकी आकांक्षा और ज्ञानका अधिक-से-अधिक प्रसार यही दो मूल बातें हैं जिनसे आपने अब तक उन्नति की है और आगे भी इसके लिए असीम क्षेत्र पड़ा हुआ है। मैं आपके प्रेममय भावोंसे अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ। और बस।"

मेरे व्याख्यानकी समाप्तिपर साथी इस्माइलने एक बार उठकर फिर मुझे धन्यवाद दे, सभा विसर्जित की। मैं विश्वामित्र, इस्माइल, देवमित्र, इस्माइलकी पत्नी प्रियम्वदा, तथा दूसरे सज्जनोंके साथ विश्राम-स्थानपर आया। रात्रिके दस बज चुके थे, मैंने उनकी सूचना और प्रार्थनाके उत्तरमें संक्षेप में कहा कि कल परसों और चौथे दिन मैं यहाँ ही रहकर आस-पासका तथा आपके ग्रामका अध्ययन करूँगा। इसके बाद अध्यापक विश्वामित्रके साथ यहाँसे सीधे नालन्दा जाऊँगा। वहाँसे भारतके प्रधान-प्रधान स्थानोंकी स्थितिका अध्ययन करके फिर कहीं बाहर कदम रक्खूँगा। आप सार्वभौम राष्ट्रपति श्रीदत्तको भी इसकी सूचना दे दें। देवमित्रने कहा आपके साथ, साथी इस्माइल और साथिन प्रियम्वदा भी बराबर रहेंगी, और यहाँकी बातोंके समझानेमें सहायता पहुँचायेंगी। मैंने इसके लिए प्रसन्नता प्रकट की। इसके बाद सब

लोग अपने-अपने स्थानको चले गये। विदा होते समय इस्माइलजीने भी सलाम नही किया। मुझे पहलेहीसे इन लोगोंके मजहबसे दूर हो जानेकी झलक दिखलाई पळनी थी, और पूछनेकी इच्छा होती थी। अब वह इच्छा और बलवती हो गई। विश्वामित्र पास ही बैठे थे। मैंने पूछा—

"विश्वामित्र ! यद्यपि मैंने लोगोंके नाम हिंदू मुसलमान जैसे सुने; किन्तु, उनकी पोशाक, बात-चीत, सलाम-दुआमें कोई फरक नही मिलता, क्या सभी मजहब मिल गये ?"

"मिल नही गये, प्रगति-विरोधी उन मजहबोंको हमने निकाल फेंका। नामोंमें भी बहुत परिवर्तन है, तो भी लोग जैसी इच्छा होती है वैसा नाम रख लेते हैं।

"और भाषा ? इस समय सारे भारतकी मातृभाषा 'भारती' है। जिसे आपके समयकी हिन्दी-उर्दूकी प्रतिनिधि कहना चाहिये। यही एक भाषा सर्वत्र बोली जाती है, लिपि भी नागरी है। अब भाषाकी कठिनाइयाँ नही है। भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें साहित्यिक-धार्मिक जिज्ञासासे और भी भाषायें पढी जाती हैं, किन्तु है 'भारती' भाषा ही सर्व-सर्वा। चाहे किसी भी प्रान्तका भारतीय क्यों न हो, उसकी भाषा भारती होगी। अब पुराने पक्षपात तो रहे नहीं, इसलिये सबके भाषा, भाव, वेष, एक हो गये हैं।"

मैंने अब अधिक देर तक विलम्ब करना उचित नही समझा। समय की व्यवस्थाओंसे मुझे अनुमान हो गया था कि शयन आदिका भी

दिया—तो इसकी पर्वाह क्या, तुम न दिखलाओगे, तो जादू-घरमें देखने से तो रोक न सकोगे ?

एक-एक करके सब टिप्पणियाँ समाप्त हुईं। इसी बीच ग्यारह बजे का घण्टा भी बज गया था। मैंने कहा, अब बारह भी थोड़ी देरमें बजेगा, बल्के कर्त्तव्यका थोड़ा-सा विचार करके सो जाना अच्छा है। सोचा—मेव-ग्रामकी बागोंकी बातें तो देख सुन ली। घरो और श्रेणियोंकी भी बात मालूम हो गई। सम्यागार-भोजनागार भी देख ही लिया। सुमेधने कहा था कि तीन वर्षके होते ही बालक शिक्षार्थ विद्यालयोंमें भेज दिये जाते हैं। तो यह देखना है कि तीन वर्ष तकके बालक कैसे रहते हैं, चिकित्सालय भी देखना है, गाँवकी सफाई आदिकी बातें जाननी हैं, यही मुख्य बातें हैं। इस्माइल और विश्वामित्र दोनों ही विस्तृत अनुभववाले पुरुष हैं। इनके साथ सबका देखना और भी अच्छा होगा। इस प्रकार विचार कर मैंने आज निद्रा-देवीकी गोद में विश्राम लिया।

अवश्य कोई नियम होगा। विश्वामित्र भी अपने कमरेमें सोने चले गये। मैं भी अपने पिछले सोनेवाले कमरेमें पलंगपर जा लेटा। अभी मेरी आँखों में नींद नहीं थी। सामने दीवारसे लगा हुआ बिजलीका गुब्बारेदार प्रदीप अपना प्रकाश फैला रहा था। तापक मकान को गर्म किये हुए था और यहाँ सर्दीका नाम न था। आज षष्ठी तिथि मालूम होती थी। चन्द्रमा अभी वृक्षोंके शिखरसे मेरी कोठरीमें झाँकने लगा है। सामनेका पर्वत कुछ दूर है। चाँदनी चारो ओर छिटकी हुई है। रात्रि स्तब्ध है। मेरे बिस्तरेपर आनेके साथ ही रेलका घर-घराना सुनाई दिया था। इस सन्नाटेकी अवस्था में, एक-एक करके आजके प्रत्येक दृश्यकी फिर एक-एक बार आवृत्ति होने लगी। साथ ही मनने सब पर एक-एक स्वतन्त्र टिप्पणी भी करनी आरम्भ कर दी। स्त्री-जाति की स्वतन्त्रताका दृश्य सम्मुख आते ही कहा—तब तो एक-एक हाथके घूँघट और बुर्कोंकी बोरा-बदी अब काहेको दिखाई देने लगी? अब दो बीस, चार बीस करके गिननेवाली स्त्रियाँ कहाँ मिलेंगी? अब, लड़कोंके पूछनेपर, चन्द्रमाके धब्बे, तारा, आकाश-गंगाकी विचित्र कथा सुनानेवाली मातायें कहाँ मिलेंगी? धनियोंका ख्याल आते ही सोचा—तो अब राजाबहादुर, महाराजाबहादुर, रायबहादुर, खानबहादुर, नवाबबहादुर होनेके लिए कोई न मरता होगा। अब इन पदोंके दाता-प्रतिगृहीता सदाके लिए भूमण्डलसे बिदा हो गये। अबके गाँवका दृश्य सम्मुख आते ही पुराने गाँवका चित्र दिलसे भागने लगा। शायद इसीलिए कि आसानीसे उसका ज्ञान न हो जाय। मैंने भी मनसे कह

दिया—तो इसकी पर्वाह क्या, तुम न दिखलाओगे, तो जादू-घरमें देखने से तो रोक न सकोगे ?

एक-एक करके सब टिप्पणियाँ समाप्त हुईं । इसी बीच ग्यारह बजे का घण्टा भी बज गया था । मैंने कहा, अब बारह भी थोड़ी देरमें बजेगा, बल्कि कर्त्तव्यका थोड़ा-सा विचार करके सो जाना अच्छा है । सोचा—सेव-ग्रामकी बागोंकी बातें तो देख सुन ली । घरों और श्रेणियोंकी भी बात मालूम हो गई । सस्यागार-भोजनागार भी देख ही लिया । सुमेधने कहा था कि तीन वर्षके होते ही बालक शिक्षार्थ विद्यालयोंमें भेज दिये जाते हैं । तो यह देखना है कि तीन वर्ष तकके बालक कैसे रहते हैं, चिकित्सालय भी देखना है, गाँवकी सफ़ाई आदिकी बातें जाननी हैं, यही मुख्य बातें है। इस्माइल और विश्वामित्र दोनो ही विस्तृत अनुभववाले पुरुष हैं । इनके साथ सबका देखना और भी अच्छा होगा । इस प्रकार विचार कर मैंने आज निद्रा-देवीकी गोद में विश्राम लिया ।

६

ग्राम और ग्रामीण

पाँच बजनेसे पहले ही मेरी नीद खुल गई थी। मै उठकर उस समय खिळकीसे आकाशकी ओर देख रहा था। चारों ओर तारे बिखरे हुए थे। चन्द्रमा मेरे सम्मुख नही था, किन्तु चाँदनी नज़र आती थी। चाँदनीमें खिळकीके बाहर लदे हुए फूल खूब दिखलाई पळते थे। गुलाबकी भीनी-भीनी सुगन्ध दबे-पाँव मेरे कमरेमें आ रही थी। अभी दस-पांच मिनट ही बीते होंगे, कि गोलेकी आवाज हुई। पाँच बज गये। थोळी ही देरमें देव भी आ गये। उन्होने पहले झाँककर देखा; जब मुझे बैठा पाया, तो भीतर आये। पूछा—क्या स्नान अभी होगा; यदि अभी, तो क्या यही घरके नलपर स्नान-पात्रमें, या स्नानागार के गर्म-कुड मे ?

मैंने कहा, मैं यहीं स्नान कर लूँगा। कल तो मुझे शौचकी आकांक्षा ही नहीं हुई थी। अब देवने बतलाया कि पीछेकी ओर वह पाखाना है। प्रत्येक घरका अलग-अलग पाखाना है जिसमें नल लगा हुआ है। पाखाना हो लेने पर नल घुमा देनेसे पानीकी बळी तेज धारा आती है, और मलको नलोंके द्वारा बहा ले जाती है। पीछे यह भी मालूम हुआ कि पाखानोंपर भंगी नहीं रखे हुए है। भंगी तो अब कोई जाति ही नहीं है। हाँ, नल बिगळ जानेपर कोई भी आदमी, जो नलोंके सुधारनेपर नियुक्त है, उसे ठीक कर देता है। सारे गाँवका मैला बळे-बळे नलो-द्वारा दो-तीन कोसकी दूरीपर जाता है। वहाँपर बळे-बळे गड्ढे, कलो-द्वारा खोदे हुए तैयार रहते है। मिट्टी नीचे भी खुदी, और बाकी आस-पास लगी रहती है। इधर मैला गिरता जाता है, और उधर मशीन मिट्टी उसपर फेंकती जाती है। मशीनें बिजलीके जोरसे चलती है और चलानेवाले भी दूर रहते है। यद्यपि मिट्टीसे ढाँके रहने तथा खुली हवामें मैले का सम्पर्क न होनेसे, वहाँ दुर्गन्ध नहीं मालूम होती, तो भी मचालक लोग मशीनोंके बिगळ जानेपर वहाँ जाते हैं। एक गड्ढेके भर जानेपर पहलेसे दूसरा गड्ढा तैयार हो गया रहता है। इसी तरह एक भरा गड्ढा चार वर्ष तक बन्द छोळ दिया जाता है। पीछे खोद कर, उसमें और कुछ रासायनिक पदार्थ मिला कर, वह वृक्षोंमें खादकी भाँति उपयुक्त होता है।

मैं अपने बिस्तरेसे झट उठ खळा हुआ, और पहले शौच गया। पाखाना स्वच्छ था—वह पाखाने-सा मालूम ही नहीं होता था। अभी

मे मकानकी पिछली ओर नहीं आया था। देखा, थोळी-थोळी दूर
छोटे-छोटे एक ही तरहके पाखाने बने हुए हैं। ये घरसे दस-
हाथ हट कर हैं। बीचमें वैसे ही फूल, बेल-बूटे लगे हुए हैं
कि सामनेकी ओर। 'अतिथि-विश्राम'की सम्पूर्ण श्रेणीके आगे-पी
एक पार्क-सी लगी यह फुलवारी बळी सुन्दर मालूम होती है
पीछे मैंने देखा, सभी श्रेणियोंका प्रबन्ध ऐसा ही है। अपने घरे
आमने-सामने फुलवारियों को ठीक रखना, अपने-अपने घर
स्वच्छ-शुद्ध रखना घरवालोंका अपना काम है। मैं शौचसे आक
स्नानके कमरेमें गया। जाकर देखा, ठंडे और गर्म जलके दो न
लगे हुए हैं। सफेद दूधकी भाँति चीनी-मिट्टी का, पत्थर-सा मजबूत,
हाथ लम्बा, डेढ़ हाथ चौळा, दो हाथ गहरा स्नान-पात्र क्या एक कुण
ही जमीन में मढा हुआ है। नलकी बगलमें दीवारसे लगे एक स्था
पर साबुनकी टिकिया तथा उससे ऊपर खूटियोंपर एक सफेद तौलिय
और एक धुली हुई लुंगी रखी है। गर्म पानीका नल खुला हुआ है, औ
हौज लबालब भरा हुआ है, तो भी पानी ऊपरसे नहीं निकलता है। मैं
हाथ-पाँव धोया। विचार किया कि अब दतुवन करना चाहिये। दतुव
तो दीख नहीं पळी, हाँ, साबुनकी टिकियाके पासमें एक चाँदीकी
डिब्बीपर एक दाँतका ब्रुश देखा। खोलनेपर डिब्बीके अन्दर सुगन्धि
दाँतकी लेई मिली। मैंने विचारा, मालूम होता है, अब दतुवनक
रेवाज ही नहीं रहा। पीछे विश्वामित्रने बताया, एक ही सेबग्राम के
लिए पाँच हजार दतुवन चाहिये। अब फजूलके पेळ तो यहाँ हैं नहीं

अच्छे पेळोसे दतुवन तोळी जाने लगें, तो नित्य ही एक-दो पेळ सिर्फ एक गांवके लिये खराब हो जायें। फिर भूमंडलकी जन-संख्या तो डेढ़ अरब है। इसीलिये ब्रुश और मंजनका प्रबन्ध किया गया है। अनार, बादाम आदि के छिलकोंको क्या हम लोग बेकार जाने देते हैं ? सबसे मंजन या कोई-न-कोई और कामकी वस्तु बनाई जाती है।

मैंने ब्रुश और लेईसे दाँत-मुँह साफ किया और कुण्डमें प्रविष्ट होकर, साबुनसे मल-मलकर खूब नहाया। इस प्रकार नहा-धो, कपळे बदलनेपर, देवने आकर एक कल घुमाई और स्नान-पात्रका सब जल निकल गया। उसी कमरेमें एक ओर खिळकीके पास एक ऊँचे स्थान पर स्वच्छ आसन बिछा हुआ था। मैंने वहाँ जाकर कुछ व्यायाम किया। इसके बाद बैठनेके कमरेमें आया। अब सूर्यकी रक्तिमा प्राची दिशामें फैली हुई थी। सूर्य-बिम्बकी एक पतली सुनहली रेखा ही अभी दिखाई पळती थी। जगह-जगह पक्षियोंका मधुर कलरव अब भी जारी था। हवाके झोंके सामनेके फूलोंको हिला रहे थे। सळक और सामनेके घरोंकी शोभा और स्वच्छता बिखरी हुई थी। मेरा भी चित्त अत्यन्त शान्त और प्रसन्न था।

इसी समय विश्वामित्र भी आ गये। उनके साथ पद्मावती भी थी। मेरे कहनेपर वे दोनो भी पास ही रखी कुर्सियोंपर बैठ गये। यद्यपि चेहरा छोळ, सभी का सारा शरीर ढँका हुआ था, तो भी गर्म मकान में सर्दी कहाँ थी ? सहस्रों वर्णनीय बातें है। सबका वर्णन कैसे हो सकता है ? पुरुषों और स्त्रियोंकी पोशाक, देखनेमें यही नहीं कि बळी सुन्दर

थी, बल्कि उसमें कोई वस्तु व्यर्थ, अनुपयोगी और हानिकारक भी न थी। मैंने कामके समय तो पुरुष-स्त्रियों, दोनोंको, ऊनी जाँघिया और नीचे लम्बा मोजा और सारा पैर ढँके हुए एक प्रकारका जूता देखा। मैंने आश्चर्य से देखा कि चमड़ेकी कोई चीज न थी। जूते भी थे एक तरहकी मोटी जीनके, (जो देखनेमें चमड़ेसी मालूम होती थी), जिनके तल्ले दृढ़ रबरके थे। कुर्तोके नीचे एक गर्म कोट और सबके सरपर एक ही प्रकार की टोपियाँ थी। किन्तु मालूम होता है, यह पोशाक कामके वक्त की थी, क्योंकि रातको भोजनके समय तथा सस्थागारमें वह पोशाक न थी। सबके सिरपर एक प्रकारकी गोल टोपी, पैरो तक लम्बे गर्म कोट और नीचे पतलून थी।

स्त्रियो के पहरावे जूता, मोजा, साळी, और कुर्ती हैं। अधिक सर्दी पळनेपर वह एक लम्बा गर्म कोट भी पहनती है, तथा सिरपर टोपी भी लगाती हैं। स्त्री या पुरुष कोई किसी प्रकारका भी जेवर नहीं पहनता। कलाई या पाकेट की घळियोंका भी चलन नहीं। निर्बल दृष्टिवाले तथा जिन्हें उसकी आवश्यकता है, चश्मा भी लगाते हैं। हर एक व्यक्तिके पासएक-एक फौटेन-पेन और एक-एक रोजनामचा भी देखा। कलका वृत्तान्त लिखनेकी जब मेरी इच्छा हुई, तो मुझे भी मेरी इच्छानुसार एक बळा रोजनामचा, और एक फौंटेन-पेन मिली। इसकी निब प्रायः बिल्कुल ही सोनेकी थी, शायद कळाईके लेहाजसे कुछ इरिडियम नोकपर लगाई गई हो। फिर भी सोनेकी। बात यह है, अब लोगों के लिये सोनेका और उपयोग ही क्या हो सकता है ? पौंड और मुहर

तो चलते ही नही। न लोग आभूषण पहनते है, न गाळ कर रखनेहीका काम है। अत इन्ही सब चीजोमें उसका उपयोग होता है।

विश्वामित्र और पद्मावतीके आनेके थोड़ी ही देर बाद इस्माइल भी अपनी साथिन प्रियम्वदाके साथ आ पहुँचे और कहा, अब सात बजने ही वाला है, आज जलपानके बाद 'शिशु-उद्यान' देखना अच्छा होगा। प्रियम्वदा वहाँकी सहायक अधिष्ठात्री है। अभी यह, मुख्याधिष्ठात्री साथिन फातिमाको इस बातकी सूचना भी दे आई है। मैंने भी कहा, बहुत अच्छा, इस समय 'शिशु-उद्यान' देखा जाय, और दोपहर के बाद चिकित्सालय। इसी बीच गोलेकी आवाज आई और हमलोग भोजनागारकी ओर चले।

सड़कके दोनो ओर आस-पासके मकानोकी शोभा और ही थी। सब मकानोकी बनावटमे दृढता, स्वच्छता और सुन्दरताका पूरा-पूरा ध्यान रक्खा गया है। पूर्ववत् ही हमलोग हाथ-मुँह धो कुर्सियोपर बैठे, जलपानके लिए एक-एक जलेबी, दो-दो अडे और एक-एक गुलाब-जामन एक तश्तरीमे रखे थे। दूसरी तश्तरीमें ताजे तथा सूखे कुछ फलोके कतरे और एक गिलास साफ जलके अतिरिक्त एक गिलास खाली भी रखा था, जिसमें पीछेसे गर्म दूध दिया गया। पूर्ववत् घटीपर खाना आरम्भ हुआ। अब हम लोग—विश्वामित्र, इस्माइल, प्रियम्वदा और मैं—वहाँसे शिशु-उद्यानकी ओर चले। मालूम हुआ कि शिशु-उद्यान गाँवके अन्त मे है।

रास्तेमें पूछनेपर विश्वामित्रजीने कहा, पान हीका नही, अब

इसपर विश्वामित्रने कहा—अब असली मास मिलना ही नही। नकली मास खानेमें किसीको सकोच नही।"

"और अडा ?"

"वह तो परम सात्विक फलाहार है।"

"अब क्या यूरोप-अमेरिकामें सूअर आदि नही पाली जाती होंगी ?"

"नही, बिल्कुल नही। बस्तीमें यही न देखिये, कही कोई जानवर है ? पहले जैसे मैंने बन्दरोंके बारेमें बताया था कि बदरियोको पकड़ कर पिंजड़ोमें बन्द कर दिया गया, जिसके कारण कुछ वर्षों में उनकी जाति ही उच्छिन्न हो गई। इसे जाति-उन्मूलन-प्रक्रिया कहते हैं। सूअर, कुत्ता, बिल्ली सबका जाति-उन्मूलन हो गया है। केवल प्राणि-विद्याके विद्यार्थियोंके उपयोगके लिए कही कही उन्हे पालकर रखा गया है।"

"चमड़ेका तुम लोगोने तो व्यवहार छोड़ दिया, इसलिए मास छोड़नेसे उधर तकलीफ नही उठानी पड़ी होगी, किन्तु इतना जो दूधका खर्च है, उसके लिए गाएँ तो बहुत पालनी पड़ती होगी ? खैर, मारनेसे नही, तो अपनी मौतसे तो उनमेंसे हजारो मरती होगी ? उनका चमड़ा भी क्या मशीनोंके 'बेल्ट' के लिए काममें नही लाया जाता ?"

"मशीनोकी बेल्ट भी चमड़ेसे कही मजबूत कानविसकी बनती है। चमड़ेको अलग करना, उसको सिझाना इत्यादि बड़ा गन्दा काम था। जिससे वायु बहुत दूषित हो जाती थी। अत वह काम ही एक दम

बहुत-सी चीजोंका रवाज उठ गया है। तम्बाकू खाना-पीना, बीडी-सिगरेट, शराब-गांजा, भंग-अफीम किसीका अब पता नहीं। बात यह है कि जो नशीली चीजें हैं, वे तो हैं ही वर्जनीय। उनका रोकना तो उनकी हानि-कारिताके कारण ही आवश्यक था; किन्तु, जो अनावश्यक हैं उन्हें भी राष्ट्रने बन्द कर दिया। कोई चीज एक आदमीके उपयोग के लिये, विना विशेष स्वास्थ्यादि हेतुके तो दी नहीं जा सकती। सबके लिये नियम एक होना चाहिए। जितने कपळे साल भर में एक आदमी को मिलते हैं, सारे राष्ट्रमें उतने ही प्रत्येकको मिलते हैं। यदि पान का प्रबन्ध किया जाय, तो सारे राष्ट्रके लिये प्रबन्ध करना होगा। भारतमें २५ करोळ आदमी रहते हैं। आप विचार कर सकते है कि इतने आदमियोंके पान, कसैली, चूना, कत्था, तैयार करनेमें लाखों आदमियोंको लगा रहना पळेगा। इतनी फजूलखर्ची करना आज राष्ट्र कैसे गवारा कर सकता है ? जो लाखों बीघे खेत पान, तम्बाकू आदि के पैदा करनेमें फँसे रहते, आज उनमें अन्य उपयोगी पदार्थ उत्पन्न किये जाते हैं। अनावश्यक व्ययके कारण ही चाय, काफी, भी संसार से उठ गई। अब उनके स्थानपर शुद्ध, गर्म, मीठा दूध सबको जाळेमें तीन वक्त और गर्मीमें दो वक्त मिलता है।

मैंने कहा, तुम्हारी आजकी राष्ट्रीय प्रगतिने तो सारे ही दुर्व्यसनोंके लिए एक ही पर्याप्त कुल्हाड़ी ढूँढ निकाली है। फिर मैंने पूछा—अब हिन्दू, मुसल्मान, पारसी, ईसाईके पृथक् भोज आदिका झगळा तो रहा नहीं, किन्तु मांस खानेवालोंका कैसे निपटारा होता होगा।

इसपर विश्वामित्रने कहा—अब असली मास मिलता ही नही। नक्ल
मास खानेमे किसीको रुचि नही।"

"और अडा ?"

"वह तो परम सात्विक फलाहार है।"

"अब क्या यूरोप-अमेरिकामें सूअर आदि नहीं पाली जाती होंगी ?

"नहीं, बिल्कुल नही। बस्तीमें यही न देखिये, कही कोई जानव
है ? पहले जैसे मैंने बन्दरोके बारेमें बताया था कि बदरियोक
पकड कर पिंजडोमें बन्द कर दिया गया, जिसके कारण कुछ वर्षो
उनकी जाति ही उच्छिन्न हो गई। इसे जाति-उन्मूलन-प्रक्रिया कह
है। सूअर, कुत्ता, बिल्ली सबका जाति-उन्मूलन हो गया है। केव
प्राणि-विद्याके विद्यार्थियोके उपयोगके लिए कही कही उन्हे पालक
रखा गया है।"

"चमडेका तुम लोगोने तो व्यवहार छोड दिया, इसलिए मा
छोडनेसे उधर तकलीफ नही उठानी पडी होगी, किन्तु इतना
दूधका खर्च है, उसके लिए गाएँ तो बहुत पालनी पडती होगी ? खै
मारनेमे नही, तो अपनी मौतसे तो उनमेंसे हजारो मरती होगी
उनका चमडा भी क्या मशीनोके 'बेल्ट' के लिए काममें न
लाया जाता ?"

"मशीनोकी बेल्ट भी चमडेसे कहीं मजबूत कानविसकी बन
है। चमडेको अलग करना, उसको सिझाना इत्यादि बडा गन्दा क
था। जिससे वायु बहुत दूषित हो जाती थी। अत वह काम ही एक

छोड़ दिया गया। पशुके मरनेपर उसे खोद कर गाड़ दिया जाता है। पीछे खाद हो जाने पर उसे व्यवहारमें लाया जाता है। ऐसे बेकार तो, जहाँ तक हो सकता है, कोई भी चीज जाने नहीं पाती। हड्डियोंका हम लोग पूरा उपयोग लेते हैं, गोबर आदि भी खादके लिए उपयुक्त होते हैं।"

हम लोग बातें करते जा रहे थे। रास्तेमें मिलनेवाले सभी नर-नारी मेरी ओर देखते चले जाते थे। ग्राम पहाड़के नीचे और नदी के किनारे होनेसे लम्बाईमें अधिक है। चौड़ाईमें तो पाँच सड़के ही हैं। सड़के अच्छी चौड़ी है, जिनके दोनो ओर घने वृक्ष लगे हुए हैं। प्रत्येक सड़कके दोनों ओर गृह-श्रेणियाँ हैं। प्रत्येक श्रेणीका पिछला भाग अगली श्रेणीके पिछले भागसे मिला है, अर्थात् दोनोंके पाखाने एक ही में जुड़े हैं। इस प्रकार चौड़ाई में छः श्रेणियाँ हैं। ग्रामकी लम्बाई पूर्व-पश्चिम है। एक श्रेणीकी समाप्ति पर उत्तर-दक्खिन जानेवाली एक-एक सड़क है। यदि कोई आदमी ग्रामणी-कार्यालयसे चले, तो एक चौराहेपर अतिथि-विश्रामकी श्रेणी मिलेगी। इसके बाद साधारण श्रेणियाँ हैं। तीन चौराहे पार कर चौथेपर 'संस्थागार' पड़ेगा, जो दो श्रेणियों के बराबर जगह घेरता है। ग्राम-पुस्तकालय इसीमें लगा हुआ एक बड़ा हाल है। यहाँसे अवश्यकतानुसार पुस्तकें श्रेणी-पुस्तकालयोंमें भी आती-जाती रहती हैं। 'संस्थागार' और भोजनागारमें एक ही सड़क का अन्तर है। गाँवके नये और बड़े-बड़े सिलाई आदिके काम तो दर्जी-ग्रामों आदिसे बन कर आते हैं, किन्तु फिर भी कोई बीचमें मरम्मत

या जल्दीके कामके लिए ग्रामणी-कार्यालयके सामने सीने, रंगने, बिजली के शीशोंके रखने-बदलने आदिका काम होता है। उसकी उत्तर ओर उससे लगा हो हुआ धोबीखाना है, जहाँ मशीनोंके द्वारा कपड़ों की धुलाई, कलप आदि होती है। कपड़ो के सुखानेके लिए यहीं बड़े-बड़े गर्म हाल हैं। उससे एक सड़क लाँघ कर भोजनकी वस्तुओंका गोदाम है। उसीसे लगी मोटरोंके ठहरनेकी जगह, तथा अन्य वस्तुओं का गोदाम है। अन्तमें सामान मरम्मतके कामके लिए फैक्टरी है, जहाँ लोहार-बढ़ईका भी कुछ काम होता है। इन सभी जगहोंपर मरम्मतका वही काम होता है, जिसकी जल्दी रहती है। नहीं तो, वे चीजें उन-उन ग्रामोंको भेज दी जाती है, जहाँ केवल उन्हींका काम होता है। इस प्रकार मालूम हो सकता है, ग्रामके सभी कार्यालय पश्चिम ओर, उत्तर-दक्खिनकी सड़कपर पड़ते हैं। सस्यागार, भोजनागार बीच मे, और शिशु-उद्यान तथा चिकित्सालय ग्रामसे बाहर पूर्व तरफ हैं। लम्बाईकी सड़के अधिक चौड़ी हैं तथा उनपर सायादार वृक्ष लगे हुए हैं।

इच्छा हुई, पहले शिशु-उद्यान देखूँ, पर भोजनका समय हो गया था, इसलिए भोजनागारकी ओर मुड़ा। जब भोजनागार बीस गज रह गया, तभी ग्यारहवा गोला दगा। सब लोग पुन. पूर्ववत् हाथ मुँह धो भोजनके लिए बैठ गये। इस वक्तका भोजन वही था, जिसे पहिले समय में लोग कच्चा भोजन कहा करते थे। रोटी, दाल, भात, मास, साग, कढ़ी, पकौड़ी, सभी चीजें परोसी गई थी। मेरी दाहिनी ओर

साथिन और भाई और इस्माइल बैठे हुए थे। हम लोग जरा पहिले थे, इसलिए दो एक मिनट अभी देर थी। मैंने कहा, इतनेमें पाकशाला देख आवें। भोजनागारके दक्षिण तरफ पाकशाला थी। जाकर देखा; भी चीज़ोंके बनानेके लिए बड़े-बड़े बर्तन हैं, जिन्हें उतारने-चढ़ानेका काम मशीनोंहीसे किया जाता है। आटा गूँधना, रोटी बनाना भी मशीनों ही द्वारा होता है। आवश्यक ताप बिजली देती है। इतनी बड़ी पाकशाला, जिसमें पाँच हजार आदमियोंका भोजन बनता है, किन्तु यहाँ कालिख नहीं, धूआँ नहीं। हर-एक वस्तुके डालने और उतारनेका भी समय है। औषधि भी मात्रा है। अत किसी वस्तुमें गड़बड़ी होनेकी गुंजाइश नहीं। यद्यपि सभी वस्तुएँ स्वच्छ, शुद्ध ही आती हैं, तब भी भोजनके गुण-अवगुण-के विशेषज्ञ जब तक किसी वस्तुके लिए अनुमति नहीं दे देते, तब तक वह नहीं बन सकती। यह पहलेही बतला चुके हैं कि असली मांस अब नहीं मिलता, किन्तु कई ऐसे पदार्थ रसायनिक योगसे तैयार किये गये हैं जिनमें स्वाद भिन्न-भिन्न मांसोंका आता है, और गुण भी वही। पाकशाला पुरुष और स्त्री दोनों ही भाँतिके पाचक हैं। परोसकर थालियों-कटोरियों लकड़ीके तख्तोंपर सजाया जाता है, जिनके पूरा हो जानेपर भोजनागा बिजलीहीसे घुमाया जाता है। उसपरसे दो-तीन आदमी उतार-उता मेजोंपर रखते जाते है। भोजन समाप्त होनेपर फिर उसी भाँति तख्तोंपर थालियाँ और दूसरे बर्तन रखकर, धोनेके कमरेमें पहुँचाये है, जहाँ गर्म जल और शोधक पदार्थ-द्वारा मशीनहीसे उनको

जाता है। बचा हुआ जूठा भोजन मोटरपर लादकर बाहर एक जगह गा
दिया जाता है, जिसकी खाद बनती है। किन्तु बहुधा लोग उतना ही ले
हैं, जिसमें अधिक जूठा न छूटने पाये।

घंटी बजनेसे पूर्वही, हमलोग अपने आसनपर बैठ गये थे। पीछे प्रेम-पूर्व
खूब भोजन हुआ। मुँह-हाथ धोकर जब हमलोग चिकित्सालयकी ओर च
तो हमारे साथ देवमित्र भी थे। अब हम लोग चिकित्सालयमें पहुँचे। साथि
मनोरमा तथा उनके अन्य सहायकोंने द्वारहीपर हमारा स्वागत किया
एक सहायक चिकित्सकको छोड़कर चिकित्सालयके सभी कार्य-कर
महिलायें ही थीं। सहायक चिकित्सक कोई दूसरे नहीं, मनोरमाके प
श्री रहीमबख्श थे। दोनों ही दम्पतिने तक्षशिलामें चिकित्साका पूरा अध्यय
किया था। जन्म आप लोगोंका काश्मीरका है। मैंने समझा था, पाँच हजा
की जब आबादी है, तो रोगी भी उसीके अनुसार होंगे, किन्तु यहाँ किन्तु
५० रोगी दिखाई पड़े। मालूम हुआ कि अधिक-से-अधिक एक बार
तक बीमारोंकी संख्या पहुँची थी। कोढ़, बवासीर, उपदंश, राजयक्ष्म
मृगी, दमा आदि रोगोंका जब संसारसे ही नाम उठ गया, तो यहाँ कहाँ
मिलें? मामूली ज्वर, सिर-दर्द, अजीर्ण, कोई चोट-फाट, यही साधारण
तथा रोग होते हैं। मनोरमाने कहा—अब चिकित्साशास्त्रकी बहुत-
पढ़ाई सिर्फ पढ़नेहीके लिए होती है, औषध-चिकित्साका तो यह हाल है
शल्य-चिकित्साकी और भी कम आवश्यकता पड़ती है, आजसे दो शत
दियों-पूर्वके चिकित्सकोंको ही इसका बहुत प्रयोग करनेका अवसर मिल
था, तरह-तरहकी नई बीमारियाँ, राजरोग, युद्ध आदि कितने कारण।

...उसके पास रोगियोंकी भीड़ लगाये रहते थे। मैं इसके लिए ...
...हीं करता। यदि कभी ऐसा दिन आये, कि कोई रोग ही न हो
...ा अच्छा होगा। शायद चिकित्सालयका प्रचार भी लुप्त हो
...तो भी कोई चिन्ताकी बात नहीं, किन्तु हाँ, यदि एक ओर रोगियोंकी
...का काम कम पड़ा है, तो दूसरी ओर स्वास्थ्य-विषयक अनेक
...नाओंके प्रचारके लिए पूरा समय मिला है, भोजन-आच्छादन, रहन-
...हन, सबमें स्वास्थ्यवर्धक और पोषक गुणोंका अधिक समावेश होनेका
...न करना अब चिकित्सकका बड़ा आवश्यक कर्तव्य हो गया है।

रहीम और मनोरमाने चिकित्सालयके सभी स्थानोंको भली प्रकार
दिखाया। रोगियोंके रहने, खाने-पीनेके प्रबन्धके विषयमें क्या कहना है?
चारों ओर स्वच्छता-ही-स्वच्छताका साम्राज्य था। रोगी-शुश्रूषक महिलाएँ
रोगकी आधी पीड़ाको तो अपने सहानुभूतिपूर्ण मधुर-वचन और सरल
बर्तावसे दूर कर देती हैं। औषधोंका कोष बहुत भारी है। उपयोगी हथि-
यार और यंत्र भी पर्याप्त रखे हुए हैं। चिकित्सालयकी पाकशाला आदि
सभीका निरीक्षण करके अब हम लोग वहाँसे विश्राम-स्थानको लौटे।
मैंने विचार किया, कल और आजकी बहुत बातें मुझे रोजनामचेमें भी
लिखनी हैं। अभी एक बजा है तब तक यह काम करूँगा। शामको आने-
के लिए कहकर इस्माइल और प्रियम्वदा तो चली गईं, किन्तु देव विश्राम-
स्थानपर पहुँचाकर लौटे। मैंने विश्वामित्रसे रोजनामचा लिखनेकी बा...
कही। वह भी अपने कमरेमें चले गये। मैं अकेला कलम निकालकर लिख...
बैठा। लिखने-योग्य बातोंका तो ठिकाना नहीं था, किन्तु मेरे पास स...

और स्थानका सकोच था। मैंने, जहाँ तक हो सका, मुख्य-मुख्य अशोंक
सक्षेपमें लिखना निश्चित किया। कोई प्रधान बात कहीं छूट न जाय,
लिए मैंने निश्चित किया कि दिन भरके लेखनीय विषयको रात्रिमें स
पहले अवश्य लिख डालना चाहिये।

–

और स्थानका सकोच था। मैंने, जहाँ तक हो सका, मुख्य-मुख्य अंशोको
सक्षेपमें लिखना निश्चित किया। कोई प्रधान बात कहीं छूट न जाय, इ
लिए मैंने निश्चित किया कि दिन भरके लेखनीय विषयको रात्रिमें सोने
पहले अवश्य लिख डालना चाहिये।

७

शिशु-संसार

दूसरे दिन हम शिशु-उद्यानकी ओर चले। पहले फाटक मिला। उद्यानको आप यह न समझें कि कोई चार-दीवारी या लोहेके सीकचोंसे घिरा बगीचा होगा। इसकी वहाँ कुछ आवश्यकता ही नहीं है। न पशु हैं, जो भीतर घुसकर नुकसान करेंगे और न कोई चीज चुरानेवाला। द्वार बळा सुन्दर और विशाल है; इसके ऊपर दो-महला मकान है। भीतर जाते ही साथिन फातिमा—जो हमारी प्रतीक्षा कर रही थी—मिली। यद्यपि आपकी अवस्था अस्सी वर्षकी है, तब भी अपने कामको जवानोंकी भाँति करती है। आप २० वर्षसे विधवा है। शिक्षा समाप्तकर ब्याह करनेके बाद आपके पति श्रीहृषीकेश द्विवेदी यहाँ ही आकर बसे। दोनो ही दम्पति

तक्षशिलाके विद्यार्थी थे। पतिने चिकित्साका काम अपने ऊपर लिया था, और फातिमा दस वर्ष तक चिकित्सालयमें ही रोगि-परिचर्याका कर्तव्य-पालन करती थीं। आपका बालकोंमें अगाध प्रेम था, इसीलिए पीछे आप शिशु-उद्यानमें चली आईं। तबसे आप इन स्वर्गीय पुष्पोंकी सुगन्धका आनन्द लूट रही है। नामसे आप यह न समझ जायँ कि फातिमा मुसलमान है। मैं लिख ही चुका हूँ कि धर्म अब उठ गया है।

अब हम लोग आगे बढे। उद्यान बहुत ही विस्तृत और दूर तक फैला हुआ था। फूलोंमें शायद ही ऐसा कोई छूटा हो जो वहाँ न हो। बेला, चमेली, नाना भाँतिके गुलाब, चम्पा, जूही, मोगरा, कुन्द और गेंदा सभी थे। उनमेंसे बहुत-से फूल हँस रहे थे, और बहुत-से चुप-चाप हरी पोशाक पहने केवल तमाशा देख रहे थे। बीच-बीचमें कितने ही अनार, नारंगी, सेब, आम, जामन, लीची, कटहल, बैर और अमरूद आदिके पेळ भी थे। टट्टियोंपर अंगूरकी लता भी फैली हुई थी। यही बीचमें एक बहुत भारी पीपलका वृक्ष है, जिसके नीचे लळके गर्मियोमें खेलते है। यद्यपि धूप निकल आई थी, किन्तु अभी घासोंपर ओस पळी हुई थी, इसलिए लळके उस बळे पक्के चबूतरेपर थे, जोकि उनके शयनागारके सामने था। धूप वहाँ पहुँच चुकी थी। उनकी सुश्रूषा करनेवाली महिलायें, यही बतला रही थी कि आज एक बहुत बृद्ध महात्मा आनेवाले है। कोई-कोई बळा बालक—किन्तु तीन वर्षसे अधिकका नहीं, क्योकि तीन वर्षके बाद तो वे विद्यालयमें भेज दिये जाते है—पूछ उठता था—अम्मा! क्या वह महात्मा हमारी बळी अम्मासे भी बूढे है! तब वह बतलाती—मेरे कलेजे! तुम्हारी

दूसरी आफत आई। रोहिणी ढाई वर्षकी लड़की थी, जैनबने उसे गोदमें ले मुँह चूमकर कहा—मेरी बिटिया! लड़कियाँ ऐसे नहीं बोला करती। कह, 'मैं भी सुनाऊँगी'।

रोहिणीने कहा—हूँ! ध्रुव भैया यही तो कहता था, तब जानकी अम्माने टोका।

जैनब—तू बेटी है न?

रोहिणी—हाँ! तेरी बेटी हूँ, जानकी अम्माकी बेटी हूँ, बड़ी अम्माकी बेटी हूँ कि! कमाल भैयाकी तो बहिन हूँ। दाफी भैया भी, देख, रोहिणी बहिन—रोहिणी बहिन कहता है। ध्रुव भैया भी बहिन कहता है। तो खाली बेटी कैसे हूँ, बेटी भी हूँ, बहिन भी हूँ।

जैनब—अच्छा बूढ़ी दाई! तुम बेटी भी हो, बहिन भी हो, लेकिन बेटा और भैया तो नहीं न हो?

रोहिणी—हाँ! नहीं हूँ।

जैनब—अच्छा! तो बेटा, भैया, 'सुनाऊँगा' कहे तो ठीक, और बेटी, बहिन 'सुनाऊँगी' कहे तो ठीक। इतना ही नहीं, बूढ़े बाबा, पिता, चाचा सुनाऊँगा कहे तो ठीक और बूढ़ी अम्मा, छोटी अम्मा, बड़ी अम्मा सब सुनाऊँगी कहे तो ठीक।

इतनेमें हमलोग पहुँच गये और बात यहीं समाप्त हो गई। सब माताओंने अभिवादनके लिए पहले हाथ उठाया, जिसे देख बच्चोंने भी वैसा ही किया और छोटी गाड़ियोंमें रखे अत्यन्त छोटे बच्चोंको छोड़कर हाथ सबने उठाये।

मुझे वे बच्चे गदगुदे लिये हुए स्वर्गीय पुतले-से जान पड़े; उनके लाल-लाल होंठ और गुलाबी गालोंपर अस्फुट हँसीकी रेखा थी। सबके शरीरपर एक प्रकारके गुलाबी रंगके पजामेनुमा कपड़े थे। सबके पैरोंमें छोटे-छोटे मोजे और छोटे-छोटे सुन्दर जूते थे। सिर मुलायम टोपीसे ढँका था। स्नानसे समाप्त होनेके बाद ही मैंने देखा, बालक-बालिकायें सभी—जिनकी वहाँ पहिचान होनी कठिन थी—अपने छोटे-छोटे तीन तारवाले खिलौने-सितारको ले लेकर बैठ गये। कोई सितारको उल्टा पहिनता और यह अँगुलीसे नहीं जाती, तो पासके बड़े लड़केसे कहता—'मोहन भैया! जल्दी इसे अँगुलीमें लगा दे तो।'

मुर्तुजाने एक बार कानके पास ले जाकर, तारको मारा तो 'दिम' आवाज आई, बस क्या था। उसने समझा, मैं ही बाजी मार ले जाऊँ तुरत प्रसन्नतासे फूला हुआ प्रियम्वदाके पास दौड़ा आया, हाथ पक थोड़ी दूर ले जाकर बोला—

अम्मा! जरा गोदी तो ले। जब गोदी चढ़ गया, तो अपने कानके पास ले जाकर एक बार तारपर मारा, किन्तु अबकी तार दबा था, अतः आवाज नहीं हुई। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ क्या, उस हीपर पानी फिर गया? तो भी कहा, माँ! अभी नहीं न सुना; सुनाता हूँ न। प्रियम्वदा तो अभिप्रायको जान गई थी। उसने अँगुली जरा खिसका दी। मुर्तुजाने अबकी मारा, तो 'दिम'-से खुश होकर बोला—देख! मैं अच्छा बजाता हूँ न? प्रियम्वदाने कहा—हाँ बेटा! तू बड़ा अच्छा बजाता है। आज पितामहको सुना तो। इसपर

मुर्नुजाने पूछा—अम्मा ! पितामह कौन है ? इसपर प्रियम्वदाने बताया—वही बूढ़े-बूढ़े सफेद दाढ़ीवाले। अब मुर्नुजाने एक बात चालाकीकी कही—'माँ ! अब चुपसे बैठ जाता हूँ, नहीं तो विजय भैया कहेगा—अम्मासे सीख आया है।' यह कह मुर्नुजा जाकर एक जगह बैठकर, खूब आलाप लेने-जैसी शकल करके कुछ गुनगुनाते सितार छेड़ने लगा। देखा-देखी और कई बच्चोंने भी ऐसा ही करना आरम्भ किया।

मैं गाळियोंपर बैठे बच्चोंकी ओर देखने लगा। कोई पासमें खड़ी माताकी अँगुली पी रहा है, कोई 'आगू'-'आगू' कर रहा है। कोई हँसकर अपनी नई सम्पत्ति दोनों अगली दँतुलियोंको दिखा रहा है। सभी बच्चे हृष्ट-पुष्ट और, स्वस्थ थे। कोई दुबला, कुरूप और रोदू न था। मैं एक छ-सात मासके बच्चेके पास गया, तो मेरे हाथ बढ़ाते ही वह हाथ बढ़ाकर मानो मेरी ओर आनेकी इच्छा प्रकट करने लगा। फिर क्या था, उसको मेरी गोदमें देख बहुत-से बारी-बारीसे गोदमें चढ़े। सभी लड़कोंकी सख्या डेढ़सौकी थी। देर होते देख मुर्तुजाने अब की प्रियम्वदाके पास जाकर कहा, माँ ! अब सुनाऊँ न—अब क्या देरी है ? इसपर प्रियम्वदाने कहा—हाँ ! रह जा ; अभी बुलाकर पितामहको बैठाती हूँ, तब सुनाना। सबको देखनेके बाद फातिमा ने बैठनेके लिए कहा। लड़कोंहीमें हमारे बैठनेके लिए फर्शपर थोड़ी जगह मिली। हमारे बैठते ही, सब बालक और करीब-करीब हो गये। शिशु-उद्यानमें सब मिलकर तीस मातायें हैं। सभी अपनी-अपनी गोदमें तथा आस-पास बच्चोंको लिये बैठ गई। डेढ़ वर्षके ऊपरवाले लड़कोंने हाथ

में सितार लिया था, और छोटोमेंसे किसीने बिल्ली, किसीने कुत्ता, किसीने खरगोश, किसीने सीटी, किसीने गुळिया, किसीने लकळीके अक्षरोके कटे अश, किसीने कोई खिलौना, किसीने कोई खिलौना। अब बळी अम्मा बोली—

बच्चे साथियो! हमारे सबके पितामह यहाँ अपने बच्चोको देखने आये है। अब उन्हे सब लोग अपना-अपना गुण दिखाओ। पितामह बाबा बहुत दिनपर आये हैं। पहले जानकी अम्मा भजन सुनावेगी, तब जैनब अम्मा सुनावेगी, तब देखो कौन सुनावेगा? विजय झट-से बोल उठा—मै। मुर्तुजा पहलेसे सँपर रहा था, किन्तु धोखेसे पहले न बोल सका, तो भी जल्दी-जल्दी उसने कह डाला 'मैं'। जानकीने हाथमें वीणा ले गीत गाया।

गानेका कहना ही क्या था? यद्यपि भाषा बालकोकी थी, भाव भी बालकोका था, किन्तु स्वर, लय, तान सबसे निराला था। बीच-बीचमें मैं देखता था, कई एक बच्चे बळे ध्यानसे सितारको हाथसे छेळते कुछ गुन-गुनाते हुए तन्मय थे। अब जैनबने वीणाको हाथमें लिया। विजय—उसका शागिर्द—पास बैठा था। ऐसे भी वह सावधान ही बैठा था, किन्तु अब विशेष तौरसे एक बार मळा हो आलथी-पालथी मार, ठीक जैनबकी तरह उसकी दाहिनी ओर बैठ गया। जैनबने मीठे स्वरमें एक गीत सुनाया।

गीत समाप्त होते ही ज्योंही जैनबने वीणा अलग रखी, विजय गोदमें जा बैठा और धीरे-से कानमें बोला—माँ, वही उस दिनवाला गीत न सुनाऊं? जैनबने कहा—कौन सा? इसपर विजयने कुछ फुसफुसाया। जैनबने कहा—हाँ बेटा, हाँ वही। अब विजय धीरे-से मेरे पास आया, और

बोला—पितामह ! अब एक गीत मैं सुनाऊँगा । मुर्तुजाने कहा—नहीं पितामह ! पहले मैं सुनाऊँगा, तब विजय भैया सुनावेगा। विजयने कहा, नहीं पहले मैंने कहा था, पहले मैं सुनाऊँगा। मुर्तुजाने फिर अपना पहला आग्रह दुहराया। अब बळी अम्माने झगळेका जल्दी निपटारा होते न देख, कहा—अच्छा, दोनों भाई मेरे पास आओ। दोनों दौळकर फातिमाकी गोदमें चले गये। तब फातिमाने विजयसे पूछा—उस दिन, विजय, जब तुम और शफी मेरे पास थे, मैं सेबका टुकळा तुझे जब देने लगी, तो तुमने क्यों लेनेसे इन्कार किया ? विजयको अम्माके हाथके फलसे इन्कारका शब्द बळा मालूम हुआ। झट गलेसे लिपटकर कहने लगा—अम्मा ! तू तो यों ही कहती है, इन्कार थोळे ही किया ? यह तो कहा था कि पहले शफीको दे, तो फिर मुझे दे। फातिमाने पूछा—अच्छा, ऐसा ही क्यों कहा ?

विजयने कहा—तैने ही नहीं बताया था, कि पहले छोटे भाईको देकर तब अपने खाओ। शफी छोटा भैया है, मैं बळा भैया हूँ, तो पहले कैसे खा जाता ? प्रह्लाद भैया, इब्राहीम भैया, जसरोद भैया जब विद्यालय नहीं गये थे, तब मेरे या श्याम भैयाके बिना खाये कहाँ खाते थे ?

फातिमाने कहा—हाँ ! मेरे लाल ! ठीक तो कहता है। अच्छा तो मुर्तुजा छोटा भैया है, या बळा भैया ?

विजय—छोटा भैया।

फातिमा—तो फिर उसकी बात पहले हो कि तुम्हारी ? विजयको अपनी गलती समझमें आ गई। उसने हँसते हुए कहा, हाँ ! मुर्तुजा पहले तू

गा, तब मैं गाऊँगा। बळे भैया छोटे भैयाकी बात होने देंग, अब मुर्तुजाके मनने भी पलटा खाया। उसने कहा—विजय भैया बळा भैया है, पहले वह गा लेगा, तब मैं गाऊँगा। विजयने कहा—मुर्तुजा छोटा भैया है, पहले वह गायेगा, तब मैं गाऊँगा। अब एक दूसरा अळंगा खळा देख, बळी अम्माने कहा—मुर्तुजा! बळे भैयाकी बात छोटे भैयाको माननी चाहिए न?

मुर्तुजा—हाँ, अम्मा! माननी चाहिए।

फातिमा—तब जैसा विजय भैया कहता है, वैसा करो। अब मुर्तुजा दौळकर प्रियम्वदाके पास गया। और बोला—अम्मा! मेरे तारोंको ठीक तो कर दे। प्रियम्वदाने लेकर जरा तारको इधर-उधर खींच दिया। अब मुर्तुजा दाहिने पैरसे पालथी मार और बायेंके सहारे सितारको हाथमें पकळे, ऐसे बन बैठा, मानो तानसेन ही उतर आया हो। थोळी देर खींचने-खाँचनेके बाद बोला—अभी गीत मैंने नहीं सीखा है, खाली बाजा सुनाऊँगा। मैंने और विश्वामित्रने कहा—हाँ! बाजा ही सुनाइये। अब मुर्तुजा एक बार अँगुली तारपर मारी, किन्तु वह तारतक न पहुँचकर पहले रुक गई। बगलवाले लळके हँसना ही चाहते थे कि उसने फिर एक खूब साधकर अँगुली मारी और अब 'दिम'-सी आवाज आई। प्रियम्वदा फातिमा, मैंने और सभीने इसपर शाबाशी दी। मुर्तुजा बहुत प्रसन्न और बोला—अच्छा, अब विजय भैयाका गीत हो। विजय, जो अब बळी अम्माके पास बैठा था, उठकर जैनबके पास जाकर बोला—माँ! तू जरा बजा, तो मैं गाऊँ। विजयने एक-दो गीत खूब मिहनतसे याद किये थे। वह बहुधा जैनबकी गोदमें बैठकर उसके सितार बजानेपर गाया करता

था। इसीलिए अबकी फिर उसने बजानेको कहा। जैनबके दानादिर करते ही विजयने अपना गाना आरम्भ किया.

शिशुके मधुर स्वर और अकृत्रिम कठसे निकले सरल गानने प्राणोको प्रफुल्लित कर दिया। बारी-बारीसे दो-चार और गवैयोने अपने करतब दिखलाये। इसके बाद अक्षरके खिलाड़ियोका नम्बर आया। मरियम और रुक्मिणी सबसे पहले आई। प्रियम्वदाने लकड़ीके अक्षरोंके बक्सको हाथमें लेकर उसमेंसे एक नीचे रखकर कहा—बूझो यह क्या है। रुक्मिणीके अभाग्यसे उसकी ओर अक्षरकी ऊपरी लकीर पड़ी थी, जिससे जब तक वह विचार करे तब तक मरियमने बोल दिया—'क'। अब क्या, मरियमके आनन्दकी कोई सीमा न थी। प्रियम्वदाने कहा—बेटी रुक्मिणी, कोई परवाह नहीं, आओ तुम दोनो एक सीधमें पाँतीसे खड़ी होकर अबकी बूझो। अबकी प्रियम्वदाने फिर एक अक्षर फेंका। गिरतेके साथ दोनोने एक साथ 'र' कहा। बड़ी अम्माने दोनोको गले लगाया। अब बड़ी अम्मा सबके कुत्ते, बिल्ली, बतख, गुड़िया आदि सभी खिलौनोको लेकर पांतीसे रखकर कहने लगी—प्रियव्रत! खरगोश ले आओ तो। प्रियव्रतने झट खरगोश उठाकर हाथमें दे दिया। ऐसे ही वह एक-एक जानवरका नाम लेती जाती थी, और बच्चे ला-लाकर देते जाते थे।

इसके बाद सारा समाज वहाँसे उठ खड़ा हुआ। अत्यन्त छोटे बच्चे भी इस तमाशेमें शामिल थे। मातायें गोदमें उन्हे लिये थीं। फूलोंके पास जाकर इसकी परीक्षा ली गई कि कौन कितने फल-फूलोका नाम जानता तथा पहिचानता है। वहाँ मौलसरीकी डालियोंमें बहुत-से पालने लटक

रहे थे, जिनके बारेमें बताया गया कि छोटे-छोटे बच्चे इन्हींपर सोते और झूलते रहते हैं। पालनोंके गद्दे बहुत ही मुलायम थे। एक वल सब झूलनोंको धीरे-धीरे झुलाती रहती थी। हमलोग यह देख ही रहे थे कि इसी समय नौ का घंटा बजा। आज हरी घासपर भोजनका प्रबन्ध था। इसी समय बाहरसे और भी बहुत-सी स्त्रियाँ आती दीख पड़ीं। ये लड़कोंकी जननियाँ थीं। वस्तुत यहाँ 'माता' शब्दसे उन सभी महिलाओंका ग्रहण किया जाता है, जो बालककी रक्षा, शिक्षा-दीक्षाका प्रबन्ध करती हैं। सब प्रकारकी अनुकूलता देख, छोटे-छोटे बच्चोंको भी जननियाँ, प्राय. शिशु-उद्यानहीमें रख आती हैं। रात्रिमें वर्ष दिन तकके बच्चोंको जननी अपने पास रखती हैं। दिनमे नव-जात शिशुओंवाली मातायें यदि काम करती हैं, तो ग्रामहीमें, सो भी दो घंटे; बाकी समय शिशु-उद्यानहीमें बालकोंका मन-बहलाव करती हैं। शिशु-उद्यान ग्रामवासियोंका क्रीळोद्यान है, जहाँकि पुष्पों और मनोरजनकी और सामग्रियोंमें कोमल शिशु भी शामिल हैं। उनके मधुर-आलापके सुनने, उनके मनोमोहक खेलोंको देखनेकी इच्छासे कितनेही नर-नारी अपने अवकाशके समयको वहाँ व्यतीत करते हैं।

आजके राष्ट्रका ध्येय तो यद्यपि मनुष्य-मात्रके जीवनको आनन्दमय बनाना है, और ऐसा करनेमें उसे अच्छी सफलता भी हुई है, किन्तु बालकोंके लिए प्रस्तुत की गई सुखकी सामग्रियाँ तो पुराने सम्राटोंके राजकुमारोंको भी शायद नसीब न थीं। साधारणतया बालकोंको थोळा-थोळा दिन-रातमें तीन-तीन घंटेपर सात बार जलपान और भोजन कराया जाता है। पहला कलेवा उनका ६ बजे होता है, जबकि दूधके साथ ऋतुके उपयोगी

कुछ मिष्टान्न दिये जाते हैं। इस वक्त नौ बजेके लिए खीर, कुछ फल, ऐसे ही पदार्थ थे। बारह बजे, भात-दाल, रोटी-तरकारी—जिसे पहले कच्ची रसोई कहा जाता था—का प्रबन्ध रहता है। ३ बजे फिर फल, दूध। ६ बजे भी कुछ फल। ९ बजे घीकी पकी नमकीन और मीठी चीजोंके साथ कुछ दूध भी और बारह बजे रातको फिर दूध और कुछ फल। भोजनका सिल-सिला तीन-तीन घंटेपर बराबर रहता है। परन्तु तीन समय—प्रातः, मध्याह्न और रात्रिके नौ बजे—छोड़कर, पेट-भर नहीं खिलाया जाता। खाना हजम होनेके लिए लड़के दौड़-धूप किया करते हैं। आँख-मिचौनी आदि पुराने खेल-कूद भी खेले जाते हैं। छोटे-छोटे फुट-बालोंको लेकर लड़के खूब खेलते हैं। हरी-हरी दूबपर इन छोटे-छोटे जवानोंकी कबड्डी भी बड़ी भली मालूम होती है। बागमें एक अखाड़ा भी इनके लोट-पोट और पहलवानीके लिए है। सारांश यह कि भोजन, वस्त्र, शिक्षा और शारी-रिक सुधार सभीपर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है। हाँ! जो माताये मैंने आते देखी थी, उन्होंने अपने नवजात शिशुओंको दूध पिलाना शुरू किया, और कितनी ही लड़कोंके पासमें खिलाने बैठ गईं। खाना खा सकनेवाले लड़कोंकी मातायें अपने-परायें सभी बच्चोंको साथमें लेकर समान भावसे खिलाने लगती हैं। वास्तवमें इस समयके नर-नारियोंके हृदयसे संकीर्णता निकल गई है। उनके हृदय विशाल हैं।

जन्म देनेवाली माताओंहीके लिए नहीं, उन माताओंके लिए भी जो कि उद्यानमें बालकोंकी रात-दिन सेवा-शुश्रूषा करती हैं, यह बहुत भारी मानसिक क्लेशकी बात है, कि तीन वर्ष बाद लड़के दूर-दूरके

बड़े-बड़े विद्यालयोंमें भेज दिये जाते हैं। किन्तु राष्ट्रके कल्याणके लिए, और उन अपने बालकोंके हितके लिए वे सब सहन करती हैं।

भोजनके समाप्त होनेपर अब हमलोग कोटेश्वरके वस्तु-संग्रहालय की ओर चले। कुछ बालक तो स्वय छोटी-छोटी सीढ़ियों-द्वारा चढ़ आये और कुछको माताओंने ऊपर पहुँचाया। विजय सभी बालकोंमें होशि-यार था। उसका शरीर भी हृष्ट पुष्ट था। वह जैनबकी अंगुली पकड़े हमारे साथ-साथ था।

संग्रहालयमें घुसते ही देखा, नीचे तरह-तरहके जीव-जन्तु, अस्त्र आदि वस्तुएँ रखी गयी हैं। धनुष, बाण, फरसा, गंड़ासा, लाठी, बदूक तमचा, भाला, कवच और खोद दीवारोंमें टँगे हैं। छोटी-छोटी तोपें भी रखी हैं। दीवारोंके ऊपर मनुष्य-जातिके बड़े-बड़े नेताओंकी जीवन-घटनाओं-सम्बन्धी बड़े-बड़े चित्र हैं। कहीं महात्मा सुकरात प्रसन्नता-पूर्वक विषके प्यालेका पान कर रहे हैं। कहीं बुद्ध रक्तके प्यासे 'अंगुलि माल' के प्रहारका कुछ भी ख्याल न करके प्रसन्न-वदन खड़े हैं। कहीं गाधी सड़कपर कंकड़ कूट रहे हैं। कहीं इब्राहम लिंकन विपत्तियोंकी धमकीका कुछ भी ख्याल न करके मनुष्योंकी दासता हटानेके लिए बलिदान हो रहे हैं। कहीं जोन स्वतंत्रताके लिए निछावर हो रही है। कहीं अशोक युद्धके बाद साम्राज्यसे विरक्त हो रहे हैं। इसी तरह अनेक प्रकारके चित्र हैं।

मुझसे यह भी कहा गया कि बालकोंको बोलते फिल्मों-द्वारा भी बहुत-से ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक बातोंका ज्ञान कराया जाता है। ग्रहोंका भ्रमण, रात-दिनका होना, चन्द्रमाका घटना-बढ़ना भी उसीके द्वारा

दिखाया जाता है। बालकोको ये सारी शिक्षायें मनोरंजन और खेलके रूपमें ही मिल जाती है। दूसरोका काम जिज्ञासा उत्पन्न करनेकी सामग्री एकत्रित कर देना है। जब जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है, तो बालक अपनी जिज्ञासा-पूर्तिके लिए सब कुछ सहन करनेको तैयार हो जाता है। तब हर एक बात उसे जल्दी स्मरण तथा हृदयगम भी होती जाती है। उस समय ज्ञानको घोलकर पिलाने या ठूँसनेकी आवश्यकता नही होती। मैंने वस्तुओको देखते समय बीच-बीचमें कभी-कभी किसी लळकेसे किसी वस्तुका नाम पूछा, या नाम बोलकर वस्तु दिखानेको कहा, तो बालक बळी प्रसन्नता-पूर्वक सन्तोष-जनक उत्तर देते थे। फातिमाने बताया—लळके स्वय अँगुली पकळकर माताओको खीच लाते है। कभी किसी वस्तुका नाम पूछते हैं, कभी किसी चित्रको देखकर चित्रित घटनाकी कथा सुनने बैठ जाते है। कहनेवालेसे अधिक उनको उन्हे देखने-सुननेमें आनन्द होता है। इसी समय यदि कभी भोजनका समय आ जाता है, तो बळी अरुचि-पूर्वक वहाँसे भोजन करने उठते हैं। यद्यपि तीन वर्ष तक उनको कोई पुस्तक पढ़नेको नही दी जाती, न लिखाया ही जाता है, किन्तु ज्ञानके साथ-साथ, उन्हे बहुत-सी सख्या तथा अक्षरो और अकोका बोध स्वय ही खेलते-खेलते हो जाता है। ध्रुव, सप्तर्षि आदि कई तारोको वह पहिचानने लगते है। वस्तुओंकी सज्ञाका बोध उनका बळा हो जाता है। माता, पिता, अभिभावक, और आस-पासके वायुमडलको भी शुद्ध भाषाका प्रयोग करते देख उनकी भाषा बहुत शुद्ध होती है।

जब वहाँसे देखकर हमलोग उतरे, तो बालकोके शयनागारकी

तो आध घटेका रास्ता है।"

"इतनी जल्दी चलना भी अभीष्ट नहीं है। रेलसे चलो, तिसमें भी जो ट्रेन सब स्थानोंपर खळी होती जाय, उससे। और जाना भी उस लाइनसे चाहिये, जिसके द्वारा मैं आया गया हूँ, क्योंकि मैं रास्तेके आस-पासकी बस्तियोंके परिवर्तन आदिको देख सकूँगा। अब इधर जल्दी तो आना नहीं है, इसलिए मेरी सलाह है कि यहाँसे रक्सौल, सुगौली, मोतीहारी, मुजफ्फरपुर, पटना और बख्तियारपुर होते नालन्दा चले, किन्तु रास्तेमें कहीं विश्राम नहीं लेना है—केवल जहाँ गाळी बदले, वहाँ बदलने भरको उतरना है।"

"गाळी भी पटना ही बदलेगी। बख्तियारपुर जानेका काम नहीं, पटनासे सीधी नालन्दाको लाइन गई है। रेलवे लाइनोंमें भी बळा परिवर्तन हुआ है। अब भारतमें क्या, पृथ्वी-भरकी लाइनें एकसी ही चौळी है। वह चौळाई आपके समयके ई० आई० रेलवेसे कुछ कमकी है। इसलिए अब बी० एन्० डब्ल्यू० रेलवेकी छोटी लाइन, और बख्तियारपुर-बिहार वाला 'रेलवा बच्चा' नहीं मिलेगा।"

"विश्वामित्र! 'रेलवा बच्चा' तुमने कैसे जाना?"

"किताबोंमें देखनेसे।"

"किन्तु, इसके सम्बन्धकी कथा तुमको न मालूम होगी, सुनो। तुम तो इतिहासके पंडित ही हो। उस समयके लोगोंमें मूर्खता बहुत थी। कितने गाँवोंमें कोई चिट्ठी आनेपर दूसरे गाँवमें बँचवानेको जाना पळता था। जब मर्द ही अक्षर-शून्य थे, तो स्त्रियोंके लिए क्या पूछना? कोई देहाती

६

आदमी बलियारपुरकी उस समयकी बड़ी लाइनकी गाड़ीपर सवार था। उसने स्टेशनकी दूसरी ओर छोटे-छोटे रेलके डब्बे देखे, जो उसकी गाड़ीके सम्मुख वैसे ही थे, जैसे बापके सामने उसका छोटा बच्चा। उसने ऐसी छोटी रेलगाड़ी अब तक न देखी थी। अपने पासके किसी आदमीसे पूछा, जो स्वयं भी निरक्षर—किन्तु, तर्क-कुशल—था, कि यह क्या है। उसने कहा—'रेलका बच्चा'। पहलेने पूछा—क्या रेल भी बच्चा देती है? उसने कहा—देख ही रहे हो, हाथीका बच्चा हाथी नहीं देता है? उसने कहा—हाँ, सच कहते हो, बिलकुल शकल-सूरत भी मिलती है, खाली छुटाई-बड़ाई हीका तो फर्क है। अच्छा, तो बेचारा 'रेलका बच्चा' भी गया, उसके बोलनेवाले भी। पटना तक जब गाड़ी नहीं बदलेगी तब तो गंगामें पुल बँध गया होगा।"

"१९५० हीमें।"

"अच्छा तो कल किस समय चलना चाहिये?"

"कल साथी इस्माइलसे बात हुई थी। कहते थे कि मोहनपुर स्टेशनप चढ़ना है। वहाँवाले भी बहुत उत्सुक हैं। उनका आग्रह तो एक रात आतिथ्य करनेका था, किन्तु आपकी दूसरी इच्छा देखकर उसमें बाधा नहीं डालना चाहते। कल जलपानके बाद यहाँवालोंकी अन्तिम फूल-माला लेकर आठ ` चलना चाहिये। साढ़े आठ बजे वहाँ पहुँच जायेंगे। ग्यारह बजे मध्याह्न-करके वहाँसे बारह बजे रेलपर सवार होना चाहिये।"

ीक है, यही प्रबन्ध करो।"

मथने, इन बातोंको इस्माइलसे कहा। और इसकी सूचना

उसी दिन मोहनपुर, तथा बीचके स्टेशनो एव नालन्दाको भेज दी गई। रेलका समय देखकर ज्ञात हुआ कि गाळी सवारी-गाळी है, जो सब जगह ठहरती जाती है। हमलोग इस तरह चलकर परसो सबेरे साढे छ बजे नालन्दा पहुंच जायेंगे।

८

रेलकी यात्रा

आज जलपानके पहले मेरे निवास-स्थानपर प्रियम्वदा और इस्माइल के अतिरिक्त देवमित्र, आचार्य विश्वामित्र आदि अनेक व्यक्ति आ गये थे। हमलोग साथ ही भोजनागारको गये। आज सस्यागारमें गाँवकी ओरसे फूल-माला देकर मेरी विदाईका प्रबन्ध हुआ था। जलपानके बाद हमलोग सस्यागारमें पहुँचे। वहाँ सब लोगोकी ओरसे देवमित्रजीने मेरे लिए प्रेमोद्गार प्रगट किये। साथ ही मुझे अष्ट-धातुके पत्रपर स्वर्णाक्षरोंमें मुद्रित एक काव्यमय अभिनन्दन-पत्र दिया गया। कवयित्री वही प्रियम्वदा थी, यह अत्यन्त प्रसन्नताकी बात थी। मैंने उत्तरमें ग्रामवासियोंके अकृत्रिम प्रेमके प्रति अपनी कृतज्ञता तथा सन्तोष प्रकट किया।

अब सबके अभिवादन और प्रेममयी दृष्टिसे आप्लावित हो, सेवग्राममें

से और निरीक्षित किया हुआ। [illegible] हमारी मोटरकार [illegible], तथा टेलीफोन भी गये। हमारे आनेकी सूचना फोन-द्वारा मोहनपुर पहुँच गई थी।

गाँवके बाहर ग्रामकी सभा तथा अन्य सभ्य स्त्री-पुरुषोंने पहले हमारा स्वागत किया, और कहा, सब ग्रामवासी संस्थागारमें प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसलिए मोटरसे बिना उतरे, सीधे संस्थागारमें पहुँचे। मकानोंकी सूरत और ढंग बिल्कुल शेवग्राम ही सा था, बल्कि देखनेवालोंको एक ही ग्रामकी भ्रान्ति हो सकती थी। विश्वामित्रने बतलाया, स्थानके संकोच जन-संख्याकी कमी-बेशीसे गाँवकी लम्बाई-चौड़ाईमें भले ही फर्क पड़ सकता है किन्तु श्रेणियाँ, सड़कें, संस्थागार आदि सबके सब एक ढंगसे सभी ग्रामोंमें एक-से होते हैं। जल-वायुकी विशेषतासे भी कुछ आवश्यक परिवर्तन देखा जाता है।

मोहनपुरके विषयमें मालूम हुआ, यहाँकी जन-संख्या शेवग्रामके ही बराबर है। यहाँ बर्फ बनानेका एक कारखाना है। और दूसरा व्यवसाय आस-पासके १४-१५ फलवाले गाँवोंके फलोंको भिन्न-भिन्न जगहोंपर चालान करना है। इस पर्वतके फल लंका और बर्मा तक जाते हैं। इतनी दूर तक जानेमें कोई भी फर्क न पड़े, इसलिए उनके रखनेकी गाड़ियोंमें चारों ओर बर्फ रखी रहती है। फलोंको ढोनेवाली मोटरोंपर लोहेके जालीदार बड़े-बड़े फल रखनेके बर्तन रहते हैं। एक मोटरपर ऐसा एक ही बर्तन रहता है। फलोंके बोझसे नीचेवाले फलोंको बचानेके लिए बीच-बीचमें दूसरी जाली रखी रहती है। मोटर-गाड़ीके स्टेशनपर पहुँचते ही, उठानेकी कल-द्वारा

सारा बर्तन ही उठाकर रेलके डब्बेमे रख दिया जाता है। रेलका डब्बा ऐसे नापका बना होता है, कि पाँच मोटरोके माल उसमें बिल्कुल ठीक अँट जाते है। फलोकी गिनती देना बगीचोवालोका काम है। इस प्रकार कोलम्बो (लका)के लिए जानेवाला सेब एक ही गाळीमें मोहनपुरसे वहाँ पहुँच जाता है।

मोटरसे उतरकर सस्यागारके रगमचपर पहुँचनेपर, मोहनपुरके नर-नारियोने वैसा ही हार्दिक स्वागत किया, जैसे कि सेवग्रामवालोंने किया था। वहाँके ग्रामणीने भी मेरे विषयमें अपने सद्भाव ग्राम-वासियोकी ओरसे प्रकट किये। मैने भी इसके लिए कृतज्ञता प्रकट की। इसके बाद फूल-माला दी गई। पीछे सबने भोजनका समय हो जाने से, भोजनागारमें जाकर भोजन किया। सब जगह प्रेम और आनन्दका स्रोत उमळ रहा था। समय न होनेसे यहाँके और स्थानोको तो नही देख सका। संस्यागार औ- भोजनागार बिल्कुल वैसे ही थे, जैसे कि सेवग्रामके। पूछनेसे पता लगा कि शिशु-उद्यान, चिकित्सालय भी वैसे ही है। द्वार भी नदीकी ओर है और चिकित्सालयसे थोळा हटकर बर्फका कारखाना है। ये बाते स्टेशनके चलते समय मुझसे कही गई थी। मैने बार-बार उधर इस ख्यालसे दे- कि कारखानेकी चिमनी तो दिखाई देगी, किन्तु मुझे यह स्मरण नहीं तो बिजलीसे होता है, फिर चिमनीका क्या प्रयोजन— क्या काम ?

स्टेशनपर पहुँचे। पहलेसे ही मालूम हुआ था कि गाळीके ... देरी है। अतः हमलोग थोळी देर अतिथि-विश्राममें ब-

थे, क्योंकि विश्वामित्रने बतलाया था कि अब न स्टेशनोंपर पान-बीड़ी-सिगरेट और न मिठाइयोंकी दूकान, न 'कुली चाहिये—कुली चाहिये'का तूफान, न मुसाफिरखानोंकी 'भेड़िया-धसान', और न भूखे-भिखमंगोंका 'जय जजमान' है। मैंने पूछा—खैर और न सही, किन्तु मुसाफिरखानों बिना तो मुसाफिरोंको अवश्य तकलीफ होती होगी? इसपर विश्वामित्रने बताया तकलीफ काहेकी? खामखाह तो कोई उतरता नहीं। जब जहाँ जाना होता है, वहीं तो उतरता है। गट्ठर, बिस्तरेका तो कोई बखेड़ा है ही नहीं। अभीष्ट ग्राम समीप रहा, तो अतिथि-विश्राममें पैदल ही चलकर पहुँच गये। नहीं तो फोनमें दो अक्षर बोलनेपर तो मोटर आती है।

आखिर गाड़ी भी आ गई। आज पूरी दो शताब्दियों-बाद रेलकी सूरत देखी। लाइन तो बड़ी लाइनसी थी, डब्बे भी बहुत अच्छे, सुन्दर रँगे हुए थे। नई बात यह मालूम हुई कि इंजन चिन्हाई ही नहीं पड़ता था। न धुएँका फक-फक, न कालीमाईके रहनेका औंधा हौदा। इंजनके आगेका आकार हवाके धक्केको कम करनेके लिए नोकदार बना है, इंजनकी दूसरी पुरानी विशेषतायें नहीं है। यह सब काया-पलट बिजलीके कारण हुई है। अब कोयला-पानीसे भाफ बनानेकी तो आवश्यकता है नहीं। बिजली भीतर भरी रहती है। कुछ तो कोष बाहरसे लाकर रखा जाता है, और कुछ खुद रेलके पहियोंसे उत्पन्न बिजलीके सञ्चय करनेसे हस्तगत कर लिया जाता है। आज-कलकी दुनिया अर्थ-शास्त्रके तत्त्वोंपर बहस करनेमें, जहाँ बालकी खाल उतारती है, वहाँ श्रम एवं वस्तुको जरा भी फजूल नहीं जाने देती। मजाल क्या कि एक टुकड़ा सड़ा-गला लोहा, एक

सारा बर्तन ही उठाकर रेलके डब्बेमें रख दिया जाता है। रेलका डब्बा ऐसे नापका बना होता है, कि पाँच मोटरोंके माल उसमें बिलकुल ठीक अँट जाते हैं। फलोंकी गिनती देना बगीचोंवालोंका काम है। इस प्रकार कोलम्बो (लंका)के लिए जानेवाला सेब एक ही गाळीमें मोहनपुरसे वहाँ पहुँच जाता है।

मोटरसे उतरकर सस्यागारके रंगमंचपर पहुँचनेपर, मोहनपुरके नर-नारियोंने वैसा ही हार्दिक स्वागत किया, जैसे कि सेबग्रामवालोंने किया था। वहाँके ग्रामणीने भी मेरे विषयमें अपने सद्भाव ग्राम-वासियोंकी ओरसे प्रकट किये। मैंने भी इसके लिए कृतज्ञता प्रकट की। इसके बाद फूल-माला दी गई। पीछे सबने भोजनका समय हो जाने से, भोजनागारमें जाकर भोजन किया। सब जगह प्रेम और आनन्दका स्रोत उमळ रहा था। समय न होनेसे यहाँके और स्थानोंको तो नहीं देख सका। सस्यागार और भोजनागार बिलकुल वैसे ही थे, जैसे कि सेबग्रामके। पूछनेसे पता लगा कि शिशु-उद्यान, चिकित्सालय भी वैसे ही हैं। द्वार भी नदीकी ओर है और चिकित्सालयसे थोळा हटकर बर्फका कारखाना है। ये बातें स्टेशनको चलते समय मुझसे कही गई थीं। मैंने बार-बार उधर इस ख्यालसे देखा कि कारखानेकी चिमनी तो दिखाई देगी, किन्तु मुझे यह स्मरण नहीं था कि काम तो बिजलीसे होता है, फिर चिमनीका क्या प्रयोजन— धुआँ-धक्कळका क्या काम?

अब स्टेशनपर पहुँचे। पहलेसे ही मालूम हुआ था कि दो मिनटकी देरी है। अतः हमलोग थोळी देर ठ

थे; क्योंकि विश्वामित्रने बतलाया था कि अब न स्टेशनोंपर पान-बीड़ी-सिगरेट और न मिठाइयोंकी दूकान, न 'कुली चाहिये—कुली चाहिये'का तूफान, न मुसाफिरखानोंकी 'भेड़िया-धसान', और न भूखे-भिखमंगोंका 'जय जजमान' है। मैंने पूछा—खैर और न सही, किन्तु मुसाफिरखानों बिना तो मुसाफिरोंको अवश्य तकलीफ होती होगी? इसपर विश्वामित्रने बताया तकलीफ काहेकी? खामखाह तो कोई उतरता नहीं। जब जहाँ जाना होता है, वहीं तो उतरता है। गट्ठर, बिस्तरेका तो कोई बखेड़ा है ही नहीं। अभीष्ट ग्राम समीप रहा, तो अतिथि-विश्राममें पैदल ही चलकर पहुँच गये। नहीं तो फोनमें दो अक्षर बोलनेपर तो मोटर आती हैं।

आखिर गाड़ी भी आ गई। आज पूरी दो शताब्दियों-बाद रेलकी सूरत देखी। लाइन तो बड़ी लाइनसी थी, डब्बे भी बहुत अच्छे, सुन्दर रँगे हुए थे। नई बात यह मालूम हुई कि इंजन चिन्हाई ही नहीं पड़ता था। न धुएँका फक-फक, न कालीमाईके रहनेका औंधा हौदा। इंजनके आगेका आकार हवाके धक्केको कम करनेके लिए नोकदार बना है, इंजनकी दूसरी पुरानी विशेषतायें नहीं हैं। यह सब काया-पलट बिजलीके कारण हुई है। अब कोयला-पानीसे भाफ बनानेकी तो आवश्यकता है नहीं। बिजली भीतर भरी रहती है। कुछ तो कोष बाहरसे लाकर रखा जाता है, और कुछ खुद रेलके पहियोंसे उत्पन्न बिजलीके सञ्चय करनेसे हस्तगत कर लिया जाता है। आज-कलकी दुनिया अर्थ-शास्त्रके तत्वोंपर बहस करनेमें, जहाँ बालकी खाल उतारती है, वहाँ श्रम एवं वस्तुको जरा भी फजूल नहीं जाने देती। मजाल क्या कि एक टुकड़ा सड़ा-गला लोहा, एक

ज़रा-सा शीशेका फूटा टुकड़ा, एक मामूली चीथड़ा, एक रद्दी कागज़की चिट क्यों फेंक दी जाय। सभी चीज़ें शहरके गोदाममें जमा होती रहती हैं, पीछे यहाँसे उनके उपयोग करनेवाले कारखानोंमें भेज दी जाती हैं। हाँ, वाहनमें तो नाम-मात्र ही बिजली लेनी पड़ती है, और नदियों-द्वारा उत्पन्न बिजलीसेही गाड़ी चलाना, पंखा चलाना रोशनी करना, भोजनकी गाड़ीमें रसोई बनाना, कमरे गर्म रखना, नहानेका पानी गर्म करना इत्यादि सब काम होते हैं। स्टेशनपर भी, न टिकटोंकी हें-हें पट-पट न पुलिसकी फटकार। पुलिसके बारेमें तो इतना ही ज्ञात हुआ कि ग्राम-सभाके चुनावके साथ कुछ लोग इस कामके लिए चुन लिये जाते हैं। चोरी आदिका तो डर ही नहीं है। ऐसे तो शिक्षित-समाज अकारण मार-पीट आदिपर उतर नहीं आता, किन्तु मनुष्य-स्वभाव है—यदि कुछ हुआ, या किसी अपराधीको पकड़ना, या ले जाना हुआ, तो उस वक्त उन्हींको करना पड़ता है। वस्तुतः उन्हें पुलिस न कहना चाहिये। इनके लिए प्रयुक्त होनेवाला 'सेवक' शब्द ही ठीक है, क्योंकि वे अत्यन्त विनीत और सेवामें तत्पर होते हैं। रेलोंमें चढ़नेके लिए टिकटकी आवश्यकता न होनेसे 'टिकट बाबू' और 'टिकट-कलक्टरों'की तो आवश्यकता ही न रही। सब जगह सन्देश तारवाले टेली-फोन या बेतारवाले टेलीफोन-द्वारा भेजा जाता है। इसलिए 'ट्रंक'वाले बाबूका भी काम नहीं। समयपर लाइन साफ रखने तथा और प्रबन्ध करनेके लिए अन्य कर्मचारी होते हैं। किन्तु 'खलासी', 'पंटमैन' और स्टेशन-मास्टर सब बराबर ही हैं—बल्कि सब एक दूसरेका काम भी कर सकते हैं। कारबार के लिए यह कहनेकी तो आवश्यकता नहीं कि सब कुछ 'भारती'-भाषा हैं

में होता है। फलोंकी चालानका एक केन्द्र होनेसे, यहाँ चढ़ाई-उतराई तथा ढोनेका काम बहुत होता है।

इस मशीन-युगके यौवन-कालमें सब काम उन मशीनों ही द्वारा कराये जाते हैं, जिनकी नसोंमें विद्युत्‌का सचार है। मनुष्य तो सिर्फ हुक्म देता है। सवारी-गाळीके खळे होनेके 'प्लेट-फार्म'से कुछ दूरपर मालगोदाम है, जिसके पास ही पीछेकी ओर बर्फका कारखाना है। प्लेटफार्म बहुत सुन्दर, चिकना तथा आस-पास फूलोंसे सज्जित है।

स्टेशन-मास्टरसे भी परिचय हुआ। गाळीके आते ही हमलोग सवार हुए। न मेरे पास कोई बिस्तरा था, न विश्वामित्रके पास। और भी कितने ही आदमियोंको सवार होते देखा, किन्तु मानो सबने कुछ न ले चलनेकी कसम खा ली थी। सब लोगोंके पास उतने ही कपळे थे, जो उनके बदनपर—न बिछौना, न ओढ़ना, न तकिया, न ट्रंक, न लोटा-गिलास-थाली-तसला, न हुक्का-चिलम, न तम्बाकू। और बातमें तो साहेबी थी भी, किन्तु जिस प्रकार रेलके इंजनने फक-फक धुआँ फेंकना छोळ दिया था, वैसे ही आजके 'जेंटलमैनों'ने भी शायद इसी लज्जासे कि जिसे निर्जीवने त्याग दिया उसे सजीव होकर हम क्यों न त्यागें, सोच सिगार-सिगरेट छोळ दिया है।

सचमुच 'सलाई-टिकिया-दियासलाई', 'चाह गरम', 'कबाब रोटी', 'दाँतकी मिस्सी', 'सोडा-वाटर-बर्फ' आदि कोई भी पूर्व-परिचित शब्द मेरे कानोंमें न आये। गाळी क्या थीं, छोटे-छोटे खिळकी-जँगलोंवाले जग-मगाते मकान थे। फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड क्लासका पता नहीं। बस, एक ही

सरकी गाळी, एक ही सरहका बिछौना—चाहे इसे 'फर्स्ट क्लास' कहिए,
या 'सर्द'। चढ़नेके लिए द्वार दूर-दूरपर थे। हमलोग इंजनके पासहीके
डब्बेमें चढ़ गये। अब गाळीमें देर न होनेसे प्रियम्वदा, इस्माइल, देवमित्र तथा
मोहनपुरके सभ्य-जन विदा हुए। इंजन चलानेवाले महाशयको मेरे
चढ़नेकी खबर हो गई थी। उन्होंने घंटी दे, गाळी छोळ दी। मैं गाळीमें
खळा हो गया। देखता हूँ, गाळीके एक ओरसे रास्ता गया है, और उसकी
दूसरी ओर सोने लायक बेंचें हैं, जिनपर मुलायम गद्दे लगे हैं। मैंने विश्वा-
मित्रसे कहा—पहले बुड्ढेको तुम्हारी नई दुनियाकी गाळी देख लेने दो।
हम लोग इंजनके पाससे चले। जिस गाळीमें जाते, वहीं स्वागत होता। स्त्री-
पुरुष सब अपनी-अपनी बेंचोंपर बैठे थे। कोई पुस्तक पढ़ रहा था; कोई
आजका ताज़ा समाचार-पत्र। समाचार-पत्रोंकी धूम अब भी कम नहीं।
किन्तु 'चक' और 'कम्पनियों'का इश्तिहार नहीं। अफसोस, अब 'जो चाहे
सो पूछ लो', 'त्रिकाल-दर्शी आईना', 'असली सुमीरा', 'फायदा न करे
दाम वापस', 'घर बैठे एक हजार रुपया महीना कमा लो', 'मुफ्त ! मुफ्
मुफ्त' इत्यादि शब्दावलियोंका पता नहीं। अखबारवालोंकी बळी-बळी
व्यर्थकी सुर्खियाँ भी नहीं। न 'खास सम्वाददाता' अथवा 'रूटर-द्वारा'क
पता है। महत्त्व-पूर्ण समाचारोंपर सुर्खियाँ अवश्य हैं, किन्तु अब बाह
तळक-भळक दिखलाकर ग्राहक-संख्या तो बढ़ानी नहीं है। पत्रोंके कले
भी भारी ओढ़ने-पहिनने लायक नहीं। विचारणीय विषय मासिक-प
है। दैनिक-पत्र केवल संसारके दैनिक समाचारोंका संक्षेपमें
है। यह प्रत्येक प्रान्तके मुख्य स्थानसे उसीके नामसे निकलत

शायद यह कहनेकी आवश्यकता न होगी कि वह आवश्यकता अनुसार स्थान-स्थानपर उतनी सख्यामें भेजे जाते है, जिसमें कि प्रत्येक नर-नारी आसानीसे पढ सकें। काम हो जानेपर, कागजके कारखानोंमें जाकर ये पुराने अखबार सादे कागज बन जाते हैं, और फिर दूसरी बार अपने कलेवरको काला करानेको तैयार हो जाते हैं।

मासिक पत्र बड़ी तड़क-भड़कसे, आवश्यकतानुसार चित्रोंसे सुसज्जित होते हैं। फोटोग्राफीका भी अब यौवन है। इतना ही नहीं कि इसमे आकृतिके साथ जैसे-का-तैसा रग ही उतरता है, बल्कि अब चित्र भी एक सेकण्डमें बेतार-के-तार-द्वारा पृथ्वीके दूसरे छोर पर ज्यो-के-त्यो उतर कर समाचार-पत्रोमें आ जाते है। मै जिस दिन सेब-ग्रामके बागमें आया, उसी दिन मेरा चित्र ससारके समाचार-पत्रोमें मुद्रित हो गया। प्रत्येक विज्ञानके पृथक्-पृथक् मासिक पत्र निकलते हैं।

हम लोग अब रेलगाड़ीके पुस्तकालयमें पहुँच गये थे। यहाँ पत्रो और पत्रिकाओका ढेर पड़ा हुआ था। यद्यपि दो-तीन आलमारियाँ पुस्तकोकी भी थी, किन्तु पत्र-पत्रिकायें ही अधिक। ज्योतिष, गणित, अध्यात्म, इतिहास, भाषा-विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, साहित्य, विद्युत, कृषि, आयुर्वेद, वनस्पति, प्राणि आदि सैकड़ो विज्ञानोकी पृथ्वीके भिन्न-भिन्न छोरसे निकलनेवाली पत्रिकायें यहाँ मौजूद थी। नर-नारी कहीं किसी दार्शनिक तत्त्व पर आलोचना कर रहे थे, कहीं नवीन समाचारको लेकर आनन्द या शोक प्रगट कर रहे थे, कहीं साहित्य-सिन्धुमें गोते लगा रहे थे, तो कहीं उपन्यास ही पढ़-सुन रहे थे, और कहीं सगीत-मण्डली जमी

हुई थी। पुस्तकालयकी गाळीके बाद भोजनालय है। यात्रियोंको घरकी तरह यहाँ बना-बनाया भोजन मिलता है। भोजनका समय वही यात्राम भी है। घटा बजते ही लोग तैयार होकर बेंचो पर बैठ जाते है। भोजना-लयसे लवळीके तख्ते पर भोजनकी सामाग्रियाँ परोमी हुई बिजलीके द्वारा सरकती हुई वहाँ पहुँच जाती हैं। भोजन खानेके बाद सब तख्ते बिजली-द्वारा ही लौटा लिये जाते हैं। पानी पीने तथा नहानेके नल जगह-जगह लगे हुए है। पायखानोंका प्रबन्ध गाळीके अन्तमें है। ये भी बळे साफ हैं; किन्तु पहलेकी रेलोकी तरह जहाँ-तहाँ पायखाना गिर नहीं पळता, उसके जमा होनेका स्थान है और खास स्टेशनो पर पायखानोके नलोमें गिरा दिया जाता है। शोधक तो जल-देवता है ही।

भोजनालयके कमरेको पारकर, हमलोग आगे चले, कई लोग बैठनेका आग्रह करते थे। किन्तु मै यह कह देता था कि जरा आपके युगकी गाळी तो अच्छी तरह देख लूँ। आगे चलकर एक गाळी बीमारोकी थी। इसमें पाँच-छ' बीमार बळे आरामसे लिटाये गये थे। उनकी सेवामें दयामयी दाइयाँ तत्पर थी। कोई किसीको पुस्तक पढकर सुनाती थी; कोई बात-चीतसे मन-बहलाव करती थी। पासकी मेज पर गर्म रखनेवाले बर्तनोंमें दूध, और निकट ही सेव, अंगूर आदि ताजे-ताजे फल अच्छी तरह सजाकर रखे हुए थे। इन रोगियोमेंसे दो तिब्बतसे आ रहे थे। चिर-रोगी होनेसे उनकी विशेष चिकित्साके लिए तक्षशिला ले जाया जा रहा था। तीन और रोगी नेपाल प्रान्तके भिन्न-भिन्न स्थानोंके थे। उन्हें वैद्योंने समुद्र-यात्राकी सम्मति दी थी। चिकित्सा और सुश्रूषाका समुचित प्रबन्ध होनेसे रोगीकी

आधी पीळा तो ऐसे ही भूल जाती है। भला यह आराम पहले जब बळे-बळे धनिकोंके लिए भी दुर्लभ था, तो सामान्य जनोंकी बात ही क्या ?

सब गाळियोंकी एक बार सैर करके हमलोग एक स्थान पर आकर बैठे। उस समय मुझे ख्याल आया कि एक यह समय है और एक वह भी समय था जब ससारमें सबसे कळी मिहनत करनेवालेको ही सबसे अधिक दुख था। बेचारे परिश्रमी किसान-मजदूर रेलमें भी जब चढते, तो उनके लिए खळे होनेके लिए पर्याप्त स्थान न था। एक-पर-एक लोग भेळोंकी तरह जेठकी कळी गर्मीमें भी कस दिये जाते थे। उस भीळमें कही बच्चा दबना रहता था कही औरत। कुछ उज्र करने पर कहा जाता था—इतनी भीळमें जाते क्यों हो, दूसरी गाळीमें क्यो नही जाते ? किन्तु दूसरी गाळी थाने तकमें तो किसीका मुकदमा बिगळता था, किसीकी लगन बीतती थी, किसीका बन्धु मरता था और किसीका खर्चा खतम होता था। और यह सब सह भी ले, तब भी कौन जानता है कि अगली गाळी खाली आयेगी, जिसमें टाग-पसारे सोते जायेंगे। यह बैठने-सोनेका आराम, यह पढने-लिखनेका सुभीता, यह खाने-पीनेकी बेफिक्री पहले कहाँ नसीब थी ? पैसेवालोंकी पाकेट भी तो चलते-चलते गायब हो जाती थी।

हमारे पासहीमें एक मध्यमवयस्का महिला बैठी हुई थीं। पूछने पर पता लगा, आप आन्ध्र-विश्वविद्यालयकी आचार्या हैं। आज छ मासके बाद एक बळी यात्रासे लौटी जा रही हैं। आपकी यात्रा समुद्र, आकाश, पृथ्वी तीनों द्वारा हुई है। आप मद्राससे जहाजमें सवार हुई, वहाँसे लकामें दो-चार दिन प्रसिद्ध-प्रसिद्ध स्थानोंको देखती हुई जावा और बाली-द्वीपोंको

गई; फिर आस्ट्रेलिया। मैंने उनसे पूछा, आस्ट्रेलियामें क्या केवल गोरे लोग बसते हैं? उन्होंने कहा, अब वहाँ केवल गोरे, या काले, या पीले, या लाल नहीं बसते। सभी जगह सब रंगके लोग बसते हैं। मुझे आपका परिचय है। मैंने 'ल्हासा'में आपका चित्र और वृत्तान्त पढ़ा था। आप बीसवीं शताब्दीकी बात करते हैं। उस समय भारतमें ऊँच-नीच भावोंसे भरी नाना जातियाँ थीं; वैसे ही, दूसरे देशोंमें भी स्वार्थ-पूर्ण वर्ण-भेद, वर्ग-भेद थे। अब उनका कहाँ पता है? हमारे आन्ध्र प्रान्त, तामिल प्रान्त, अथवा केरल प्रान्तमें यदि पहलेकी बातें स्मरण करके पूछें—क्या अब भी तुम्हारे यहाँ 'परिया' हैं, अब भी तुम्हारे यहाँ 'थीया' हैं, अब भी वह 'अय्यर' और 'नम्बूदरीपाद' हैं, जो 'थीयों'की छायासे अपवित्र हो जाते थे?

मैं—तो क्या, आपके कहनेका मतलब यह तो नहीं कि अब यह बातें बिलकुल नष्ट हो गईं?

महिला—नष्ट ही नहीं हो गईं, कबकी भूल भी गईं। अब यह बातें इतिहासके जिज्ञासुओंके लिए पुस्तकोंमें रह गई हैं। अब आस्ट्रेलिया आदि किसी भी स्थानमें पुराना पक्षपात और दुराग्रह नहीं। सब जगह आगत अतिथिकी वैसी ही पूजा होती है, जैसी अपने देशमें।

मैं—मैं आपको प्रायः हिन्दी अथवा शुद्ध 'भारती' भाषा बोलते देख रहा हूँ। आपके देशकी 'इकळे'-'तिकळे' वाली बोली तो इधरवालोंके लिए कोई अर्थ ही नहीं रखती थी। आपने यह भाषा कब, और कहाँ सीखी?

महिला—प्रत्येक भारतीयकी 'भारती' तो मातृ-भाषा है। मेरी भी यह मातृ-भाषा ही है।

सभी तो साहित्य-सेवी नही होते। जिनकी रुचि होती है, उनके पढनेका पूर्ण प्रवन्ध है। इस समय कितनी आसानी है? मुझे सार्वभौमी भाषाके द्वारा आस्ट्रेलिया, सम्पूर्ण एशियामें घर-सा ही मालूम पळा।

मैंने उक्त विदुषीके इन भावोंको बळे ध्यान-पूर्वक सुना। पूछने पर मालूम हुआ कि आपका नाम गार्गी है। मैंने यात्राके बारेमें पूछा तो पता लगा कि आप आस्ट्रेलियामें कुछ दिन रहकर 'बोर्नियो'होनी हुई 'निप्पोन्'(जापान) गईं। मैंने बीचमें यह भी पूछा था कि आस्ट्रेलियामें आबादी कितनी है। उन्होंने बताया, १६ करोळ। चीन, भारतवर्ष और जापानकी घनी आबादी-वाले देशोंके बहुतसे लोग वहाँ जा-जाकर बस गये हैं। पहलेके इंग्लैण्ड, आदि देशोंके बसे हुए भी लोग हैं, किन्तु उनकी संख्या इतनी आबादीमें बहुत कम है। यह भेद भी ऐतिहासिकोंके महत्त्वका है। वहाँवालोंके लिए तो कोई भेद ही नहीं। मैंने पूछा—'फूजीयामा'को भी निप्पोन्में देखा? वही १९२३ के चन्द घटीके भूकम्पने सात लाखकी बलि ले ली थी? उत्तरमें उन्होंने 'हाँ' कहा। पीछे वह नानकिन चली आईं। फिर पेइपिंगसे मञ्चू-रियाके कई स्थानोंमें घूमती आप साइबेरिया पहुँची। वहाँसे उत्तरी ध्रुवका दर्शन करती हुई साइबेरिया मंगोलिया, और तिब्बत होती अब अपने विद्यालयको लौट रही हैं। ज्योतिष-शास्त्र और भूगोलसे आपका बळा प्रेम है। इन्हीं दोनोंके सम्बन्धमें आपने यह बळी यात्रा की है। हाँ, साथमें आपके दो और अध्यापक रहे, जिनमें एक 'विश्वभारती'के प्रोफेसर इक और दूसरे अलीगढ विश्व-विद्यालयके प्रोफेसर विश्वनाथ। यह दोनों सज्जन भी सामनेकी बेंचों पर बैठे थे। पहले उन्होंने भी अभिवादन किया

हों, जैसे कि दूसरोंके पास, तो मैं क्यों चुराऊँगा ? पेट-भर खानेके लिए सभी स्वादिष्ट पदार्थ मुझे, मेरी स्त्री, मेरी लड़की और मेरे लड़केको बिना चोरी या दगाबाजीके मिलते हैं, तो मैं वैसा क्यों करने जाऊँगा ? कोई चीज चुराकर बेचूँ, तो पहले दुनियामें न खरीदार ही है, न रुपया। रुपया लेकर भी क्या करना है ? बुढ़ापेके लिए ? सो तो राष्ट्रकी ओरसे वृद्धोंके लिए परिचारक तथा सब प्रकारके आरामका वैसा ही प्रबन्ध है, जैसा रोगियोंके लिए। फिर रुपयोंकी आवश्यकता ? बेटों-बेटियोंके लिए ? यह भी नहीं। तीन वर्ष तक राजकुमारोंकी तरह उनके पाले जानेका वर्णन हो चुका है। तीनसे बीस वर्ष तक भी उसी प्रकारके आरामके साथ उत्तम-से-उत्तम शिक्षासे भूषित होनेका प्रबन्ध राष्ट्रकी ओरसे है ही। शिक्षा-समाप्तिके बाद योग्य विदुषी कन्याएँ इच्छानुसार ब्याह, बिना बारात, जेवर, दहेज आदिके झगड़ोंके हो जाता है। तब रुपयेसे मतलब ?

इस प्रकार चोरी तो आजकलके शासनमें असम्भव है। जमींदारी, कारतकारी, माल-मिल्कियत किसीकी है ही नहीं, सभी राष्ट्रीय सम्पत्ति है। फिर दीवानी-अदालतोंका खातमा ही है, साथ ही जमीनके दखल-बेदखल आदिके झगड़े, मार-पीट, खून-खराबीका होना भी बन्द है। आबकारीका कानून, फैक्टरीका कानून, सिक्कोंका कानून, स्टाम्पका कानून, हथियारोंका कानून इत्यादि हजारों कानूनोंकी जड़ें ही कट गई हैं। इनमेंसे बहुत-सी चीजोंका संसारसे ही नाम उठ चुका है। अब अपराध यह हो सकता है कि बातके लिए वहीं तकरार होकर झगड़ा हो जाय।

स्त्री-पुरुष दोनों स्वतन्त्र हैं। दोनोंका पति-पत्नी-बंधन प्रेमका है।

पतिका पत्नी पर उतना ही अधिकार है, जितना कि पत्नीका पति पर। वह पुरुष होनेसे उसपर कोई विशेष अधिकार नही रखता। ब्याह भी दोनोंके [illegible]वा होनेपर, सुशिक्षित तथा सुचतुर होनेपर, दोनोकी पूर्ण स्वीकृतिपर, विना किसी दबाव और बिना किसी धनादिके प्रलोभनके होता है। ऐसी अवस्थामें दोनोका प्रेम स्थायी होना ही स्वाभाविक है। किन्तु यदि निर्वाह न हो सके—किसी कारणसे अथवा पहले जल्दी करनेसे भूल हुई—तो अब भी दोनो स्वतंत्र है। दोनोके रास्ते खुले है। दोनो ब्याह-सम्बन्ध-विच्छेद करके अपना-अपना रास्ता ले सकते है। उनके वैसा करनेमे समाजकी ओरसे कोई बाधा नही।

इतना होने पर भी यदि बदचलनीसे कही झगळा, फसाद या मार-पीटका मौका आ जाय, तो इससे भी जेलके लिए कैदी मिलते है। अनिवार्य तथा बहुत ताकीद करने पर राष्ट्रीय नियमोको न पालन करनेपर भी मनुष्य जेल भेजा जा सकता है। सक्षेपमें अपराधी होनेके यही तीन-चार कारण हैं।

इनके देखने तथा बीसवी शताब्दीके अपराधोंसे मिलानेहीसे ज्ञात होगा कि कैदी कितने रह जायँगे। मालूम हुआ, नैपाल प्रदेश भरमें एक ही जेल है, जिसमें कुल ५० कैदी है। बिहारमें भी एक ही जेल है, जिसके कैदियोंकी सख्या कभी सौसे ज्यादा नही हुई। ऐसी बात भारतहीके प्रान्तो- नही, दूसरे देशोंमें भी है। पुराने जमानेमें चोरीके लिए बळे-बळे दण्ड [illegible] दिये गये थे, जिसका कि अस्तित्व ही शासन-प्रणालीके दोष पर [illegible] परिश्रमकी कमाईको कानूनकी भूल-भुलैयामें डाल

कर हळप जानेवाले तो महाजन, महापुरुष; और रात-दिन खून-पसीनेको एक कर अपने और अपनी सन्तानका पेट न भरनेसे लाचार होकर, उसी पराये मालके हळपनेवालेकी लूटकी ढेरीसे अपनी प्राण-रक्षा करके लिए थोळा ले लेना बहुत भारी अपराध समझा जाता था। बात यह है कि उस समयकी धारणा ही दूसरी थी। दो-चार आदमियोंको लेकर दूसरेका धन हरनेवाले चोर, सौ-पचास लेकर दिन दहाळे लूटनेवाले डाकू, दस हजार लेकर दूसरोंकी जन्मभूमि छीन लेनेवाले विजयी—दिग्विजयी—कहलाते थे। सिकन्दर और एक डाकूमें तात्विक दृष्टिसे तो कोई भेद नहीं, केवल परिमाणका भेद था। परिमाणके भेदसे तो कुछ और ही होना चाहिये था, क्योंकि थोळे पापवाला थोळा पापी, बळे पापवाला बळा पापी होता है। इस तरह तो सिकन्दर आदि बळे चोरोंकी बळी निन्दा होनी चाहिये थी, किन्तु वह दुनिया ही दूसरी थी। चोर कौन कहे, उलटे लोग उन्हें प्रतापी, महाप्रतापी, दिग्विजयी, विश्वविजयी कहने लगे। सारांश यह कि उस समयके अनेक अपराध कृत्रिम तथा बलात्कारसे कराये जाते थे।

हमारी गाळी दनादन चली जाती थी। कहीं चढ़ाई और कहीं उतराई, तो कहीं पहाळकी सुरंगमें होकर रास्ता था। अभी आस-पासके पहाळों पर अनेक प्रकारके फलोंका ही बागीचा था। आखिर कुछ घंटों चलनेके बाद हमारी गाळीने पहाळ छोळा। अब घने जंगलोंका रास्ता था। पुराने-पुराने शालके ऊँचे और मोटे वृक्ष थे। बीच-बीचमें और भी बळे-बळे दरख्त थे। मुझे मालूम था ही कि इस तराईमें बाघ और हाथी कई तरहके जानवर होते थे। मैंने उनके बारेमें पूछा। मुझे बतलाया गया कि इन जंगलोंमें उन

हिंसक जीवोंका नाम नहीं। सारे हिंसक जीव मार डाले गये हैं। उनके मूलकी रक्षा प्राणि-संग्रहालयोंमेंकी जाती है, जो दो-चार नर और मादा रखे गये हैं, उनके खानेके लिए नकली मासके टुकळे दिये जाते हैं, जिन्हें वह पहिचान नहीं सकते। हाथियोंको भी फँसा-फँसा कर जंगल खाली कर दिया गया है। उनका भी जाति-उन्मूलन-क्रियासे प्रायः विनाश-सा ही कर दिया गया है। अब केवल प्रदर्शनी तथा विद्याके उपयोगके लिए कुछ रखे गये हैं। अब यह जंगल निष्कंटक हो गया है।

अभी दो-तीन कोस गये होंगे कि एक स्टेशन आया। यहाँका माल-गोदाम बहुत भारी तथा यहाँसे दो लाइनें जंगलोंकी ओर गई थीं। उनके बारेमें पूछनेपर मालूम हुआ कि ये लाइनें दूर तक गई हैं। यहाँसे पूर्व, थोळी दूरपर, एक बळा भारी ग्राम है, जिसका नाम कागज-ग्राम है; जिसमें दस हजार लोग बसते हैं। बस्तियोंका ढंग दूसरे ग्रामोंका सा ही है। वहाँके निवासियोंको भी किसी प्रकारकी सुख-सामग्रीसे वंचित होना नहीं पळता। कागज-ग्राममें कागजका बळा भारी कारखाना है। लकळियोंके काटने, टुकळे करने, उठाकर कारखाने तक लाने, चीरने-फाळने, पकाने-गलाने, 'पल्प' तैयार करने, कागज बनाने, काटने, तह लगाने, आदि सभी कामोंके लिए बिजली-द्वारा चलाई जानेवाली मशीनोंका प्रयोग किया जाता है। यहाँसे कागज तैयार होकर छापाखानोंमें जाते हैं। रद्दी कागज, सळे-गले कपळों आदिसे भरे रेलके डब्बे मैंने स्टेशनपर खळे देखे जिनके बारेमें मालूम हुआ कि यह सब कागज बनानेके लिए जा रहे हैं। पता लगा कि [illegible] बनानेके सभी उपकरण, बाँस, घास, लकळी आदि यहाँ प्रचुर

चले आये। अब सळककी दोनों ओर हरी-हरी घासोका मैदान है। मैंने पूछा—क्या जेठ मासमें भी अभी घासे हरी है। क्या तुम लोगोने और चीजो-की भाँति बादलोको भी तो अपने काबूमें नही कर लिया ? अध्यापक हकने कहा, हाँ, अब वृष्टि कराना भी हमारे हाथमे हो गया है, आवश्यकता पळने पर विज्ञान-द्वारा वृष्टि कराई जाती है। किन्तु, यहाँ तो समय-समय पर हरी घासोको जगह-जगह फैले हुए नलोके जलको खोलकर सींच दिया जाता है। वृष्टि ऊँचे, सूखे पर्वतोको हरा करनेके लिए कराई जाती है। नही देख रहे हैं, भूमि कैसी समतल, पानीके तलके बराबर है? मैंने पूछा, बरसातका पानी भूमिको काट-काटकर ऊभळ-खामळ नही बना देता ? इसपर उन्होने कहा, पानीकी चलती तो वह ऐसा करनेमे कब चूकता, किन्तु अब उसका रास्ता निर्दिष्ट है। कितना ही पानी बरसे, उन पक्के रास्तो अथवा नलो-द्वारा बळे नालोमे होकर नदीमें पहुँचा दिया जाता है रेलकी सळकको नही देख रहे है, कदम-कदमपर लोहेके पुल बँधे हुए हैं जलके रास्तेपर कही जबर्दस्ती नही है।

अब गायोके झुण्ड चारो ओर बिखरे हुए बळे सुन्दर दिखाई देने लगे। अब तक तो सळकके किनारे तार नहीं गळे थे, किन्तु अब तो तार भी बराबर गळे हुए थे, जिसमें गायें चलती गाळीके आगे न आ जायें। बहुत ही सुन्दर और बळी-बळी गायें थी। जिनकी सूरत देखते रहनेको तबियत चाहती थी। गायोंसे बछळे अलग करके दूर चराये जा रहे थे। हरी-हरी घासोको बळे प्रेमसे गायें चर रही थीं। मैंने कहा, अब दाना-खलीकी इन्हे क्या आवश्यकता? इसपर अध्यापक विश्वनाथने कहा—

तब भी खली, मक्काका दाना, चना, और चोकर इन्हें दिया जाता है। सायंकालको थानपर जाते ही इनको यह स्वादिष्ट ब्यारू कराया जाता है। मैंने जगह-जगह देखा कि लम्बे-लम्बे पक्के हौजोंमें साफ पानी लबालब भरा हुआ है। पानी इनमें बराबर आता और निकलता रहता है। यहाँ गायें आकर पानी पीती हैं, जगह-जगह हरे-हरे वृक्षोंकी छाया है। कुछ गायें वहाँ भी बैठी जुगाली कर रही हैं। गायोंके झुंडमें कई भीमकाय साँड़ भी दिखाई दिये। इनमें कुछ चर रहे हैं, और कुछ 'अव्-भाँ' कर रहे हैं। साँड़ोंके देखते ही मुझे एक बात स्मरण आगई और मैंने अध्यापक हकसे पूछा, आप लोग खेत तो बिजलीके हलोंसे जोतते हैं, और गाड़ी भी बिजलीहीसे चलाते हैं; बैलोंके खानेवाले भी नहीं। साँड़ रखनेको सौपर दो-तीन बैलोंकी आवश्यकता पड़ती होगी, फिर इतने बछड़े, जो पैदा होते होंगे, किस काममें आते हैं?

हक—कितने बछड़े? हमलोग पैदा ही इतने बछड़े होने देते हैं, जितने साँड़ोंकी आवश्यकता है। बाकी बछियाँ ही पैदा कराई जाती हैं।

मैं—तो क्या अब आपने यह विद्या भी पा ली है?

हक—हाँ, जो-जो आवश्यकता और कठिनाई मार्गमें आती गई, हमने परिश्रम किया और उसका हल भी मिल गया।

मैंने हँसते हुए कहा—भाई! तुमने सब बातोंमें कमाल किया। सब कठिनाइयोंको सहल और असम्भवोंको सम्भव बना दिया। तुम शायद एक भी असम्भव बात न जानते होंगे। यही गायें हैं, जिनको लेकर २०वीं और उससे पूर्व शताब्दियोंके हिन्दू-मुसलमान प्रलय तक एक दूसरेके खूनके प्यासे बन बैठे थे।

जितनी पिछले गो-ग्राममें गाये । इसका उत्तर सुनकर मैंने फिर न पूछा—
सौंळसे अधिक भैंसोका क्या होता है ? भैंसोको पानीमें बैठनेसे बळा प्रेम है;
इसके लिए स्थान-स्थानपर चौळे-चौळे कुण्ड बने हुए है, जिनमें पानी आता
और निकलता रहता है। खाने-पीने, रहने, दवाई-दर्पन सबका प्रबन्ध गो-
ग्राम-सा ही है। किन्तु भैंस-ग्राममें दस हजार आदमी बसते हैं, जिनके
लिए काम भी विशेष है। बात यह है कि गायोकी भाँति भैंसोका दूध नही
भेजा जाता । भैंसोका दूध वैद्यकी सम्मतिसे कही थोळा-बहुत भेजा जाता
है। नही तो सब दूध मशीन-द्वारा मथन करके दूहनेके बाद ही, मक्खन
निकाल लिया जाता है। यह मक्खन बर्फसे रक्षित गाळीके डब्बोमें बन्द
करके स्थान-स्थान पर भेजा जाता है। आवश्यकताके अनुसार मक्खनसे
घी बनाकर भी भेजा जाता है।

"किन्तु, क्या मक्खन निकालकर हजारो मन दूधका अवशिष्ट भाग
रोज फेंक दिया जाता है ?"

"नही, यहाँ बटनोका बळा भारी कारखाना है। दूधका सफेद
भाग रासायनिक प्रक्रियासे पृथक् करके उनसे नाना रग-विरगके
बनते है। बटन ही नही, कितने दरवाजो, मशीनो आदिके सफेद हैंड
लिए भी इसका उपयोग होता है, जिसमें आदमीका हाथ छूनेसे काला न हो।
ओर बिजलीने धूएँको ससारसे विदा कर दिया, तो दूसरी ओर इधर
हाथका काला होना भी बन्द कर दिया है। आज क्या फैक्टरीके
रग काला होता है ? आर्ट पेपरपर चिकनाई लानेके लिए भी
इस दूधकी सफेदीका प्रयोग होता है। अब हाथी-दाँत तो पैदा नही होता

किन्तु यह निस्सार दूध उसके कामके साथ और बहुत-से काम भी कर डालता है।"

घासोंके टाल तो मैंने जगह-जगह देखे थे, किन्तु पयाल, भूसाका गंज कहीं न मिला। पूछनेपर मालूम हुआ कि धान और गेहूँ आदिके डंटे भी यद्यपि कल-द्वारा काटे जाते हैं, किन्तु साथ ही वाली थोड़े डंटेके साथ काटकर एक ओर रखी जाती है, और डंठलका बोझा अलग बँधता जाता है। यह डंठल और पयाल पीछे गाँठें बाँध-बाँधकर कागजके कारखानोंमें भेज दिये जाते हैं, जहाँ उनसे कागज बनाया जाता है। गाय-भैंसोंके खानेके लिए हरी और सूखी घास ही काफी होती है।

अब साढ़े तीनके तोपकी आवाज पासके किसी गाँवसे आई। हमारी गाड़ीवाले सभी लोग बेंचोंपर आकर बैठ गये। थोड़ी देरमें हवामें छतके तारके सहारे तैरता हुआ हमारे जलपानका तश्ता सामने आ गया। इस वक्त भोजन कुछ और ही नियामत थी। एक छोटी तश्तरीमें काली मिर्च लगाकर घीमें तले, नमकीन, हरी मटर तथा हरे चनेके दाने थे। एक-एक गिलास गन्नेका कच्चा रस दूधमें मिला हुआ अलग रक्खा हुआ था। इसके अतिरिक्त कुछ फल भी थे। मालूम हुआ, आज-कलके लोग पुराने गाँवोंकी इन नियामतोंसे भी महरूम नहीं हैं। बताया गया कि ऐसे ही सभी मौसिमकी चीजें बच्चे-बूढ़ों, पुरुष-स्त्रियोंके पास पहुँचा करती हैं। मक्काके दिनोंमें भुट्टे इसी तरह जलपानके समय पहुँच जाते यदि हम उस समय सफर करते। प्रसन्नता-पूर्वक हमारे गाड़ीके परिवारने जलपान किया। मेरे मनमें उस समय यह ख्याल आता था कि इसी युगके

बारेमें बीसवीं शताब्दीके हिन्दू कहा करते थे कि आगे घोर कलियुग आयेगा। पृथ्वी नरक हो जायगी। यह तो सभी दृश्य स्वर्गके मालूम होते हैं। शायद उस युगके स्वार्थियोंके लिए समस्त भूमंडल-वासियोंका इस प्रकार आनन्द भोगना नरक प्रतीत होता था।

हाथ-पाँव धोकर, सामने खिड़कीसे देखा, निचले खेतोंमें कोसों तक चनोंकी हरियाली लहरा रही है। चनोंके सिवाय दूसरी कोई चीज ही नजर नहीं आती। पूछनेसे ज्ञात हुआ, अगला स्टेशन शालिग्राम है। वहाँ सिर्फ धान और चनोंकी खेती होती है। धानोंकी फसल कट जानेपर उन्हीं खेतोंमें चने बो दिये जाते हैं। पचास-पचास बीघोंकी एक-एक क्यारी थी, जिसके चारों ओर ऊँची मेंड़ें थीं। बासमती, किमुनभोग, कनकजीर आदि उत्कृष्टतम धानोंको छोड़कर मोटे धानोंकी तो अब खेती ही एक तरहसे बन्द है। विद्यालयोंमें उनकी मूल-रक्षा तथा परिचयके लिए थोड़ा बोया जाता है। बाकी खानेके लिए तो सब अच्छे-ही-अच्छे चावल हैं। यह शालिग्राम भी १० हजार आदमियोंका ग्राम है। यहाँ खेतीके अतिरिक्त चावल अलग करनेका भी कारखाना है। धान-कुटाईका काम भी बस मशीन हीसे। चावल तैयार होते जाते हैं, और स्थान-स्थानपर गाड़ियोंमें भर भरकर रवाना होते रहते हैं। चनोंको दाल और बेसन बनाकर तथा साबि भी चालान किया जाता है। पयाल तो कागजके कारखानोंहीमें चला ज है। हाँ, धानकी भूसी तथा और कूड़े-करकटको खड्डोंमें सड़ाकर, खाद बनाई जाती है। बाकी खाद गो-ग्राम, भैस-ग्रामसे आती है। कितने ही पशुओंके ग्रामोंमें हड्डी पीसनेके कारखाने हैं। मुर्दे पशुओंका, पहले बता

दिया गया है, कोई चमळा नही उतारता। उन्हे गाळ दिया जाता है। पीछे सळी मिट्टी तो खादके स्थानपर भेज दी जाती है, और हड्डियाँ कलोमें पीसकर चूर्ण कर दी जाती है। यहाँ उनसे बहुत-सी फास्फोरस भी निकाली जाती है, जिन्हे दियासलाई बनाने आदिके काममें लाया जाता है। यद्यपि सिग्रेटके बन्द होने तथा आगके स्थानपर बिजलीके उपयोग होनेसे दियासलाइयोका खर्च बहुत कम क्या, नहींके बराबर है, तब भी एकाध कारखाने दियासलाईके रखे गये है।

शालिग्रामका खेलका मैदान स्टेशनके पास ही सळकके किनारे था। देखा, सहस्रो स्त्री-पुरुष वहाँ जमा हुए है। 'फुटबाल' खेला जा रहा है। बळे-बळे जवान खेलमें लगे हुए हैं। ओह, अभी एक गोल हुआ—सारी दर्शक-मण्डलीने प्रसन्नता प्रकट की। आगे इधर कबड्डी जमी हुई है। हरी घासपर नगे पैर, जँघिया और बनियाइन पहिने खिलाळी खेल रहे हैं। स्थान सळकसे लगा हुआ है, और गाळी भी स्टेशनके पास आनेसे बहुत धीमी पळ गई है , इसलिए इनके पुष्ट, सुन्दर और स्वस्थ शरीर खूब दिखलाई पळ रहे हैं।

रेलोकी सळकोके नीचेसे जगह-जगह नहरे जाती दीख पळती है। विश्वामित्रने कहा—अब गण्डक, गगा आदि नदियोकी धारा उतनी मोटी नही मिलेगी, जितनी कि पहले थी। सारे देशमे नहरोका जाल बिछा हुआ है। इन नदियोके पानीका बहुत-सा भाग तो ऊपरसे ऊपर ही नहरोमें ले लिया जाता है। सभी ग्रामोमें यद्यपि अपने कारखानोकी भाफके लिए पानीकी आवश्यकता नही है, किन्तु सब कुछ हरा-भरा और साफ रखनेके

लिए उसकी बळी आवश्यकता है। खेती और बगीचेवाले गाँवोंको तो सींचनेकी भी हर वक्त आवश्यकता पळती रहती है। पानी और बिजली यही दोनों आजकलके ससारके प्राण हैं, बल्कि बिजली भी तो पानीहीसे तैयार की जाती है। इसलिए पानी आजकल सब कुछ है। इसका जैसा ही बळा भारी खर्च है, वैसा ही व्यर्थ व्यय भी न होने देनेकी ओर ध्यान है।

जगल छोळते ही भूमि बराबर आ गई थी। अब पहाळ भी दूर धुंधले बादलोकी भाँति दीख पळते थे। चारो ओर मैदान-ही-मैदान था। बस्तीके पास ही वृक्ष थे, अन्यथा वृक्षोका कही नाम न था। खेतोंमें खाद ले जाने तथा अनाज ढो लानेके लिए छोटी-छोटी गाळियोंकी पतली-पतली लोहेकी कळियाँ दिखलाई पळती थी। चनोमें यद्यपि फल लग गये थे, किन्तु अभी पके न थे—वह बिल्कुल हरे-हरे दिखलाई पळते थे, तोभी वहीं रखवालोकी झोपळियाँ न दिखाई देती थी। शालिग्राम स्टेशनसे कोसों आगे तक चनोके खेत चले आये थे।

अब भूमि ऊँची आई। चनोकी जगह पर बळी-बळी बालियोंवाले गेहूँके खेत हैं। सळकके दोनो तरफ जहाँ तक दृष्टि जाती है, हरे-हरे गेहूँ ही दिखलाई पळते हैं। हवाके झोकोंसे हिलते हुए ये प्रशान्त सागरमें हल्की ... समान मालूम देते हैं। गेहूँओंके स्वाद और आटेकी सफेदीके बारेमें ... कहना है? किन्तु मुझे गेहूँके दाने अभी देखनेको न मिले थे। मैंने ... मन्त्रीसे पूछा कि क्या हमारे समयके पूना नं० ३ से भी बड़े दाने होते हैं। उन्होंने कहा—पूना नं० ३ विद्यालयके म्यूजियममें रक्खा है; वह भला इन गेहूँओंका क्या मुकाबिला कर सकता है? खेतोंकी

जुताई, कटाई, दँवाई आदि सभीके बारेमें तो इकट्ठा ही सुन चुका था कि बिजलीकी कलों-द्वारा होती है। एक-एक हलमें बीस-बीस फाल पाँतीसे लगे रहते हैं, जो एक-एक हाथ गहरी भूमि खोदते चलते हैं। पीछेसे लगा पटेला (सिरावन) ढेलोंको फोड़ता और भूमिको बराबर करता जाता है। बोनेका काम भी मशीनों ही द्वारा होता है। पकी खेतीका काटना, बाँधना, ढोना, आदि सभी काम कले ही करती हैं। अच्छी खाद और पर्याप्त जलकी अनुकूलतासे फसल जैसी चाहिये वैसी ही होती है। गेहूँओंके खेतोंमें सालमें दो फसलें होती हैं, बरसातमें मक्का और बाजरा बोया जाता है, फिर यह गेहूँ। मक्का और बाजरेको आजकल आदमी केवल भुट्टा और होलहाके तौरपर ही मौसिमम दो-चार दिन खाते हैं बाकी इन्हें गाय-भैंसोंको दिया जाता है। इनके डंठल भी कागजके कारखानोंमें जाते हैं। हरा होनेपर कुछ पासके किसी पशु-ग्राममें भी स्वाद बदलनेके लिए भेज दिये जाते हैं।

इस गेहूँ-ग्राममें आटा पीसनेका बड़ा कारखाना है। यद्यपि सभी गेहूँके ग्रामोंमें खेतीके साथ-साथ पिसाई भी होनेका नियम नहीं है। किन्तु नजदीकमें और कोई ऐसा कारखाना न होनेसे इसकी आबादी दस हजार करके यहाँ कारखाना भी रखा गया है। आटा-मैदा सब यहाँसे तैयार होकर चालान होता है।

गेहूँ-ग्रामकी सीमा पार होनेपर आम-लीची आदिके वृक्ष दिखलाई देने लगे। पूछनेपर ज्ञात हुआ, अब हम सोनीहारीके पास आ गये। यह बगीचा एक विद्यालयका है। पहले बतलाया जा चुका है कि तीन वर्षके बाद लड़के-लड़कियाँ माता-पिता तथा जन्म-स्थानसे अलग करके विद्या-

लयमें भेज दिये जाते हैं। प्रत्येक ३०-४० ग्रामसे
रहता है, जिसमें दस-पन्द्रह हजार या कभी इससे
पढ़ते हैं। इनमें प्राय सब प्रकारकी साधारण शि
सत्रह वर्ष तक बालक-बालिकायें इन्हींमें पढ़ते हैं।
तथा किसी विद्यार्थी और विशेष प्रवृत्ति रखनेवा
विद्यालयसे दूसरे विद्यालयको—जहाँ उस विद्या
है भेज दिये जाते हैं। अध्यापकों या विशेषज्ञोंके
लिए यहाँसे किसी अन्य विद्यालयमें जाना पड़ता।
यहाँसे शिक्षा समाप्त करके विद्यार्थी कार्यक्षेत्रमें
लयोंकी शिक्षा-दीक्षा और रक्षाका ढंग एक-सा
विशेष पूछनेपर कहा, यह सब बातें तो नालन्दा
आयेंगी।

अब मोतीहारी नगर आया। क्या अब पुरा
है? बिल्कुल उलट-पुलट गया है। आबादी तो अ
आदमियोंकीही है। किन्तु आजकी स्वच्छता, सु
पहले कहाँ थी? पहाड़ पार करनेके बाद ही हम बि
मोतिहारी बिहार प्रान्तके 'विदेह' प्रदेशका एक जि
इधर बहुत-कुछ परिवर्तन हुआ दीख पड़ता है। पु
इसी प्रान्तमें है। उसके पश्चिम काशी-कोसल प्रान्

धानी या राष्ट्रधानी है। इस प्रकार प्रान्तों तथा प्रदेशोंकेनाम पुराने र
गये हैं। पिछली शताब्दियोंके इतिहास-सम्बन्धी स्थानोंके नाम भी ज्यों-के
त्यों रहने दिये गये है। यहाँ मोतिहारी नगरमें जिलाकी पचायतका काय
लय रहता है। सभापति और कार्यकारिणी के सदस्य अपने निर्वाचन-अवधि
भर यहाँ ही रहते हैं। जिलाकी उत्पत्ति तथा आवश्यकताओंके अनुसा
चीजें बाहर भेजने तथा मँगाने आदिका काम इनके कर्त्तव्योंमें एक प्रधा
कर्त्तव्य है। जिलाके हिसाब-किताब तथा अन्य प्रकारके कागज-पत्रो
साथ पुराने कागज पत्रोंका भी यहाँ संरक्षणालय है। इसके और जि
आफिसके अतिरिक्त दूसरे सारे ही मकान बिना कोठेके है । गाँवों औ
शहरोंके घर-द्वार, रहन-सहन, खाना-पीना किसी बातमें भी कुछ भेद नहीं
अब वह पुरानी सड़ी गलियाँ और गन्दे मकान कहीं नही दिखाई पड़ते
जिलाकी पचायतकी बैठकका यहाँ एक बृहद् भवन है। नगरवासीयो
सस्थागार इससे अलग है। नगरमें एक छापाखाना है। जिला भरके आवश्य
कागज-पत्र यहीं छपते है। यहाँ सबसे बड़ा कारखाना मशीनोंके सुधा
तथा पुरजोंके बदलनेका है।

आगे बढ़नेपर सड़कके दोनों ओर दूर तक बाग-ही-बाग दिखल
देने लगे । मैंने जलपानमें अमरूद और बेरके टुकड़े खाये थे। एक-ए
बेर एक-एक छटाँकके थे, जिसमें खासियत यह कि गुठलीका पता नहीं
अमरूदोंमें भी, सारा फल ढूँढनेपर कहीं एक बीज मिल पाता था। मिठ
और सुगधके लिए क्या कहना है ? विश्वामित्रने बताया, यह फल
ऐसे ही होते है। अब घटिया वस्तु पैदा ही नहीं की जाती। यह सारा ब

पुरुष-बच्चोंके लिए, तरह-तरहके नापके वस्त्र तैयार करता और आई हुई माँगोंके अनुसार वहाँ-वहाँ रवाना करता है। उसके कुछ आदमियोंको रसोई बनाना पळता है; किन्तु उसे न अनाज पैदा करनेसे सम्बन्ध; न आटे-चावलके भावसे प्रयोजन; न लाठीसे गाय-भैंस चरानेका काम; न आलू-बैंगन-गोभी बोनेसे मतलब; न ऊख पेल कर चीनी-गुळ तैयार करनेका प्रयास; अर्थात् उसके लिए अपेक्षित अन्य सभी वस्तुयें दूसरे ग्राम तैयार करते हैं, जिनके कि कपळोंकी आवश्यकता वह पूरा करता है। इकट्ठा बहुत-सी चीजें कलों-द्वारा तैयार करनेमें श्रम और समय कम लगता है। कहाँ पहले लोगोंके दिन-रात लगे रहने पर यही मसल थी कि यदि सिर ढँका तो पैर नगा, यदि पैर ढँका तो सिर नगा। किन्तु यहाँ हफ्तेमें पाँच दिन और रोज चार ही घंटे प्रत्येक व्यक्तिको काम करना पळता है और इतनेहीमें स्वर्ग-सुख भोगनेकी सभी वस्तुएँ प्रस्तुत हो जाती हैं। पहलेकी सारी जिन्दगी जिन्दगीहीके लिए थी। आदमी रात दिन लगे रहकर तब अपने और अपने बाल-बच्चोंका पेट भर, तन ढाँक, जीवन-रक्षा करता था, दूसरे कामके लिए मुश्किलसे समय निकलता था। यहाँ मैं उन आदमियोंको नहीं गिनता हूँ, जिनका जीवन परायेकी मेहनत पर निर्भर था। उस समय मनुष्य कैसे अपने जीवनका कोई उच्च लक्ष्य रख सकता था जब कि इस प्रकारकी आपत्तियोंमें उसे पळा रहना पळता था? किन्तु अब तो अवस्था ही दूसरी हो गई है। ४ घंटे काम, बाकी २० घंटे सोना, पढ़ना, नृत्य-गान, सम्भाषण, विद्याव्यसन, परोपकार-चिन्तन, साहित्य-सेवा आदि सभी कामोंके लिए बचा हुआ है। इतनी सुभकी

सामग्रियोंसे घिरे रहने पर भी उसके लिए अपने जीवनका सर्वांश अर्पण नही करना पळता। प्रबन्ध कैसा है? वर्षमें नौ मास अपना कर्तव्य पालन करके आप तीन मास सैर-सपाटा भी कर सकते है, चाहे पृथ्वीके किसी भागमें भी स्वतन्त्रता-पूर्वक घरकी भाँति सानन्द रेल, जहाज या विमान-द्वारा विचर आ सकते है। अपने-अपने कार्यक्षेत्रके चुननेमें भी स्वतंत्रता है। केवल योग्यता होनी चाहिये। फिर भारतीय अगूरकी खेतीका जानकार फ्रान्समें जाकर बस सकता, रह सकता है।

पटनामें नालन्दा जानेवाली गाळी तैयार मिली। हमारी गाळीकी यही तक पहुँच थी। अन्य साथियोंसे विदा हो मैं और विश्वामित्र नालन्दा की गाळी पर जा बैठे।

६

अपूर्व स्वागत

अब हमारी गाळी दनदनाती नालन्दाके पास जा रही थी। प्रात काल-का समय था। भगवान भुवन-ज्योति यद्यपि अभी पूर्वके क्षितिजपर दिखाई नही पळते थे, किन्तु उनके आनेका सम्वाद उप कालीन रक्तिमा दे रही थी। दूर कृषि-विद्यालयके वृक्षोंके ऊपरसे यह लालिमा वैसे ही दीख पळती थी जैसे अँधेरी रात्रिमें दूरसे दिखलाती दावाग्नि । मानो भगवान भास्कर ससारके अन्धकारके दग्ध करनेमें अभी रुके है। यद्यपि अभी उनका साक्षात् आगमन नही हुआ किन्तु उनकी अवाईकी सूचना पाये हुए-से पक्षिगण इधर-उधर उळ-उळकर बैठ रहे हैं। रेल-लाइनकी दोनो ओर फलोके भारसे लटके हुए चनोंके पौधे दूर तक दिखलाई पळते हैं, जिनमें कही-कही पतली-

पतली खेतोंमें जाने वाली लाइनें दिखलाई पळ जाती हैं। मैंने कहा, और तो सब है, किन्तु आजके लोगोंको चनेका होल्हा तो न मुयस्सर होता होगा, किन्तु पीछे मेरा यह विचार भी गलत निकला। मैंने स्वय पीछे होल्हा खाया था। मेरे साथी भी शौचादिसे निवृत हो बैठे थे। गाळीमें कहीं कुछ लोग पुस्तक पढते हुए दीख पळते थे—कुछ लोग गान कर रहे थे बाकी लोग भी चुपचाप अपने स्थानो पर बैठे अपने-अपने विचारोंमें मग्न थे। उस भीतरी सन्नाटेमें वही गाळीकी घळघळाहट कानोंमें आ रही थी। मैं भी शौचादिसे निवृत्त हो, स्नान-कोठरीसे स्नान करके आ बैठा। अब हमारी गाळी विद्यालय-भूमिमें प्रविष्ट हुई। चारो ओर दूर तक खेतोंसे घिरा एक तीनतला सुन्दर मकान है। उससे थोळी दूर पर एक ऊँचा चार महलका मकान है; जिसमें चारो ओरके मकानोके बीचमें एक बळा भारी चौखुटा आँगन है। मकानके बाहर फूलोकी शोभा निराली है। विश्वामित्रने बतलाया, वह कृषि-विद्यालय है; और यह उसका छात्रावास। ऐसे ही और भी थोळी-थोळी दूरपर विद्यालय मिलते गये। आखिर ठीक साढे छः बजे गाळी नालन्दाके बळे स्टेशन पर पहुँची। नालन्दाका घेरा बहुत भारी है। यहाँ ४ स्टेशन हैं, जो समीपस्थ विद्यालयके नामसे पुकारे जाते हैं। इस बळे स्टेशनका नाम है नालन्दा प्रधान।

प्रत्येक ट्रेनमें अन्य प्रबन्धोके साथ बे-तारका टेलीफोन भी लगा रहता है। पिछले स्टेशन पर फिर विश्वामित्रने हमारे आनेकी सूचना आचार्यको दे दी थी। हमारी गाळीके स्टेशन पर पहुँचते ही विद्यालयके बैण्डवालोने सूचनाका बिगुल दिया। पटनामें चढते वक्त हमलोग दरवाजेके

पास ही बैठे थे। अतः गाळी खळी होते ही उतर पळे। प्लैटफार्म पर आचार्य तथा पचास प्रधान-प्रधान उपाध्याय खळे थे। मेरे उतरते ही सबने 'स्वागत' किया, और गलेमें फूलोंकी माला डाली। स्टेशनसे बाहर यद्यपि मोटर खळी थी, किन्तु मैंने कहा, इतनी दूरके लिए इसकी आवश्यकता नहीं, दूसरे, मार्गमें खळे बच्चोंसे मिलनेमें भी कठिनाई उपस्थित होगी। अब हमलोग 'वसुबन्धु'-भवनकी ओर चले। सळकको दोनो ओर पाँतीसे विद्यालय-के छात्र खळे थे। यह सब बळी श्रेणियोंके छात्र थे। एक-एक विद्यालयके छात्रोंकी पंक्ति एक ही जगह थी। पहुँचतेके साथ ही उस-उस विद्यालयके प्रधान आचार्यका परिचय कराया जाता था। इस प्रकार आखिर 'वसु-बन्धु'-भवनका बळा हाल आ गया।

'वसुबन्धु'-भवनकी शोभा अपूर्व है। चारों ओर दूर तक घासका हरा मैदान है। मकान बहुत ऊँचा, सफेद संगमर्मरका-सा दीखता है। इसके चारों ओर संगमर्मरकी छतरियोंके नीचे पुराने और बीते हुए कितने ही आचार्यों एवं प्रसिद्ध महापुरुषोंकी मूर्तियाँ हैं। मुझे यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि यहाँ विद्याव्रतकी भी एक विशाल-मूर्ति स्थापित है। यह वही यशस्वी पुरुष हैं, जिन्होंने नालन्दाके पुनरुद्धार करने वक्त सर्व-प्रथम अपना सर्वस्व दिया था। सब स्थावर और जंगम सम्पत्ति उनकी पच्चीस लाखकी थी। इन्हें कोई सन्तान न थी। इन्होंने विद्यालयहीको अपना पुत्र बना, सर्वस्व अर्पण कर दिया। विद्याव्रतने सचमुच उस समय असाधारण साहस और स्वार्थ-त्यागका परिचय दिया था। मुझे स्मरण है कि जिस समय मेरे हृदयमें विद्यालयके पुनरुद्धारका विचार उठा, तो स्वयं

विद्यालय-परिवार समूह-रूपसे मेरा स्वागत करनेके लिए भवनमें बैठा हुआ था। इसलिए आचार्य ने वहीं करनेके लिये मुझसे कहा। अब जलपानका समय समीप था, इसलिए रंग-मंचपर दो शब्दोंमें विद्यालयकी ओरसे अभिनन्दन करते हुए उन्होंने मेरे गलेमें फूलोंका हार डाला। मैंने भी दो ही शब्दोंमें इसके लिए कृतज्ञता प्रकट की; और कहा कि, अब तो मैं फिर अपने प्यारे विद्यालयके लिए आ ही गया हूँ।

यहाँसे मैं सीधे विद्यालयके अतिथि-विश्राममें ले जाया गया। यह अतिथि-विश्राम बहुत दूर तक पाँच तलोंका मकान है। इसमें दस हजार आदमियोंके आरामसे ठहरनेका स्थान है। कोठरी-आदि, सबका प्रबन्ध वैसा ही था, जैसा कि सेव-ग्राममें। किन्तु यह एक बहुत लम्बे-चौळे मैदान-वाले आँगनके चारों ओर बना हुआ है। ऊपर चढ़नेके लिए बिजलीके झूले हैं जिनपर बैठकर आदमी अपने विश्राम-स्थानके तलपर शीघ्र जा पहुँचता है। बिजलीके पंखों और दीपकों, तथा पानीके नलोंका पूरा प्रबन्ध है। अतिथियोंकी सेवा और आव-भगतके लिए बहुत-से पुरुष और महिलायें नियुक्त हैं। अतिथियोंके लिए यहीं एक बळी पाकशाला और भोजन-शाला है। तैरकर स्नान करनेके लिए एक बळा कुण्ड भी है। उपयुक्त पुस्तकोंका एक पुस्तकालय और अस्वस्थ अतिथियोंके लिए पृथक् चिकित्सालय भी है। इस प्रकार यह अतिथियोंका अच्छा खासा गाँव है। अतिथि-विश्रामके द्वार पर ट्राम है, जो राजगृह तक फैले हुए भिन्न-भिन्न कालेजों तक चल हैं। अतिथि जिस कालेजको जाना चाहते हैं, बस, दर्वाजे ही पर वहाँ

वाली ट्रामपर बैठ जाते

विद्यालयकी इस प्रकारकी श्री-वृद्धि देखकर मेरे आनन्दकी सीमा न थी। मेरे समयसे अब बहुत फर्क हो चुका था। विश्राम-स्थानपर पहुँचकर वहाँ जलपानके लिए सब-कुछ तैयार पाया। मैंने विश्वामित्र, आचार्य वशिष्ठ तथा अन्य प्रधान अध्यापक, अध्यापिकाओंके साथ जलपान किया। जलपानके बाद आजका प्रोग्राम शिशु-कक्षा देखना निश्चित हुआ।

इस प्रकारका भी सन्देह उठता था, कि क्या मेरे ऐसा अकिंचन, अयोग्य व्यक्ति ऐसे भारी कार्यको उठा सकता है। मेरी हार्दिक इच्छा होती थी कोई इससे बहुत ही महान् पुरुष इस कामको अपने हाथमें लेता तो मु भी उसके पीछे चलकर सब प्रकारसे सेवार्थ तैयार रहनेमें कितना आनन्द होता। किन्तु दुर्भाग्यसे महान् पुरुषोंको इस महत्त्वपूर्ण कार्यका स्मरण न था, अथवा उपेक्षा थी। यही देख और सर्वथा अपनी अयोग्यता जानकर भी मैंने इस काममें हाथ डाल ही दिया। किन्तु इस काममें अनेक विद्वानोंके अतिरिक्त बहुत धनकी भी आवश्यकता थी। धनवानोंका अभाव न था, किन्तु उनमेंसे बहुत तो इसका महत्त्व ही नहीं समझते थे। जो समझ भी रखते थे, उन्हें ऐसा होनेपर विश्वास न था। अन्य जगहोंमें धनादि प्रदान करनेसे पदवियों और मिनारोंकी वृष्टिकी सम्भावना थी, वह यहाँ : थी, फिर ऐसी अवस्थामें कौन धनपात्र आगे बढ़ता ?

मैंने बाल्यहीसे यद्यपि भिक्षु-आश्रम ग्रहण किया था, किन्तु भि माँगनेका अभ्यास न था। यह और भी एक कठिनाई थी। खैर, कि किसी तरह मैंने अपने आपको इसके लिए तैयार किया। उत्साही पु मेरी झोलीमें पड़ना आरम्भ किया। किन्तु फिर वही कठिनाई। यह सभी उत्साही पुरुष ऐसे थे जो अपने उत्साहके बराबर धन देने की सामर्थ्य न रखते थे। तो भी उनके उत्साहसे मुझे बड़ा उत्साह मिलता था। ऐसे समयमें विद्याव्रतके हृदयमें प्रेरणा हुई। यह मेरे लिए अपरिचित व्यक्ति थे। इसके पूर्व कभी इन्होंने ऐसे कार्योंमें हाथ भी न डाला था। परन्तु, न जाने हृदयमें एकदम क्या आया कि इन्होंने अपने सर्वस्वका दानपत्र मेरे पास भेज दिया।

आज दो शताब्दियोंके ऊपरकी बात मेरे लिए कलकी सी है। मेरे नेत्रोंके सामने अब भी मेरे वह सहयोगी फिर रहे हैं, जिन्होंने अपने जीवनको विद्यालयकी आधार-शिलाके नीचे डाला था। उस समयके हम लोगोंने उनका सम्मान किया—किन्तु उतना नहीं, जितनेके वे पात्र थे।

वसुबन्धु-भवन अर्द्धचन्द्राकार है। इसमें सवा लाख आदमियोंके बैठनेका स्थान है। बैठनेकी गैलरियाँ रग-मचके सम्मुखसे आरम्भ हो धीरे-धीरे ऊँची होती चली जाती है। यद्यपि वह रग-मचके सम्मुख अर्द्धचन्द्राकार दूर तक चली गई है, किन्तु इस प्रकार बनाई गई है, कि सभी दूर और नजदीकके आदमी रग-मचको देख सकते हैं। इन गैलरियोंके नीचे-ऊपर तीन तहे है। बैठनेके लिए लम्बी-लम्बी कुर्सियाँ है। स्थान-स्थान पर बिजलीके लैम्प और पखे लगे हुए हैं। रग-मचकी धीमी-सी आवाजको भी सबसे आखिर वाले श्रोता तकके कानमें बराबर पहुँचनेके लिए बीच-बीचमें शब्द-प्रसारक यत्र लगे हुए हैं। यह शब्दोको श्रोतव्य बनाते हैं। प्रत्येक तलमें वायु और सूर्य-प्रकाशके आने-जानेके लिए पर्याप्त रोशनदान और बातायन है। दीवारोपर भूमडलके प्राचीन और अर्वाचीन महापुरुषोके चित्र और सुनहरे अक्षरोमें सूक्तियाँ लगी हुई है। इन चित्रोमें अधिकाश विद्यालयके ही छात्रो और अध्यापकोंके बनाये हुए है। छात्रो और छात्राओ, दोनो के बैठनेके लिए भवनमें स्थान है। बैठनेकी जगहोपर पहुँचनेके लिए सीढियाँ बाहरसे लगी हुई है। केवल रग-मचपर जानेका मार्ग सामने पळता है। रग-मचकी बगलमें नेपथ्य-शाला है, जहाँ नाटक करनेके समय पात्र नेपथ्य-परिवर्तन करते है।

विद्यालय-परिवार समूह-रूपसे मेरा स्वागत करनेके लिए भवनमें बैठा हुआ था। इसलिए आचार्य ने वहाँ चलनेके लिये मुझसे कहा। अब जलपानका समय समीप था, इसलिए रंग-मंचपर दो शब्दोमें विद्यालयकी ओरसे अभिनन्दन करते हुए उन्होने मेरे गलेमें फूलोका हार डाला। मैंने भी दो ही शब्दोमें इसके लिए कृतज्ञता प्रकट की; और कहा कि, अब तो मै फिर अपने प्यारे विद्यालयके लिए आ ही गया हूँ।

वहाँसे मै सीधे विद्यालयके अतिथि-विश्राममें ले जाया गया। यह अतिथि-विश्राम बहुत दूर तक पाँच तलोका मकान है। इसमें दस हजार आदमियोंके आरामसे ठहरनेका स्थान है। कोठरी-आदि, सबका प्रबन्ध वैसा ही था, जैसा कि सेव-ग्राममें। किन्तु यह एक बहुत लम्बे-चौळे मैदान-वाले आँगनके चारो ओर बना हुआ है। ऊपर चढनेके लिए बिजलीके झूले है जिनपर बैठकर आदमी अपने विश्राम-स्थानके तलपर शीघ्र जा पहुँचता है। बिजलीके पखो और दीपकों, तथा पानीके नलोका पूरा प्रबन्ध है। अतिथियोकी सेवा और आव-भगतके लिए बहुत-से पुरुष और महिलायें नियुक्त है। अतिथियोके लिए यही एक बळी पाकशाला और भोजन-शाला है। तैरकर स्नान करनेके लिए एक बळा कुण्ड भी है। उपयुक्त पुस्तकोका एक पुस्तकालय और अस्वस्थ अतिथियोंके लिए पृथक् चिकित्सालय भी है। इस प्रकार यह अतिथियोका अच्छा खासा गाँव है। अतिथि-विश्रामके द्वार पर ट्राम है, जो राजगृह तक फैले हुए भिन्न-भिन्न कालेजो तक चली गई हैं। अतिथि जिस कालेजको जाना चाहते है, बस, दर्वाजे ही पर वहाँ जाने वाली ट्रामपर बैठ जाते है।

विद्यालयकी इस प्रकारकी श्री-वृद्धि देखकर मेरे आनन्दकी सीमा न थी। मेरे समयसे अब बहुत फर्क हो चुका था। विश्राम-स्थानपर पहुँच-कर वहाँ जलपानके लिए सब-कुछ तैयार पाया। मैंने विश्वामित्र, आचार्य वशिष्ठ तथा अन्य प्रधान अध्यापक, अध्यापिकाओंके साथ जलपान किया। जलपानके बाद आजका प्रोग्राम शिशु-कक्षा देखना निश्चित हुआ।

१०

शिक्षा-पद्धति : शिशु-कक्षा

दूसरे अध्यापक तो जलपानके बाद अपने-अपने स्थानपर चले गये । सिर्फ मैं, विश्वामित्र, आचार्य वशिष्ठ और शिशु-कक्षाकी प्रधानाध्यापिका एवं विद्यालयकी उपाचार्या वीरा साथ चलनेको रह गई थीं । बालकों और बालिकाओंकी कक्षामें सूचना दी जा चुकी थी । निकलते समय निश्चय हुआ, कि पहले शिशु-कक्षामें चलना चाहिये । द्वारसे निकलकर हम लोग ट्रामपर जा बैठे । शिशु-कक्षा यहाँसे एक कोसपर थी । रास्तेमें जहाँ-तहाँ मैदान, बाग और अन्य-अन्य विषयोंके विद्यालय भी पड़े । आज विद्यालयमें छुट्टीका दिन था । बालक-बालिकायें जहाँ-तहाँ घूमते तथा बैठे हुए दीख पड़ते थे । हमारी गाड़ीमें और भी कितने लोग चढ़े हुए थे । यह लोग प्राय सब विद्यालयके अतिथि थे; जिनमेंसे कोई

१२—मुद्रण

१३—जन-सख्या-नियंत्रण

१४—पुरातत्व-सग्रहालय

१५—रेकर्ड-इतिहास

मनुष्य-गणनाको अधिक बढने न देनेका पिछली दो शताब्दियोंमे बहुत प्रयत्न हुआ है और उसमें पूर्ण सफलता हुई है। इस विभागका सम्बन्ध ऊपरसे ग्राम तक है। प्रत्येक दसवें साल मनुष्य-गणना तो होती ही है इसके अतिरिक्त, जहां दो माससे ऊपरका गर्भ हुआ, उसकी सूचना और गणना भी इस विभाग-द्वारा बराबर पत्रोंमे निकलती रहती है। दो उद्देश्योंको लेकर यह विभाग कायम हुआ था, जन-सख्याकी वृद्धिको रोकना और चिर-रोगी, राजरोगी-द्वारा सन्तान न उत्पन्न होने देना। दोनों ही उद्देश्योंको इसने पूर्ण किया है। आजकल जो एक भी कुष्ट, मृगी, उपदश बवासीर आदि रोगोंवाले आदमी नही मिलते, उसका कारण उक्त प्रयत्न ही है। ऐसी छूतकी बीमारियोंवाले रोगियोंको साधारण जन-समाजसे पहले अलग करके आरामके साथ रखने तथा उनकी चिकित्साका भी पूर्ण प्रबन्ध किया जाता है। इस प्रकार उन्हे अपने ससर्गसे रोग फैलानेका मौका नहीं दिया जाता। दूसरे, आगे सन्तान न हो, इसके लिए उनकी जनन-शक्तिको विशेष निर्धारित उपायोंसे नष्ट कर दिया जाता है। इस प्रकार मनुष्य-जातिके चिर-शत्रु इन बीमारियोंका उन्मूलन किया गया है। इतनेपर भी देखा गया, कि यदि कोई रुकावट न डाली गई, तो मनुष्य-सख्या बेतहाशा बढ़ती ही जा रही है। विशेषज्ञोंकी समितिने पृथ्वीकी

औसत वार्षिक आमदनी निकाल बतलाई। मालूम हुआ, इससे पौने दो अरब से कुछ ही अधिक आदमी सानद जीवन व्यतीत कर सकेंगे। फिर क्या था? यह भी हिसाबसे मालूम हो गया कि इतनी पैदाइशमें इतने तो मरनेवालोंकी जगह पूरा करते है, बाकी इतने केवल वृद्धि करते है। यदि प्रत्येक विवाहित दम्पति दो या तीन सन्तान ही उत्पन्न करें, तो यह वृद्धि रोकी जा सकती है। इसपर फिर वही जनन-शक्ति नाश करनेकी प्रक्रियाका प्रयोग किया गया। प्रत्येक स्त्री-पुरुषके बुढ़ापेके आरामका जिम्मा तो अब राष्ट्रपर है, इसलिए सन्तान उत्पन्न करनेकी बड़ी लालसा तो ऐसे भी कम हो गई है। और उक्त प्रक्रियासे केवल जनन-शक्ति मात्रहीका ह्रास होता है, बाकी सब तो पूर्ववत् ही रहता है। इसलिए इसे लोग स्वयं पसन्द करते है। पहले अनेक पुरुष इसके विरोधी थे। उनका कहना था कि वृद्धि तो अवश्य रोकी जानी चाहिये, किन्तु कृत्रिम उपायसे नही, संयम-नियमसे। दूसरे विचारवालोंका कहना था कि यह संयम इतना सरल कार्य नही, जिसे राष्ट्रके सभी जन पालन कर सकें। जब यह बात है, तो इसपर ढील देना एक प्रकारसे जनवृद्धिको ही पुष्ट करना है। राष्ट्र इस मृगतृष्णां भरोसे अपनी आवश्यकताको पूर्ण करनेसे नहीं रुका रह सकता। अस्तु। इसका फल अब यह हो गया है, कि और कामोंकी भाँति जन-संख्याका घटाना-बढ़ाना भी राष्ट्र-कर्णधारोंके हाथमें वैसेही है, जैसे किसी बिजली-[illegible] जलाना और बुझाना।

तिब्बतसे पश्चिमकी ओर तुर्किस्तानके यारकन्द, काशगर होती ताशकन्द, समरकन्द, फिर अफ़गानिस्तान, ईरान, तुर्की और अरबमें रेलोंका जाल बिछा है। यूराल पर्वतको कितने ही स्थानोंपर पारकर रेलें रूसमें घुसी हैं। इधर कुस्तुन्तुनियामें समुद्रपर पुल बाँध, एसिया और यूरोप मिला दिये गये हैं। फ्रांस और इग्लैण्डके बीचमें भी समुद्रमें सुरंगवाली रेल-लाइनें बिछी हैं। स्वेज नहरकी सुरंगवाली रेलसे एशिया-अफ्रीका जोड़ दिये गये हैं। अफ्रीकामें भी सब जगह रेलोंका जाल है। इधर पिछली शताब्दियोंमें 'सहाराकी' बालुकामय भूमिको अपार जल-राशिसे भरकर एक समुद्र तथा उसके आस-पास लाखों मीलकी मरुभूमिको हरी-भरी कर देना एक बड़ा आश्चर्यमय कार्य हुआ है। अफ्रीकाकी जन-संख्या भी पहलेसे बहुत बढ़ गई है। आधा यूरोप वहाँ पहुँच गया है, इसके अतिरिक्त एशियाके भी बहुतसे आदमी वहाँ चले गये हैं। किन्तु अब वह पुराना वर्ण-भेद और देश-भेद नहीं। सब एक कुटुम्बकी भाँति रहते हैं। हब्शी, यूरोपियन, एशियाई सभी शिक्षा-दीक्षा आदिमें समान हैं और रंग आदिमें भी समान होते जा रहे हैं।

इस प्रकार तो रेल-मार्ग पूर्वीय गोलार्द्धमें बिछा हुआ है। साइबेरियासे बेरिंग समुद्र-स्रोतको सुरंग-द्वारा पार करती हुई गाड़ी उत्तरीय अमेरिकाके अलास्का प्रान्तमें पहुँच जाती है। फिर तो कनाडा, संयुक्त राष्ट्र, मेक्सिको होती, पनामा नहरको सुरंगसे पार करती हुई गाड़ियाँ दक्षिण अमेरिकामें घुस जाती हैं, और कोलम्बिया, पेरू, ब्राजील, बोलिविया, चिली, अर्जेण्टाइन, उरुगाय, पटगोनिया आदि सभी खंडोंमें फैली हुई हैं।

यद्यपि इस प्रकार पृथ्वीका अधिक भाग क्या, आस्ट्रेलिया और अन्य छोटे टापुओं तथा जापानको छोळ सभी भू-प्रदेश रेलोंसे जोळ दिया गया है, किन्तु आसानीके साथ जहाज भी चीजोंके पहुँचानेमें बळा काम करते हैं। इनके अतिरिक्त दूर-दूरकी यात्रायें वायुयानों ही द्वारा होती हैं। मुख्य उत्तरीय और दक्षिणीय ध्रुवोंपर बस्ती हो गई है, जहाँ गर्मी या छ: महीने वाले दिनमें लोग रहते हैं। ज्योतिष-शास्त्रके विशेषज्ञ तथा भौतिक तत्व-वेत्ता वहाँ अधिक जुटते हैं। यात्रा वायुयान-द्वारा होती है। आजकलके लोग स्काटके आत्म-बलिदानकी कथायें भले ही पढ लें, किन्तु क्या उस

यकी कठिनाइयोंका ठीक अनुमान वे कर सकते हैं?

बिहार और पटनाकी यात्रा करते, बीचमें प्रसग-वश यह भी बातें ा गईं। इसके कारण बिहारके आम और लीची ही हैं। इन लगातार आम और लीचीके बागोंमें गुजरते हमलोग आखिर पटना पहुँच ही गये। सूचना पहलेसे पहुँच गई थी। बिहार-शासन-सभाके सभापति साथी यूसुफ कतिपय अन्य सभासदोंके साथ स्टेशनहीपर स्वागतके लिए आये थे। स्वागतके बारेमें एक ही बार लिख देना चाहता हूँ कि प्रत्येक स्थानवालोंने एक दूसरेसे बाजी ले जानेका प्रयत्न किया। जब मैंने नगर देखा तो मालू कि पाटलीपुत्र तो अलग रहा पटनाका भी वह पूर्ववाला आकार बिल्कु पलट गया है। सारे पटना शहरमें केवल पन्द्रह हजार आदमी र अब उन तंग गलियों और सळकोंका नाम-निशान नहीं, न उन चौत मकानोंहीका कुछ पता है। सभी रहनेके मकान ग्रामोंकी तरह ो और वृक्षोंका भी वैसा ही शौक है। इससे जिस जगह, पहले हजार

भारतके प्रान्त

पटनामें बैठकर, यद्यपि मैंने वर्तमान भारतके सभी प्रान्तोंमें दो-दो, चार-चार दिन दिये, किन्तु सभी जगहोंकी बस्ती, रहन-सहन एक-सा ही देखा। यद्यपि मैं रोज अपने रोजनामचेमें अपने आस-पासकी चीजोंके विषयमें लिखता गया हूँ, किन्तु, यहाँ उसका उद्धरण करना पुनरुक्त मात्र समझ छोड़ देता हूँ। अपनी यात्रा-क्रममें, केवल सरसरी तौरसे मोटे-मोटे परिवर्तनोंहीका, संक्षिप्त विवरण देता हूँ।

पटनाके साथ ही बिहार प्रान्तको छोड़, मैं काशि-कोसल प्रान्तके बनारसमें गया। और परिवर्तनोंके साथ बनारसने भी बड़ा परिवर्तन पाया है। न वह काशीकरवटकी करवट है, न कचौड़ी-गली, न उसकी कचौड़ी।

अपने लड़के या लड़की, या किसी सम्बन्धीसे मिलने आया था, कोई ऐसे ही अपनी वार्षिक छुट्टियोंमें मनोरंजनके लिए आया हुआ था। कोई किसी विद्या-सम्बन्धी जिज्ञासासे आया था।

आखिर ट्राम बालक-बालिकाओंके उद्यानके मुख्य द्वारपर पहुँच गई। हम लोग नीचे उतरे। अध्यापिका-वर्गने द्वारपर स्वागत किया। द्वार तथा उसकी सीधमें तीन-तल्ला मकान स्वच्छता-सुन्दरतासे परिपूर्ण है। भीतर मकानोंके अतिरिक्त, एक बड़ा भारी बाग वैसा ही लगा हुआ है, जैसा कि शेदग्रामके शिशु-उद्यानमें, फर्क यही है, कि बालकोंकी संख्या अधिक होनेसे यह एक स्वतंत्र ग्राम-सा मालूम होता है। सोनेके कमरोंके अतिरिक्त पाक-शाला, भोजनागार, चिकित्सालय तथा भाण्डार-घर हैं। भीतर बच्चोंको खुले पानीमें तैरने और नहानेके लिए बहते पानीका एक पक्का कुण्ड है, जिसमें ठहराव पानी नहीं रहता। जगह-जगह बागमें फव्वारे और लतागृह बने हुए हैं। खेलनेके लिए हरी घासोंसे ढँके बड़े-बड़े मैदान हैं। जाड़ेके दिनोंमें स्नानके लिए एक बड़े मकानके भीतर गर्म पानीका कुण्ड है।

शिक्षा देनेवाली सभी महिलायें ही हैं। शिशु-कक्षामें प्रत्येक बालक-बालिकाको तीन वर्ष रहना पड़ता है। पहले बतलाया जा चुका है, कि राष्ट्रीय नियमके अनुसार सभी बालक-बालिकायें तीन वर्षकी अवस्थाके बाद माता-पितासे अलग करके विद्यालयोंमें भेज दिये जाते हैं। सम्पूर्ण शिक्षा तीन कक्षाओंमें विभक्त है। शिशु-कक्षा चौथे वर्षकी अवस्थाके आरम्भ होते ही आरम्भ होकर छठें वर्षकी समाप्तिके साथ समाप्त होती

है। बाल-कक्षा ७वें से शुरू होकर १४वें वर्षमें समाप्त होती है। इसके बाद तरुण-कक्षा १५ से २०वें वर्ष तक होती है। शिशु-कक्षामें शिक्षा प्रायः एक-सी होती है। पुस्तको द्वारा शिक्षाका अधिक व्यवहार नही है, यद्यपि छात्र इसी कक्षामें अक्षर और अकको पहिचानने लगते हैं। शिशु-कक्षाके अन्तिम वर्षमें उन्हे लिखना-पढना भी पळता है। किन्तु ज्यादातर शिक्षा मौखिक होती हैं। प्रत्येक शिक्षणीय विषयको मनोरजक बनाकर इस प्रकार बच्चोके सन्मुख रक्खा जाता है, कि वे स्वयं उसको जाननेके लिए उत्कठित हो जाते हैं। जिस विषयमें जिस बच्चेकी उत्सुकता अधिक देखी जाती है, उसीकी ओर अध्यापिका-वर्ग भी उसका अधिक ध्यान दिलाता है। जितना बालकोकी ज्ञान-वृद्धिकी ओर ध्यान दिया जाता है, उतना ही उनकी शारीरिक उन्नतिका भी ख्याल रक्खा जाता है। यद्यपि छात्रोंके कुस्तीके लिए कई-एक अखाळे छप्परोके नीचे बने हुए हैं, जहाँ नियत समय पर यह छोटे-छोटे पहलवान ताल ठोक-ठोक, अपने करतब दिखलाते हैं, किन्तु अधिकतर दौळ-धूपके खेलो-द्वारा इन्हे दृढ और परिश्रमी बनाय जाता है। कबड्डी, फुटबाल आदि कई प्रकारके खेल होते हैं। इन खेलों नियम बतलाकर उन्हे स्वयं प्रबन्ध करनेको छोळ दिया जाता है। अध्य पिका-वर्ग केवल मार्ग दिखलाता है।

अपने कार्योमें अधिक योग्यता प्रदर्शित करने पर बालक अपनी श्रे ऊपरके नम्बरमें गिने जाने लगते हैं। उनकी योग्यताका पुरस्कार यह गुरुजनोकी शाबाशी है। वस्तु आदिके रूपमें दूसरे प्रकारके पारितोषि जाते। बीस-बीस बच्चोकी टोली होती है, जिसमें एकको बड

नायक स्वयं चुनते हैं। एक-एक टोलीके लिये एक-एक सोनेका कमरा है।

रात्रिमें जब बालक-बालिकायें अपने-अपने बिस्तरों पर लेटते हैं, तो अध्यापिकायें इतिहासके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पुरुषोंकी कथायें सुनाती हैं। इन कथाओंमें सन्-तारीख नहीं रहते। हाँ, यह बता दिया जाता है, कि अशोक बुद्धके बाद हुए थे—चंद्रगुप्त विक्रमादित्य उनके भी बाद। कथाओंकी भाषा सरल, तथा भाव वही लिये जाते हैं, जिन्हें बालक आसानीसे समझ सकें। यह कथायें इतिहास, भ्रमण और विज्ञान आदि सभीके सम्बन्धमें हुआ करती हैं। कभी-कभी छात्र इन्हें स्वयं भी दुहराया करते हैं। कभी अध्यापिका और विद्यार्थी-वर्ग कोई-कोई गीत भी मिलकर गाते हैं। बालकोंको स्वास्थ्य तथा स्वच्छता-सम्बन्धी नियम भी बड़े ध्यान-पूर्वक बतलाये जाते हैं। उन्हें अपने ही नहीं, अपने आसपासको स्वच्छ रखने-रखवानेकी शिक्षा दी जाती है। उन्हें भली प्रकार बतला दिया जाता है, कि केवल तुम्हारी ही स्वच्छता पर्याप्त नहीं है, तुम्हारे अड़ोस-पड़ोसमें भी स्वच्छता होनी चाहिये। अपने यहाँ सफाई करके कभी अपने कूड़ा-करकटको दूसरेके यहाँ न फेंक दो। किसी जगह इस प्रकार कुछ पड़ा हुआ देखकर स्वयं उसे हटा दो, या उपयुक्त व्यक्तिको उसकी सूचना दे दो। उन्हें बड़ोंका आदर और छोटोंसे प्रेम-भाव रखना सिखला दिया जाता है। बालक संसारके लिये जीवन उत्सर्ग करनेवाले पुरुषोंकी कथाओंको बड़े प्रेमसे सुनते हैं। अध्यापिकायें उन्हें बड़े मधुर और हृदय-ग्राहक शब्दोंमें कहती हैं। बालक कितनी ही बार सुनते-सुनते करुणाभिभूत हो आँसू बहाते देखे जाते हैं।

बळी-बळी मूर्तियों और चित्रोंके अतिरिक्त महापुरुषोंकी जीवन-घटनाओंके फिल्म बोलते वायस्कोपों द्वारा भी दिखलाये जाते हैं। बालक इन चलती-फिरती बोलती तस्वीरोंको बळे प्रेमसे देखते सुनते हैं। खेलमें बालक घर बनाते, फुलवाळी लगाते और पचायत करते हैं। प्रसिद्ध नक्षत्रों और राशियोंका उन्हें परिचय कराके उनकी दूरी आदिके सम्बन्धमें मनोरंजक कथायें सुनाई जाती हैं। पृथ्वी तथा सूर्य-सम्प्रदायके अन्य ग्रहों, उपग्रहोंका भ्रमण उन्हें खगोल-गृहमें दिखाया जाता है। इन कथाओंसे मनुष्य-मात्रके प्रति भ्रातृत्व उनके हृदयस्थ करा दिया जाता है।

मृत पशु-पक्षियोंके सग्रहालय-द्वारा भी यहाँ बहुत-सी प्राणिशास्त्र-की बातें बतलाई जाती हैं। कितने ही समय बालकोंको प्राणिशास्त्रीय विद्यालयके जन्तु-सग्रहालयमें ले जाया जाता है। वहाँ उन्हें जीवित प्राणी दिखलाये जाते हैं। यद्यपि इस प्रकार विद्याके अनेक विभागोंमें बालकोंके प्रवेशका मार्ग खोला जाता है, किन्तु यह पूरी तरहसे ध्यानमें रखा जाता है, कि बालक उसमें मानसिक श्रम न अनुभव करें। इन्हीं मनोरंजक रीतियों-से गणितका आरम्भिक ज्ञान भी उन्हें करा दिया जाता है। व्याकरण नाम भी न लेकर भाषाके शुद्धाशुद्धका भी इन तीन वर्षोंमें पर्याप्त ज्ञान करा दिया जाता है। कथाओंकी मनोरंजकताके तारतम्यसे उन्हें भीतर-ही-भीतर भाषाकी सरसता और नीरसताके पहिचाननेका अभ्यास भी हो जाता है। शिशु-उद्यानके भीतर बालकोंकी अपनी गवर्नमेंट है। बालक इसके कार्य-निर्वाहके समय अनेक अद्भुत बुद्धि-चातुर्य प्रदर्शित करते

है। शिशु-वर्गके छात्रोंकी पोशाक जाँघिया, मोजा, जूता, और कोट या कुर्ता है। जाड़ेके दिनोंमें सिर ढाँकनेका गुलबन्द भी पहिनते हैं। कहीं किसी प्रकारके आभूषणका यहाँ नाम नहीं होता, किन्तु वस्त्र, ऋतुके अनुकूल तथा सुन्दर होते हैं। इस पोशाकमें बालक-बालिकायें बड़े फुर्तीले दीख पड़ते हैं।

हमारे जानेपर अपने-अपने नायकोंको सामने किये हुए सब टोलियाँ खड़ी थीं, शिशु-पार्लियामेंटके प्रधान और मंत्रियोंने शिशु-समाजकी ओरसे हमारा स्वागत किया। मेरे कहनेपर अखाड़ेका खेल देखना निश्चित हुआ। बालकोंने स्वयं अपनी-अपनी जोड़ी चुनी। ऐसी दस जोड़ियोंको मैंने निश्चय किया। इनमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय सभी वर्षोंके बालक थे। अखाड़ेपर पहुँचकर पहली जोड़ी प्रथम वर्षके लड़कोंकी छोड़ी गई। इनका नाम कृष्ण और इब्राहीम था। अखाड़ेमें पहुँचनेसे पहले ही इन्होंने कपड़ा उतार कुर्तीका जाँघिया चढ़ाया। पहले तो दोनो दूरसे दाव तकते रहे। आखिर गुत्थमगुत्थी हो गई। बालकोंको लड़नेके कायदे भी बतलाये गये हैं कि सफल होनेपर भी किन-किन अंगों पर चोट करने या पकड़नेसे हार हो जाती है। इब्राहीमने कृष्णको आखिर नीचे कर ही दिया, किन्तु कृष्ण भी एक था। इब्राहीम चित करते-करते हार गया, किन्तु वह चित न हुआ। जब वह इसमें लगा हुआ था, तभी अवसर देख कृष्ण ने ऐसी झपट मारी, कि इब्राहीम चारो खाने चित। दर्शक शिशु-समाज ने आनन्द-ध्वनि की। अब दोनो अलग-अलग खड़े हो गये। इब्राहीमने एक बार और औसर देनेकी प्रार्थना की। कृष्णने कहा—भाई इब्राहीम!

कोई परवाह नहीं। एक बार तो चित कर ही दिया है। यदि अबकी तुमने पछाड़ भी दिया, तो भी हम बराबर ही रहेंगे। अब दोनोंने फिर ताली बजा, भिड़न्त शुरू की। अबकी इब्राहीमने सचमुच कृष्णको ले धरा। आखिर दोनोंकी जोड़ी बराबर गिनी गई। बाद और जोड़ियोंने भी एक-एक करके अपने-अपने करतब दिखलाये। इसके बाद दौड़ और फुटबाल मैच भी हुआ। कुछ लड़कोंने तैराकी भी दिखलाई। अब हमलोग बागकी उस ओर गये, जिधर महापुरुषोंकी मूर्तियाँ थीं। मैंने प्रथम वर्षके बालक ज्ञानसे पूछा—तुम्हें मालूम है, इनमें मार्क्स कौन है। उसने झट जाकर हाथसे पकड़ बता दिया—यह है। तब मैंने पूछा—तुम इनके बारेमें क्या जानते हो ? उसने संक्षेपसे बालकोंके समझने योग्य कितनी ही घटनायें बतलाईं। सारांश यह कि, इन्होंने मानव-सेवाके लिए अनेक कष्ट सहे, किन्तु उसे न छोड़ा। एक बालिकासे फिर मैंने डार्विनके बारेमें पूछा। उसने भी हाथ रखकर, डार्विनकी कथा कह डाली। इसी प्रकार वनस्पति और पशुओंके बारेमें भी प्रश्न किया। उत्तर बहुत सन्तोषजनक मिले। सबसे बढ़कर बात यह देखी, कि बालकोंमें किसी प्रकारका भय या संकोच न था। बालकोंके सोनेके कमरे देखकर भोजनागार और चिकित्सालय आदिको भी देखा। आज मध्याह्न भोजन भी शिशु-मंडलीहीमें हुआ।

हमने बड़े प्रेमसे उनके गीत और किस्से सुने।

इनकी शिक्षा हरी-हरी घासों, फल-फूलोंसे लदे वृक्षों और पशु-पक्षियोंके सहवासमें होती है। बालिकाओंकी स्वच्छता, सुन्दरता और निर्भीकता देखकर मैं कहता था, क्या इन्हींकी भाँति बीसवीं शताब्दीकी भी स्त्री-

जाति थी। पुरुष-जातिने इनकी शक्तिको मूर्खतासे विकसित होनेसे रोक दिया था। उनको यह न मालूम था कि इसमे उनकी अपनी भी हानि है। मैंने कहा—इन्हींमें आखिर उन अस्पृश्योकी भी सन्तानें है, जिन्हे उस समयके लोग यदि मनुष्य कहते थे, तो मानो बळी कृपा करते थे। अन्यथा उन्हे पशुओंसे भी बदतर समझा जाता था। कुत्तेको गोदमे बिठानेमें सकोच न था, किन्तु मजाल क्या कि किस्मतके मारे वह पुरुष पासमें फटक सके। ओह! कितने करोळ ऐसे मनुष्योके अमूल्य जीवन बरबाद कर दिये गये? अन्यायका कुछ ठिकाना था? उन अभागोंको गाँवमे कुआँ रहनेपर भी कुएँका पानी पीनेको नसीब न होता था। और दोषोके साथ उनपर सबसे बळा दोष यह लगाया जाता था, कि वे मैला साफ करते है—वह मुर्दे पशुओंको ले जाते है इत्यादि। किन्तु उन दोष-दर्शकोंको यह न सूझता था, कि समाजकी ऐसी सेवाके लिए—जिसे कि करनेके लिये और लोग तैयार न थे, तथा जिसपर समाजकी सुस्थिति निर्भर है—उनका कृतज्ञ होना चाहिये, न कि उलटा उन्हे तिरस्कारका पात्र बनाना चाहिये। खैर! वह भी एक स्वप्नका समय था, यद्यपि वह स्वप्न हजारों वर्षों लम्बा-चौळा था। आखिर मनुष्योने समझा—एक दूसरेको छोटा बनानेसे हमें स्वयं नीच बनना पळता है। मगर फिर उस स्वप्नको न देखे, उस नमें या मोह-निद्रामे न पळे।

इस प्रकार आज शिशु-शालाका निरीक्षण समाप्त हुआ। अध्यापिकायें सभी उत्तम योग्यताकी है। सोचिन बीरा जिस प्रकार कन्याओंके लिए आदर्श है, वैसे ही बालकोंके लिए सच्ची निर्माता माता है। सब देखकर

प्राय तीन बजे स्मशान अतिथि-निवासमें लौट आये। बादमें फिर बाल-बच्चोंका देखना हो गया। इसके बाद बहुत देर तक विद्यालयके दो विद्यार्थियोंसे इतिहासके बारेमें वार्तालाप होता रहा।

११

शिक्षा-पद्धति : बाल-कक्षा

आज सवेरे ट्रामपर सवार हो, हमलोग बाल-कक्षाकी ओर चले। यह और भी दूर, अर्थात् दो कोसपर थी। पहले कहे अनुसार बाल-कक्षा ८ वर्षकी अर्थात् ६ से १४ तककी है। इसमें दो-दो वर्षकी उपकक्षायें बनाई गई हैं, जिनके लिए पृथक्-पृथक् निवासोद्यान हैं। बाल-कक्षामें सक्षेपसे साहित्य, गणित, भूगोल, व्याकरण, धर्म, संगीत, आलेख्य, कृषि, गोरक्षा आदि विषय हैं। किन्तु यह सभी प्रत्येक छात्रको पढ़ना आवश्यक नहीं है। विद्याओंकी ओर प्रलोभन-द्वारा प्रवृत्ति कराकर देखनेपर जिधर बालकका स्वाभाविक रुझान नहीं देखा जाता, उधर बल नहीं दिया जाता। उदाहरणार्थ इस श्रेणीमें प्रविष्ट हो, तीसरेसे पाँचवें वर्ष तक प्रत्येक बालकको

संस्कृत आदि किसी भाषाके सिखानेकी प्रथा है। इन भाषाओंके सिखानेका वातावरण इस प्रकारका बनाया गया है, (यह पहले सूचित किया गया है) जहाँ बालकको छोटे शिशुओंकी भाँति भाषा सीखनेकी अनुकूलता रहती है। जबर्दस्ती मस्तिष्कपर लादनेका प्रयत्न नहीं किया जाता। किन्तु देखनेपर जब मालूम हो जाता है, कि बालककी उधर रुचि नहीं है, तो फिर बल नहीं दिया जाता। बाल-कक्षामें दाखिल होनेके साथ ही बालकोंको उनके नित्य-कृत्य बतला दिये जाते हैं।

बाल-कक्षामें पहुँचते ही वहाँ भी अध्यापक-अध्यापिका-वर्ग तथा विद्यार्थी-समाजकी ओरसे हमारा स्वागत हुआ। सब बालक-बालिका श्रेणीमे खड़े थे। पोशाक सबकी जाँघिया और कुर्त्ता था। जाड़ेमें सिर ढाँकनेके लिए गर्म वस्त्र, एवं जूता-मोजा भी मिलता है। एक-एक उपकक्षाक एक-एक गाँव बसा हुआ है, जहाँ भोजनालय, संस्थागारके अतिरि भाण्डार भी रहता है। यहाँ भी तैरकर नहानेका कुंड है तथा अखाड़ों अ खेलोंके मैदानोंका पूरा प्रबन्ध है। मकान तीन-महले है। ऊपर ज लिए बिजलीका झूला है। २०-२० विद्यार्थियोंके सोनेके लिए ए कमरा मिलता है। लिखने-पढने, प्रकाश, पुस्तक रखने आदि सबका प्रबन्ध है। निद्रासे उठकर शौचादि जाना पाँच ही बजे होता है। स्नान निवृत्त होकर बालक कलेवा करते हैं। भोजनके लिए जो चार सम हैं, वही बाल-कक्षाके लिए भी हैं—शिशु-कक्षाकी भाँति छः बा अध्यापनके लिए यहाँ पृथक् पाठशाला है। बैठनेके लिए बेंचें है

यद्यपि बाल-कक्षासे नियमानुसार पढ़ाई शुरू होती है, तो

दक्षिपर बनानेकी ओर खूब ध्यान रहता है। इस समय मनोहर भाषामें लिखी पुस्तकों, नाटकों और बायस्कोपोंद्वारा इतिहासकी शिक्षाको भी जारी रखा जाता है। नाटकोंको बालक स्वयं अभिनीत करते हैं। विज्ञान और ज्योतिष-सम्बन्धी जिज्ञासाओंकी पूर्तिके लिए उत्कंठा होनेपर दूरवीक्षण, अणुवीक्षण एवं प्रयोगशालाओंका भी सहारा लिया जाता है। कृषि, गो-रक्षा आदि विद्यायें क्रियात्मक ही अधिकतर सिखाई जाती हैं, जिसके लिए खेत तथा गोशाला आदिका प्रबन्ध है। बाल-वर्गके प्रथम दो वर्षोंको समाप्तकर विद्यार्थियोंको सार्वभौमी भाषाकी शिक्षा दो वर्ष तक दी जाती है। इस समय और विषय पूर्ववत् ही मातृ-भाषामें चलते रहते हैं। सिर्फ बालकोंका निवास सार्वभौमी छात्रावासमें होता है, जहाँ सब लोग केवल वही भाषा बोलते हैं।

यह सार्वभौमी भाषा क्या है? यह एस्पेरेंटो भाषाका और भी परिमार्जित रूप है। एस्पेरेंटोमें प्रयुक्त होनेवाले आर्टिकल्स (Articles) को उड़ा दिया गया। बिल्कुल पन्द्रह नियमोंमें इसका सारा व्याकरण समाप्त होता है। लिंग, विभक्ति, प्रत्ययमें अटल नियम है, जिनका अपवाद कहीं नहीं होता। जैसे वचन दो ही हैं—एक वचन, बहुवचन। लिंग तीनों हैं, किन्तु निर्जीव पदार्थोंमें सभीके लिए नपुंसक लिंगका प्रयोग होता है। स्त्रीलिंगवाले सभी शब्द आ, ई, ऊ, अन्तवाले होते हैं तथा केवल सजीव ही के लिए प्रयुक्त होते हैं। ऐसे ही अन्य स्वर-अन्तवाले शब्द सजीवके लिए आनेपर पुंल्लिंग होते हैं। क्रिया-रूपोंके लिए सीधे-सीधे चार काल हैं, अर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान और आज्ञा। वचन यहाँ भी दो हैं। बाकी पुरुष

ज्यों-के-त्यों हैं। धातुओंका चुनाव खास तौरसे हुआ है। पहले पाली, प्राकृत ज़ेन्द, और संस्कृत भाषाओंमें जो धातु एक-से हैं, उन्हें छाँट लिया गया है। अब इन धातुओंसे ग्रीक, लैटिन, एवं ट्यूटानिक (Teutonic), रोमन (Roman), स्लाव (Slav) और केल्टिक (Celtic) भाषाओंकी धातुओंसे तुलना करके जो धातु बहुत-सी भाषाओंमें सम्मिलित हैं, उन्हें चुन लिया गया है। सार्वभौमीमें इन्हीं धातुओंसे बने शब्दों और क्रियाओंको लिया गया है। वैज्ञानिक शब्द जो अब तक यूरोपीय भाषाओंमें प्रचलित थे, वही स्वीकार कर लिये गये हैं, केवल उनके अन्तमें उनके लिंगके अनुसार प्रत्यय लगा दी गई है। अपने जीवनमें राष्ट्रीय व्यवहारकला या भ्रमण आदिके लिए इस भाषाकी बड़ी आवश्यकता है। इसलिए बाल-कक्षामें नवें और दसवें वर्षमें इसकी शिक्षा अनिवार्य-सी है। सार्वभौमी छात्रावासमें जानेपर मुझे सभी बालक उसीमें वार्तालाप करते मिले। उस समय दसवें वर्षवालोंने मेरे आनेके उपलक्षमें अपनी प्रसन्नता इसी भाषामें प्रकट की। जिसके बहुतसे शब्द मुझे समझमें आने लगे थे। लोगोंने बतलाया, यह भाषा भूमडल-वासियोंकी प्राय सभी मातृ-भाषाओंका पूर्ण बीज रखनेसे सभीके लिए आसान है। चीन, जापान, स्याम, तिब्बत, बर्मा आदि देशोंमें भी इसका खूब प्रचार है। × × × × × × × × भारतमें सभी जगह भारती भाषा इस समय मातृ-भाषा है। देशावरसे बगदाद तक बोली जानेवाली फारसी या उसकी बहिन भी इसके है। यूरोपकी भाषाओंकी भी वही दशा है, जिनका प्रचार यूरोप ही अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा भूमडलके अन्य द्वीपोंमें है।

यह पहले कहा जा चुका है, कि आजकलकी शिक्षा-प्रणालीका मूल सूत्र है बालककी स्वाभाविक जिज्ञासा रखनेवाली बुद्धिको उसके अभीष्ट लाभमें मदद पहुँचाना। इसीलिए परीक्षा करके जिस ओर बालककी स्वाभाविक रुचि होती है, उधर ही उसकी शिक्षाका मार्ग खोला जाता है। दो शताब्दियोंके अनुभवने बतला दिया है, कि यही वास्तविक शिक्षा है। जबर्दस्ती ठोंक-पीटकर वैद्य-राज बनानेवाले विचारने अनेक स्थानोंपर बाधा पहुँचाई थी। पुराने समयके लोग भी खूब थे—खासकर २०वीं शताब्दीके। जिस प्रकार माता-पिता पुत्रकी इच्छा और उद्देश्यको देखे बिना बाल्यपनहीमें उसका जोड़ा उसके गले बाँधते थे, वैसे ही यह भी निश्चय कर डालते थे कि मेरा लड़का वकील होगा, मेरा डाक्टर इत्यादि। फल इसका यह होता था कि कितनी ही बार बालकको अपनी विद्या, रोचक कौन कहे, कुनैनकी गोलीसे भी कड़वी मालूम होती थी, और उसका कोई शुभपरिणाम न होता था। किन्तु अब मामूली शिष्टाचार और लोक-व्यवहारका उपयोगी ज्ञान तो बालकोंको देखते-देखते और सुनते-सुनते हो जाता है। और विद्याकी बात उनकी प्रवृत्तिपर आरम्भ होती है। इस प्रकार गणित और ज्योतिषकी ओर प्रवृत्ति रखनेवाले बालक उतना ज्ञान बाल्य-कक्षाहीमें सम्पादन कर लेते हैं, जितना बीसवीं शताब्दीके उस विषयके एम० ए० भी नहीं जानते थे। अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति, अर्धमिति, चलनकलन आदि सभी गणितकी शाखाओंमें उनका पूरा अधिकार हो जाता है। वह अपने पाठ्य विषयमें नित्य नवीन उत्सुकता और उत्साहके साथ संलग्न रहते हैं। उनका पठित विषय बहुत कुछ

ही बाल-कक्षामें भी एक-एक सोनेके कमरोमें बहुत-से विद्यार्थी सोते हैं।

विद्यार्थियोको पुस्तके तथा अन्य सामान रखनेके लिए अलग-अलग आलमारियाँ है। पढनेके लिए पृथक् भी पाठशालाका विशाल भवन है। खेलने-कूदने, दौड़ने, तैरने आदिके बड़े-बड़े मैदान तथा तालाब है। बालकोका शरीर देखनेहीसे पता लगता है कि उनकी शारीरिक उन्नतिपर कितना ध्यान दिया जाता है। सब बातोंका पूरा निरीक्षण करके दोपहरका भोजन भी हमने यही ग्रहण किया।

चौदह वर्षकी अवस्थामें बालिकाओको इतना ज्ञान हो जाता है, जो कि २०वी शताब्दीमें पर्याप्तसे भी कही अधिक कहा जाता। बालकोकी अपेक्षा बालिकायें संगीत, आलेख्य, चिकित्सा और साहित्यमें अधिक रुचि रखती तथा योग्य भी निकलती है। बालिकाओकी अवस्था देखकर बीसवी शताब्दीके वे आदमी भी अपने विचार बदल डालते, जिन्हे कई निर्बलतायें स्त्री-जातिमें स्वाभाविक मालूम होती थीं। मुझे यहाँके शिक्षण और योग्यताको देखकर निश्चय हो गया कि आजकलके मानव-जगत्की बहुत-सी न्यामतें इसीकी बदौलत हैं। एक ओर तो हजारो झगड़ो और आपत्तियो की जड़ पारस्परिक असमानता उठा दी गई और दूसरी ओर ऐसी सर्व-गुण-भूषित शिक्षा, फिर क्यों न मनुष्यलोक पुराने ख्याली देवलोकसे भी अच्छा हो जाये ?

उपस्थित रहता है। साधारण ज्योतिषकी शिक्षा भी उनकी प्रथम श्रेणीसे आरम्भ रहती है। उससे अनेक साधन जहाँ-तहाँ भिन्न-भिन्न शक्तियोंकी आवश्यकता प्रतीत होती है, उधर बड़े आनन्दसे पढ़ प्रवृत्त होते हैं। साहित्य, भाषा, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदिमें भी यही बात है, यद्यपि कोई बालक इन विद्याओंके साधारण ज्ञानसे भी सर्वथा अनभिज्ञ नहीं रहता। कारण, उनके लिखने व्यवहारमें, खान-पानमें, संगतमें उनकी आवश्यकता पड़ती है। भविष्य-जीवनमें भी उनका साधारण ज्ञान अनिवार्य मालूम होनेसे वे उपर भी थोड़ा-बहुत परिश्रम स्वयं कर डालते हैं; किन्तु प्रकृतिके अनुकूल न होनेसे वह अधिक दूर तक उसमें नहीं जाते। बीसवीं शताब्दीमें जैसे खास-खास ही पाठ्य पुस्तकें रख दी जाती थीं, वैसा अब नहीं है। कौन-सी पुस्तक अब पढ़नेको देनी चाहिये, यह उस अध्यापककी इच्छापर निर्भर है, जो अपने विद्यार्थीकी प्रकृतिका बराबर निरीक्षण कर रहा है। समान प्रकृतिवाले छात्रोंकी टोलियाँ बनी रहती हैं, जिनके लिए प्रकृत विषयका सर्वांग अध्यापक रहता है। विद्याके लिए अपेक्षित सभी सामान मौजूद रहते हैं। इस प्रकार शिक्षामें आजकी चाल आकाश-विमानोंहीकी भाँति तेज है।

बाल-कक्षाकी सभी बस्तियोंको हमने घूम-घूमकर देखा। सिर्फ इसी एक कक्षाके पाँच बड़े-बड़े ग्राम हैं। हर एक ग्राममें निवासियोंकी आवश्यकताके सभी सामान मौजूद रहते हैं। अन्यत्र जैसे मैंने सब जगह यह नियम-सा देखा था कि मकान कोठेवाले नहीं होते, यहाँ विद्यालयमें सभी मकान तीन-महला, चार-महलासे ऊपरहीके हैं। शिशु-कक्षाकी बस्तियोंकी भाँ

ही बाल-कक्षामें भी एक-एक सोनेके कमरोमें बहुत-से विद्यार्थी सोते है।

विद्यार्थियोको पुस्तके तथा अन्य सामान रखनेके लिए अलग-अलग आलमारियाँ हैं। पढ़नेके लिए पृथक् भी पाठशालाका विशाल भवन है। खेलने-कूदने, दौड़ने, तैरने आदिके बड़े-बड़े मैदान तथा तालाब है। बालकोका शरीर देखनेहीसे पता लगता है कि उनकी शारीरिक उन्नतिपर कितना ध्यान दिया जाता है। सब बातोंका पूरा निरीक्षण करके दोपहरका भोजन भी हमने यही ग्रहण किया।

चौदह वर्षहीकी अवस्थामें बालिकाओंको इतना ज्ञान हो जाता है, जो कि २०वी शताब्दीमें पर्याप्तसे भी कहीं अधिक कहा जाता। बालकोंकी अपेक्षा बालिकायें संगीत, आरोग्य, चिकित्सा और साहित्यमें अधिक रुचि रखती तथा योग्य भी निकलती है। बालिकाओंकी अवस्था देखकर बीसवीं शताब्दीके वे आदमी भी अपने विचार बदल डालते, जिन्हे कई निर्बलतायें स्त्री-जातिमें स्वाभाविक मालूम होती थी। मुझे यहाँके शिक्षण और योग्यताको देखकर निश्चय हो गया कि आजकलके मानव-जगत्‌की बहुत-सी न्यामतें इसीकी बदौलत हैं। एक ओर तो हजारों झगड़ों और आपत्तियोंकी जड़ पारस्परिक असमानता उठा दी गई और दूसरी ओर ऐसी सर्व-गुण-भूषित शिक्षा, फिर क्यों न मनुष्यलोक पुराने ख्याली देवलोकसे भी अच्छा हो जाये?

१२

शिक्षा-पद्धति : तरुण-कक्षा

पूर्व महीनेमें मैं निम्न विद्यालयके एक-दो विभागोंका निरीक्षण करता रहा। और १२ दिन ऐसा करते रहनेपर एक बार सरसरी तौरसे सबको देख गया। शिशु-कक्षा और बाल-कक्षाकी शिक्षा जिस प्रकार अनेक विषयोंमें होती है (यद्यपि उसमें विद्यार्थीकी स्वाभाविक प्रवृत्तिका पूरा ध्यान रखा जाता है) वैसा मिश्रशिक्षण तरुण-कक्षामें नहीं है। संसारके व्यवहारोंको अच्छी तरह चलाने, तथा मनुष्यकी वैसी जिज्ञासा भी होनेसे, प्रथम दो कक्षाओंमें कुछ सर्वतोमुखी-सी शिक्षा दी जाती है, किन्तु तरुण-कक्षामें शिक्षा पानेवालोंके लिए अनेक विद्यालय हैं, जो विद्याकी एक शाखाकी शिक्षा देते हैं। विद्यार्थी अब केवल उसी विद्याका अध्ययन करता है, जिसकी ओर उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है और जिसे उसने

पिछले वर्षोंमें भी मुख्य लोगोंने, औरोंको गौण रखते हुए, पढ़ा है। यद्यपि ऐसे बालकोंकी संख्या बहुत कम होती है, किन्तु हैं ऐसे भी विद्यार्थी, जो व्यवहारोपयोगी ज्ञानसे इसलिए अनभिज्ञ रह जाते हैं, कि उनकी रुचि न होनेसे उधर उनको परिश्रम नहीं कराया जाता।

नालन्दा विद्यालयमें पृथक्-पृथक् विषयोंके पन्द्रह विद्यालय हैं, जो भाषा-पुरातत्व, ज्योतिष, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, संगीत, आलेख्य, वास्तु (सिविल इंजीनियरिंग), आयुर्वेद, वनस्पति, प्राणि, कृषि, यांत्रिक एवं शिक्षण विद्यालयोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। अध्यापक अपने-अपने विषयके पूर्ण ज्ञाता हैं। भाषा-पुरातत्व विद्यालयमें इतिहासकी मौलिक सामग्रीसे परिचय एवं उसके एकत्रित करनेका ढंग बतलाया जाता है। यह बीसवीं शताब्दी नहीं, बाइसवीं शताब्दी है। भूमि, बालू अथवा समुद्रोंके नीचे पड़ी हुई बहुत-सी सामग्रियाँ बहुतायतसे इधर मिली हैं। अनेक पुरानी जातियोंके धर्म, आचार-विचार तथा इतिहासपर इधर बहुत प्रकाश पड़ा है। भारत, मिश्र, असुर, बरदान, ईरान, मेक्सिको, ब्राजील आदि अनेक देशोंकी प्राचीन सभ्यताकी परिचायक अनेक सामग्रियाँ हाथ लगी हैं। राष्ट्रने इन सामग्रियोंके प्राप्त करने और रक्षित रखनेमें कोई कसर नहीं उठा रखी है। जहाँ प्राचीन खंडहरोंको खोदने, चीजोंकी रक्षाके लिए सुरक्षित स्थान बनानेमें लाखों आदमी काम कर रहे हैं, वहाँ हजारों विद्वान दिन-रात उनके रहस्यके खोलनेके लिए भी परिश्रम कर रहे हैं। भारत की प्राचीन सभ्यता और इतिहासके लिए मध्य एसिया, तिब्बत, हिमालय, जावा, बाली, स्याम, सुमात्रा और लंका (सीलोन) तक छान मारा गया है। इस काममें नालन्दा-

१२

शिक्षा-पद्धति : तरुण-कक्षा

पूर्व सप्ताहोंमें मैं नित्य विद्यालयके एक-दो विभागोंका निरीक्षण करता रहा। और १२ दिन ऐसा करते रहनेपर एक बार सरसरी तौरसे सबको देख गया। शिशु-कक्षा और बाल-कक्षाकी शिक्षा जिस प्रकार अनेक विषयोंमें होती है (यद्यपि उसमें विद्यार्थीकी स्वाभाविक प्रवृत्तिका पूरा ध्यान रखा जाता है) वैसा मिश्रशिक्षण तरुण-कक्षामें नहीं है। संसारके व्यवहारोंको अच्छी तरह चलाने, तथा मनुष्यकी वैसी जिज्ञासा भी होनेसे, प्रथम दो कक्षाओंमें कुछ सर्वतोमुखी-सी शिक्षा दी जाती है, [illegible] कक्षामें शिक्षा पानेवालोंके लिए अनेक विद्यालय हैं, जो शाखाकी शिक्षा देते हैं। विद्यार्थी अब केवल उसी करता है, जिसकी ओर उसकी स्वाभाविक प्रवृ

पिछले वर्षोंमें भी मुख्य तौरसे, औरोको गौण रखते हुए, पढा है। यद्यपि ऐसे बालकोकी सख्या बहुत कम होती है, किन्तु है ऐसे भी विद्यार्थी, जो व्यवहारोपयोगी ज्ञानसे इसलिए अनभिज्ञ रह जाते है, कि उनकी रुचि न होनेसे उधर उनको परिश्रम नही कराया जाता।

नालन्दा विद्यालयमें पृथक्-पृथक् विषयोंके पन्द्रह विद्यालय हैं, जो भाषा-पुरातत्त्व, ज्योतिष, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, सगीत, आलेख्य, वास्तु (सिविल इजीनियरिंग), आयुर्वेद, वनस्पति, प्राणि, कृषि, यात्रिक एवं शिक्षण विद्यालयोंके नामसे प्रसिद्ध हैं। अध्यापक अपने-अपने विषयके पूर्ण ज्ञाता है। भाषा-पुरातत्त्व विद्यालयमें इतिहासकी मौलिक सामग्रीसे परिचय एवं उसके एकत्रित करनेका ढग बतलाया जाता है। यह बीसवी शताब्दी नही, बाइसवी शताब्दी है। भूमि, बालू अथवा समुद्रोके नीचे पड़ी हुई बहुत-सी सामग्रियाँ बहुतायतसे इधर मिली है। अनेक पुरानी जातियोके धर्म, आचार-विचार तथा इतिहासपर इधर बहुत प्रकाश पड़ा है। भारत, मिश्र, असुर, कल्दान, ईरान, मेक्सिको, ब्राजील आदि अनेक देशोकी प्राचीन सभ्यताकी परिचायक अनेक सामग्रियाँ हाथ लगी है। राष्ट्रने इन सामग्रियोके प्राप्त करने और रक्षित रखनेमें कोई कसर नही उठा रखी है। जहाँ प्राचीन खडहरोंको खोदने, चीजोंकी रक्षाके लिए सुरक्षित स्थान बनानेमें लाखो आदमी काम कर रहे है, वहाँ हजारो विद्वान दिन-रात उनके रहस्यके खोलनेके लिए भी परिश्रम कर रहे हैं। भारत की प्राचीन सभ्यता और इतिहासके लिए मध्य एशिया, तिब्बत, हिमालय, जावा, बाली, स्याम, सुमात्रा और लका (सीलोन) तक छान मारा गया है। इस काममें नालन्दा-

विद्यालयकी तरुण-कक्षा, एवं विद्यालयकी शिक्षा समाप्त कर और अधिक पढ़नेवाले विशेषज्ञोंकी श्रेणीमें भारतसे बाहर लंका, बर्मा, स्याम, जावा, चीन, जापान, तिब्बत आदि देशोंके विद्यार्थी बहुत अधिक संख्यामें हैं। इन देशोंके आचार्योंमें आजकल नालन्दाके शिक्षितोंकी काफी संख्या है। संसारमें कोई विद्या नहीं, जिसकी उच्च शिक्षा विद्यालय न देता हो। ऐसे ही संसारका शायद ही कोई कोना होगा, जहाँ नालन्दाका छात्र न हो।

दूसरेसे दूर-दूरपर हैं। उनके बीचमें या तो मै
फलोंके कोसों लम्बे बाग। सभी विद्यालय
अन्य सामग्रियोंसे युक्त है। जहाँ विज्ञान-
प्रयोगशालासे सुसज्जित है; वहाँ वनस्पति :
साथ बड़े-बड़े वनस्पति-उद्यान एव प्राणि-
विद्यालय सांगोपांग विद्या-वितरण कर :
छात्रावास उनके पासहीमें हैं। छात्रावास :
और बालिकाओंके छात्रावास तथा विद्या
भेद ही उठा-सा दिया गया है।

विद्यालयकी बस्तियोंमें भोजन वन
आदिके सुधारनेके लिए कुछ और लो
अलग बस्तियोंमें हैं। लड़कोंके वस्त्र घ
हैं। इसी तरह गोपाल-ग्राम भी पास,
पुस्तकोंके छापनेके लिए जो 'नाल
उसका काम बहुत बढ़ गया है। ि
एक पत्र निकलते हैं। नालन्दाके पुर
या गया है। भैरवजीके नामसे
रनिंग अब एक बहुत अ
भूमि अब और र

विद्यालयकी तरुण-कक्षा, एव विद्यालयकी शिक्षा समाप्त कर और अधिक पढनेवाले विशेषज्ञोकी श्रेणीमे भारतसे बाहर लका, बर्मा, स्याम, जावा, चीन, जापान, तिब्बत आदि देशोंके विद्यार्थी बहुत अधिक संख्यामें है। इन देशोंके आचार्योमें आजकल नालन्दाके शिक्षितोकी काफी सख्या है। ससारमें कोई विद्या नहीं, जिसकी उच्च शिक्षा विद्यालय न देता हो। ऐसे ही ससारका शायद ही कोई कोना होगा, जहाँ नालन्दाका छात्र न हो।

दूसरेसे दूर-दूरपर है। उनके बीचमें या तो मैदान हैं, या आम-लीची आदि फलोंके कोसों लम्बे बाग। सभी विद्यालय पुस्तकालयों तथा अपेक्षित अन्य सामग्रियोंसे युक्त है। जहाँ विज्ञान-विद्यालय रसायनशाला तथा प्रयोगशालासे सुसज्जित है, वहाँ वनस्पति और प्राणिशास्त्रके विद्यालयोंके साथ बड़े-बड़े वनस्पति-उद्यान एवं प्राणि-संग्रहालय हैं। इस प्रकार सभी विद्यालय सांगोपांग विद्या-वितरण कर रहे हैं। उन-उन विद्यालयोंके छात्रावास उनके पासहीमें हैं। छात्रावास क्या है, एक-एक ग्राम है। बालकों और बालिकाओंके छात्रावास तथा विद्यालय इकट्ठे ही हैं। स्त्री-पुरुषका भेद ही उठा-सा दिया गया है।

विद्यालयकी बस्तियोंमें भोजन बनानेवाले तथा स्वच्छता एवं मशीनों आदिके सुधारनेके लिए कुछ और लोग नियुक्त हैं, जिनके निवास-स्थान अलग बस्तियोंमें हैं। लड़कोंके वस्त्र धोने एवं कपड़ा सीनेके गाँव भी पृथक् हैं। इसी तरह गोपाल-ग्राम भी पास, किन्तु विद्यालयकी सीमाके बाहर है। पुस्तकोंके छापनेके लिए जो 'नालन्दा प्रेस' पहले खोला गया था, अब उसका काम बहुत बढ़ गया है। भिन्न-भिन्न शास्त्रोंके यहाँसे मासिक कई एक पत्र निकलते हैं। नालन्दाके पुराने स्तूपों और इमारतोंको पूरा सुरक्षित [illegible]या गया है। भैरवजीके नामसे २०वीं शताब्दीके ग्राम्यजनोंमें प्रसिद्ध [illegible]र्तिपर अब एक बहुत अच्छी छतरी लग गई है। वह विशालकाय, [illegible]र्ति अब और भी अधिक मनोहर मालूम होती है। उसके [illegible]र अब नया-सा मालूम होता है। सूर्यनारायण और उसके [illegible]रही है।

विद्यालयकी तरुण-कक्षा, एव विद्यालयकी शिक्षा समाप्त कर और
अधिक पढनेवाले विशेषज्ञोंकी श्रेणीमें भारतसे बाहर लका, वर्मा, स्याम
जावा, चीन, जापान, तिब्बत आदि देशोंके विद्यार्थी बहुत अधिक संख्याम
हैं। इन देशोंके आचार्योंमें आजकल नालन्दाके शिक्षितोंकी काफी संख्या
है। ससारमें कोई विद्या नहीं, जिसकी उच्च शिक्षा विद्यालय न देता हो
ऐसे ही ससारका शायद ही कोई कोना होगा, जहाँ नालन्दाका छात्र न हो

भूमडलमें जमीदार है, न सेठ-साहूकार है, न राजा है, न प्रजा, न धनी है, न निर्धन; न ऊँच है, न नीच। सारे भूमडलके निवासियोंका एक कुटुम्ब है। पृथ्वीकी सभी स्थावर-जंगम सम्पत्ति उसी कुटुम्बकी सम्पत्ति है। दैनिक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए जिन-जिन पदार्थोंकी आवश्यकता है, उनके उत्पादन और सग्रहके लिए अपनी-अपनी योग्यतानुसार सभी सचेष्ट होते है। श्रम कम और उत्पत्ति अधिक होनेके लिए कार्यों और श्रमोंके बहुत-से विभाग कर दिये गये है। बीसवी शताब्दीके लोगोंको आजकलका विभाग विचित्र-सा मालूम होता। अब तो जीवनकी एक भी आवश्यक वस्तु शायद ही एक कोई गाँव, बिना दूसरेकी सहायताके, उत्पन्न करता हो। जहाँ पहलेका एक ग्राम अनेक प्रकारके अनाज, साग-तरकारियोंके अतिरिक्त कितने ही छोटे-छोटे शिल्पोंका भी व्यवसाय करता था, वहाँ आजका यह विचित्र गाँव है, जो आकार, सख्या और खर्चमें उससे कई गुना बड़ा होने पर भी एक भी चीज पूरे तौरसे पैदा नही करता। यदि गेहूँ पैदा करता है, तो आटा दूसरी जगह पीसा जाता है, यदि ऊख पैदा करता है, तो चीनी दूसरी जगह बनती है, यदि दूध पैदा करता है, तो घास-दाना दूसरी जगहसे मँगाता है; यदि सिलाई करता है, तो कपड़ा दूसरी जगहसे मँगाना होता है। मशीनोंकी ढलाई-सुघराई तो खैर दूसरी जगह पहले भी होती थी। आज-कलका सारा मनुष्य-समाज जिस प्रकारकी जीवन-सामग्रियोसे परिपूर्ण है, उन सबके लिए यदि ऐसा न किया जाता, तो बहुत समयकी आवश्यकता होती। आज जिस प्रकार कुल चार घंटे काम करके ही मनुष्य सारी आवश्यकताओंको प्राप्त कर बाकी बीस घंटे जीवनके अन्य

आनन्दोंके उपभोगमें लगाता है, वैसा वह कब कर सकता था? यं
न उपयोग करते, तो इतना प्राप्त करना असम्भव था, चाहे सारा भी
उसीके लिए क्यों न समर्पण करना पळता। यन्त्रोंके उपयोगको भी अ
लाभदायक बनानेके लिए यह श्रम-विभाग उपयुक्त सिद्ध हुआ है।
पहले भी श्रम-विभाग कुछ तो हुआ ही था, किन्तु आजकलके लोगोंने
सूत्रको और भी विस्तृत अर्थमें प्रयोग किया है।

पहले शासनोंमें रचनात्मक कार्योंकी अपेक्षा ध्वंसात्मक कार्यों
मात्रा अधिक थी। जब कभी लळाई छिळ जाती थी, तब तो मानों इ
ज्वालामुखी फूट निकलता था।

इस विषयमें और कहनेसे पूर्व उचित प्रतीत होता है, कि वर्त
शासन-व्यवस्थाके ढाँचेका कुछ जिक्र कर दिया जाय। सारे भूमंड
शासन-व्यवस्थाका मूल-ढाँचा ग्रामकी शासन-व्यवस्थाको समझि
ग्राम-शासन-सभा—या जिसे संक्षेपमें ग्राम-सभा कहते हैं—में अ
जन-संख्याके अनुसार सैकळे पीछे एक पंच चुननेका अधिकार है।
किसी गाँवमें पाँच हजार आदमी हैं, तो वहाँकी ग्राम-सभाके पचास सभा
होंगे। इस चुनावमें सम्मति देने तथा खळा होनेके लिए उस ग्रामके प्र
नर-नारी समान भावसे योग्य हैं, यदि कोई मानसिक अथवा शारी
असमर्थता इसमें बाधक न हो। यह सभासद् फिर अपना सभापति
ग्रामणी, तथा × × × × सोलह सभासदोंकी कार्य-कारि
समिति बनाते हैं। × × × × × × × ×
× × × × इसी कार्य-कारिणीके हाथमें ग्रामकी आवश्यक

और उत्पत्तिके देख-रेख तथा प्रबंधका भार रहता है। पहले एक बार कहा जा चुका है, कि ग्रामकी प्रत्येक श्रेणीका एक नायक होता है। यह नायक सौ परिवारों-द्वारा चुना जाता है, जिनमें अधिक-से-अधिक दो सौ व्यक्ति हो सकते हैं। दो सौसे कम इसलिए हो सकते हैं, कि शायद कुछ पुरुष-स्त्री अविवाहित हों। ग्राम-कार्य-कारिणी समिति इन नायकोंसे अपना बहुत-सा कार्य कराती है। शान्ति-भंग तथा अन्य आवश्यक समयमें यों तो सभीका कार्य शासन-सभाकी सहायता करना है, किन्तु इन नायकोंका उस समय यह प्रधान कर्तव्य होता है। पूर्व-कालकी पुलिसका कार्य इन्हींके द्वारा लिया जाता है। किसी कार्यके कारण अनुपस्थित होनेपर इनके स्थानपर ग्राममें सहायक नायक कार्य करते हैं। ग्रामके सभी व्यक्तियों-को भिन्न-भिन्न कार्यपर नियुक्त करना ग्राम-सभाकी सम्मति-अनुसार कार्य-कारिणीका काम है। यह आवश्यकतानुसार वैद्य, धाय, पुस्तका-ध्यक्ष, भोजनाध्यक्ष, भण्डारी आदि सभी विभागोंके प्रमुखोंको नियुक्त करती है। ग्राम-सभाके एक बारके चुने सभासदोंकी अवधि अधिक-से-अधिक तीन वर्ष है। यही अवधि यहाँसे सार्वभौम सभाके सभासदों तककी है। किन्तु शिक्षा-सम्बन्धी संस्थाओंके लिए चुने गये व्यक्तियोंके लिए यह नियम लागू नहीं है। इस प्रकार किसी शिक्षकको आजन्म अपने पदपर रहनेका अधिकार है, यदि उसने जनताकी दृष्टिमें कोई अक्षम्य अपराध न किया हो।

ग्रामोंके बाद बहुत-से ग्रामोंको मिलाकर पहले तहसील या सब-डिवीजन सभायें तथा कहीं-कहीं थाना सभायें थीं। किन्तु उनके टूटे सौ

ो ऊपर हो गये। ग्रामोंके सुन्दर प्रबन्ध, बिजलीकी सवारी-गाड़ियों तथा
ीफोनोंका प्रति ग्राममें उत्तम प्रबन्ध होनेसे वस्तुतः जिलाकी दूरी अब
सोलहीके बराबर रह गई है। जिस प्रकार प्रत्येक सौ आदमियोंपर एक
दमी ग्राम-सभाका सभासद चुना जाता है, वैसे ही बीस हजारपर एक
दमी जिला-शासन-सभाका सभासद् चुना जाता है। जैसे पटना जिलामें
लाख आदमी रहते हैं और यहाँकी शासन-सभामें पचास सभासद् हैं।
ेक पाँच सभासद्पर कार्य-कारिणीका एक सभासद् चुना जाता है।
प्रकार पटना जिलाकी कार्य-कारिणीके दस सभासद हैं जिनके हाथमें
रा. निम्न दस विभाग हैं—

१—*शिक्षा;*

२—स्वास्थ्य, जन-सरया-सावधीकरण;

३—शान्ति-व्यवस्था, न्याय;

४—अर्थ;

५—दूसरे जिलों तथा स्थानोंसे लेन-देन,

६—कृषि, शिल्प-व्यवसाय;

७—यंत्र-गृहादि-निर्माण और सुधार;

८—डाक, तार, रेल, विमान,

९—पुरातत्त्व-इतिहास-संरक्षण;

१०—*प्रेस।*

चुनाव होनेसे पहले जिलाकी ग्राम-सभायें तथा जन-साधारण-द्वारा
दवारोंके नाम आते हैं, जिन्हें जन-साधारणकी अभिज्ञता और विचारके

लिए चुनाव-तिथिसे पूर्व ही प्रकाशित कर दिया जाता है। पीछे उनके विषयमें प्रत्येक ग्राममें एक ही दिन, एक ही समय वोट लिया जाता है; फिर बहु-सम्मतिसे निर्वाचित पुरुषो तथा स्त्रियोका नाम प्रकाशित कर दिया जाता है। किसी प्रकार अयोग्य सिद्ध होनेपर उस सभासद्को स्थानसे च्युत करनेका अधिकार उसके निर्वाचकोको है। एक सभासद्के निर्वाचनका हल्का पृथक्-पृथक् होना है। पटनामे ऐसे-ऐसे पचास हल्के हैं। जिलेका जिस जगह सदर रहता है, वहाँके लोगोका प्रधान काम जिला-शासन-सम्बन्धी कार्योंका करना है। लिखने-छापने आदिका काम, पुराने कागज-पत्रोको सुरक्षित रखनेका काम, शासनके अनेक विभागोके काम, सभी वहीपर होते हैं। यद्यपि प्रति तीसरे वर्ष जिला-शासन-सभाके सभासदोका परिवर्तन हो जाता है, किन्तु भिन्न-भिन्न विभागोके दफ्तरोके कार्यकर्त्ता, तथा अन्य कार्य-निर्वाहक पूर्ववत् ही बने रहते हैं। कार्य-कारिणीके सभासद् अपनी अवधि भर जिलाके प्रधान स्थानपर निवास करते हैं।

जिलाके विभागोमें प्रथम, द्वितीयका कार्य तो नामहीसे स्पष्ट है। शान्ति-व्यवस्था-न्याय-विभाग शान्ति-स्थापन, अदालत और अपराधियोको उचित दड और सुधारका काम करना है। किसीकी व्यक्तिगत कोई सम्पत्ति न होनेसे अब तो दीवानीका शब्द ही उठ गया है। इसलिए कचहरी कहनेसे सिर्फ फौजदारी कचहरी ही समझना चाहिए। जैसे ससारसे और दूकानें उठ गईं, वैसे ही गवर्नमेंटकी स्टाम्पफरोशी, अमलोकी पान-सुपाळी, वकीलो-का मिहनताना भी उठ गया। उन्नीसवी-बीसवी शताब्दीके इस प्रतिष्ठित पेशेका तो एक दम ही पता नही है। अदालतका कमरा खुला हाल होता

है। यहाँहीकी अक्षांश-रेखा शून्य मानी जाती है। इस नगरका नाम सार्वभौम नगर है। इसे बसे आज सौ वर्ष हो गये। जिस दिन सार्वभौम शासन स्थापित हुआ, उसी दिन एक सार्वभौम संवत् भी चलाया गया। आजकल सम्वत् १०१ चल रहा है। सार्वभौम सभाके सभासदोंकी यात्रा वायुयानों द्वारा हुआ करती है। राष्ट्रपति तथा कार्य-कारिणीके सभासद् अर्थात् सचिव अपनी अवधि भर सार्वभौम नगरमें रहते हैं। सार्वभौम सभाकी कार्यवाही सार्वभौमी भाषामें होती है। सार्वभौम नगरमें पचास सहस्र स्त्री-पुरुष रहते हैं। इनमें सभी देशोंके आदमी हैं, जो सभी भिन्न-भिन्न विभागोंके दफ्तरों तथा अन्य कार्योंमें नियुक्त हैं। सार्वभौम सचिवोंके हाथमें निम्न विभाग हैं—

१—शिक्षा
२—स्वास्थ्य
३—शान्ति-व्यवस्था
४—अर्थ
५—लेन-देन, परिवर्तन
६—कृषि
७—शिल्प-व्यवसाय
८—यन्त्र
९—गृह-पथ-निर्माण आदि